पास्टर की कहानी की पुस्तक

नई कलीसियाओं के नए पासबानों की शिक्षा के लिए

रॉब थिसेन, ॲनी थिसेन, जॉर्ज पॅटरसन

पास्टर की कहानी की पुस्तक

नई कलीसियाओं के नए पासबानों की शिक्षा के लिए

प्रथम हिन्दी संस्करण, जनवरी 2003

किसी भी देश के, किसी भी जनजाति के, किसी भी भाषा के मसीही कलीसिया के सेवकों की शिक्षा के लिए आप बिना किसी पूर्वानुमति के या बिना किसी अधिकार के इन लेखों को अनुवादित, प्रकाशित या मुद्रित कर सकते हैं।

यदि आप इसे अनुवादित और प्रकाशित करते हैं तो निम्नलिखित दो बातों का पालन करें:

अ. नीचे दिया गया कापी राईट (सर्वाधिकार) कथन लिखें ताकि कोई कानूनी रुकावट न आ सके।

ब. कम्प्युटर फाईल में हमें एक कापी भेजें ताकि आपकी भाषा जाननेवालों के साथ हम इसे बाँट सकें।

E-mail: < Training@Paul-Timothy.net>

Copyright© 2002 by Rob Thiessen & Anne Thiessen

पास्टर की कहानी की पुस्तक

भाग 1: लोगों को प्रभु यीशु के पास लाने के लिए बाइबल की कहानियों का उपयोग करना

भाग 2: नई कलीसिया का निर्माण करने हेतु बाइबल की कहानियों का उपयोग करना

भाग 3: कलीसिया की मूल सेवकाईयों का विकास करना

यह पुस्तक किसके लिए है?

पास्टर की कहानी की पुस्तक सरल भाषा में उन लोगों के लिए लिखी गई है :

- जिनके पास उनकी अपनी भाषा में बाइबल नहीं है, या
- जिन्हें शिक्षा की तुरंत जरूरत है, या
- जो प्रशिक्षण पाने हेतु फीस नहीं दे सकते, या
- जो बड़े बड़े उपदेशों के बदले छोटी छोटी कहानियाँ पसंद करते हैं।

इसलिए पास्टर की कहानी की पुस्तक विनामूल्य दी जाती है और इसे किसी भी भाषा में अनुवाद किया जा सकता है।

कहानियों का उपयोग क्यों?

पास्टर की कहानी की पुस्तक में बाइबल के महान सिद्धान्तों को बिना किसी विवेचना के स्पष्ट किया गया है। इन सिद्धान्तों पर सभी मसीही विश्वास करते हैं। जिस तरह प्रभु यीशु ने किया उसी तरह इसके द्वारा नए विश्वासियों को और अगुवों को बाइबल की सच्चाईयाँ दूसरों को बताने में मदद मिल सकती है।

बाइबल के ये सभी मूल सत्य ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित हैं। इन घटनाओं के विषय में प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की टिप्पणियाँ मूल मसीही ईश्वरविज्ञान की शिक्षा हमें देते हैं। पवित्र आत्मा इन बाइबल की शिक्षाओं का उपयोग कर लोगों को पश्चाताप की ओर लाता है, उन्हें बदल देता है, और कलीसियाई सेवकाई के लिए नमूना प्रस्तुत करता है।

स्वयं बाइबल हमारे विश्वास और कलीसियाई अभ्यास के लिए ऐतिहासिक नींव डालती है। रोमियों और इब्रानियों की पत्रियाँ ऐसे लोगों को लिखी गई थी जो उन कहानियों को जानते थे जो इन पत्रियों का आधार हैं। इन ऐतिहासिक घटनाओं में आदम और उसका पतन, सभी राष्ट्रों को आशीष देने की परमेश्वर की अब्राहम को प्रतिज्ञा, अब्राहम द्वारा इसहाक की भेंट चढ़ाया जाना, मूसा और व्यवस्था, मूल महायाजक हारून, दाऊद की विजय, यीशु का जन्म, जीवन, मृत्यु, पुन्रुत्थान, और स्वर्गारोहण, और पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का आना– और कई बातें।

आप पास्टर की कहानी की पुस्तक का नवीनतम संस्करण इन्टरनेट से पा सकते हैं : <http://www.Paul-Timothy.net> अधिक जानकारी के लिए लिखें : <training@paul-timothy.net>

इस पुस्तक का उपयोग कैसे करें?

यदि आप नए पासबानों को तैयार करें तो

नए पास्टरों के साथ कहानियाँ पढ़ें, या यदि बाइबल उनकी भाषा में अनुवादित नहीं हुई है तो, उन्हें कहानी बताएँ। लोगों को कहानी बताने में उनकी सहायता करें। बुद्धिमान द्वारा दिए गए उपदेश और विवरण उन्हें सिखाएँ और जो गलतियाँ मूर्ख व्यक्ति ने की है उनसे दूर रहें।

यदि आप नए पास्टर हैं तो

कहानियाँ पढ़ें और याद करें। नए विश्वासियों को, उनके परिवारों को और मित्रों को कहानी बताएँ। बुद्धिमान क्या कहता है यह उन्हें समझाएँ, और उन्हें चेतावनी दें कि जिन बातों को मूर्ख व्यक्ति करता है उसे वे न करें।

आपकी वर्तमान जरूरत के अनुसार जो भाग आवश्यक है उससे आरंभ करें। पास्टर की कहानी की पुस्तक के तीन भाग हैं।

भाग 1 की कहानियों का उपयोग करें : लोगों को परमेश्वर के पास लाने हेतु बाइबल की कहानियों का उपयोग, ताकि लोगों को प्रभु यीशु में विश्वास करने में सहायता मिल सके।

भाग 2 की कहानियों का उपयोग करें : नई कलीसियाओं की दृढ़ता के साथ स्थापना करने हेतु बाइबल की कहानियों का उपयोग ताकि विश्वासियों को मजबूत कलीसियाओं को आरंभ करने में और उनकी उन्नति करने में सहायता मिल सके।

भाग 3 की कहानियों का उपयोग करें : कलीसिया की मूल सेवाओं में उन्नति, ताकि अपने लोगों की आत्मिक उन्नति करने में और परमेश्वर कलीसिया के लिए जो सेवाएँ चाहता है उन्हें बढ़ाने के लिए पास्टरों को प्रशिक्षण दिया जा सके।

भाग 1

लोगों को परमेश्वर के पास लाने हेतु बाइबल की कहानियों का उपयोग

प्रभु यीशु ने दो घर बनाने वालों की कहानी बतायी। एक बुद्धिमान था और उसने अपना घर चट्टान पर बनाया। दूसरा मूर्ख था और उसने अपना घर बालु पर बनाया। मैं उस व्यक्ति का परिचय आपसे कराऊँगा जो उस बुद्धिमान पुरुष के समान है। वह परमेश्वर का वचन सुनता है और उस पर अमल करता है। हम उसे श्रीमान बुद्धिमान या बुद्धिमान कहेंगे, वह अपने मित्र, शिक्षार्थी को प्रभु यीशु के विषय में बता रहा है।

बुद्धिमान शिक्षार्थी से कहता है, "मैं तुम्हें प्रभु यीशु के विषय में एक अच्छा समाचार सुनाने आया हूँ!" शिक्षार्थी भौहें चढ़ाता है। "इस तरह की धर्म की बातें मेरे लिए मुश्किल हैं।" परंतु बुद्धिमान उसे समझाता है, "जिस तरह प्रभु यीशु ने कहानियों में छिपी सच्चाई लोगों को बतायी उसी तरह मैं भी तुम्हें परमेश्वर के विषय में सत्य बताऊँगा। यह समझने में आसान है और याद रखें, आप इन कहानियों को फिर से अपने परिवार और मित्रों को बता सकते हैं। ये मनगढंत कहानियाँ नहीं हैं जो लोग अपने मित्रों और बच्चों के मनोरंजन के लिए बताते हैं। वे सच्ची बातें हैं जो इतिहास में घटी हैं।"

शिक्षार्थी का एक और मित्र है जिसका नाम है श्रीमान मूर्ख, जो प्रभु यीशु की कहानी के मूर्ख व्यक्ति के समान है। वह अपनी ही मनमानी करना चाहता है। मूर्ख बीच में ही कहता है, "शिक्षार्थी, यह व्यक्ति कुछ नया सिखा रहा है। हमें किसी नए धर्म की जरूरत नहीं है। इतने वर्षों से हम जिस तरह का जीवन बिता रहे हैं उसे हम बदलना नहीं चाहते।"

शिक्षार्थी अपने हृदय में जानता है कि उसके जीवन में कुछ खालीपन है। वह परमेश्वर के विषय में और जानना चाहता है। वह बुद्धिमान की बातें और सुनना चाहता है।

पाठ 1

जीवन का अर्थ कैसे खोजें

शिक्षार्थी उस मूर्ख बेटे की कहानी बताता है जिसने लूका 15:11–32 में क्षमा पायी।

कृपया इस कहानी को पढ़ें या किसी को उसे पढ़ने लगाएँ। यदि आपके पास आपकी भाषा में बाइबल नहीं है, तो किसी से यह बिनती करे कि वह आपको आपकी भाषा में समझा कर बताएँ। यह जरूरी है कि जिन बाइबल के अनुच्छेदों के विषय में हम आपको बताते हैं उन्हें आप पढ़ें या कोई आपको उसके विषय में बताएँ। उसके बिना यह अध्ययन व्यर्थ होगा।

लूका 15:11–32 से इस कहानी को पढ़ते समय शिक्षार्थी ने और बुद्धिमान ने जो पाया उसे खोज निकालें।

अपनी जीवनशैली के द्वारा बेटे ने पिता को कैसे दुःख पहुँचाया? अपनी मूर्खता के विषय में बेटे ने अपना दुःख कैसे व्यक्त किया? उसके घर लौटने पर पिता ने उसके साथ कैसा बर्ताव किया?

"शिक्षार्थी," बुद्धिमान व्यक्ति समझाता है, "उस उड़ाऊ पुत्र के समान हमने अपने स्वर्गीय पिता को भुला दिया है और अपने जीवन से मूर्खता के काम किए हैं। परमेश्वर बाहें पसारे हमारी बाट जोहता है, वह हमें क्षमा करने तैयार है और वह हमारा स्वागत उस तरह करेगा जैसे खोए हुआ बच्चों के घर लौटने पर होता है।" मूर्ख व्यक्ति मजाक उड़ाते हुए कहता है, "क्या तुम सोचते हो कि परमेश्वर पार्टी देता है?"

बुद्धिमान व्यक्ति उससे कहता है, "हाँ, क्यों नहीं, प्रभु यीशु ने कई बार पार्टियों के विषय में कहा। यदि हम उसे प्रभु यीशु के नाम में माँगेंगे, तो वह खुशी से हमें क्षमा करेगा और पवित्र आत्मा को हमारे लिए भेज देगा ताकि वह पुराने जीवन से फिर जाने में हमारी सहायता करे। प्रभु यीशु की मृत्यु और पुन्रुत्थान के कारण, परमेश्वर हमें क्षमा करता है और हमें खुशी से ग्रहण करता है, मानो खोए हुए बच्चे घर लौट आए हैं। उसने कहा कि उसके साथ स्वर्ग में रहने का अर्थ विवाह के बड़े

भोज के समान है।"

बुद्धिमान शिक्षार्थी को उत्पत्ति के 1 से 3 अध्याय से उत्पत्ति की कहानी बताता है।

बुद्धिमान शिक्षार्थी से निम्नलिखित प्रश्न पूछता है। उनके उत्तर कृपया कहानी में खोजें:

- आदम और हव्वा परमेश्वर से क्यों डरने लगे?
- आदम और हव्वा को जब परमेश्वर ने बगीचे में पाया तब वह क्या कर रहा था?
- मानवजाति के शत्रु को क्या करने के विषय में परमेश्वर ने प्रतिज्ञा दी?
- अनाज्ञाकारिता के कारण परमेश्वर ने आदम और हव्वा को कहाँ भेजा?

बुद्धिमान व्यक्ति समझाता है, "परमेश्वर ने मनुष्य को इसलिए सिरजा की वे उसके साथ मित्र के समान चलें और बातचीत करें। उसने उन्हें इसलिए नहीं बनाया कि वे दुःख उठाएँ और खोई हुई और उलझनभरी दशा में रहे। परमेश्वर ने ऐसी योजना बनायी थी कि मनुष्य परमेश्वर के साथ रहे और उसकी सृष्टि का आनंद ले। परमेश्वर चाहता था कि लोग उसे स्वतंत्रतापूर्वक प्रेम करें और प्रेम दबाव से नहीं होता। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को यह अनुमति दी कि वे अपना मार्ग खुद ही चुने। परमेश्वर की आज्ञा मानने के बजाय उन्होंने अपना ही मार्ग चुन लिया। उसे उन्हें उस वाटिका से बाहर भगाना पड़ा।"

पाठ 2

उस सच्चे एकमात्र परमेश्वर की ओर क्यों फिरें?

दूसरे हफ्ते बुद्धिमान शिक्षार्थी को 1 राजा 18:16–39 से एलिय्याह और बाल के भविष्यद्वक्ताओं की कहानी बताता है, ताकि उसे सच्चे और एकमात्र परमेश्वर की ओर फिरने में सहायता प्राप्त हो सके।

कृपया इस कहानी को पढ़ें या और किसी को पढ़ने लगाएँ। यदि आपकी भाषा में बाइबल नहीं है, तो किसी को दूसरी भाषा के बाइबल से अनुवाद कर बताने कहें। जब आप इस कहानी को पढ़ते हैं, तब शिक्षार्थी ने और बुद्धिमान ने जो पाया वही आप पाने का प्रयास करें :

- इस्राएल देश में विपत्ति क्यों आयी?
- बाल के बीच और सच्चे और एकमात्र परमेश्वर के बीच भविष्यद्वक्ता एलिय्याह ने किस तरह विवाद आरंभ किया?
- बाल के भविष्यद्वक्ताओं को क्या उत्तर मिला, और एलिय्याह को क्या उत्तर मिला?
- एकमात्र और सच्चा परमेश्वर कौन है?

बुद्धिमान ने कहानी को इस तरह समझाया: "इस्राएल देश ने मूर्तियों की स्थापना की ताकि वे दिखनेवाले देवताओं को अपने पास रख सके। वे सच्चे और एकमात्र परमेश्वर से दूर हो गए और उनके देश पर विपत्ति आयी। हम भी अपने लिए देवताओं को नियुक्त करते हैं, और हमारे जीवन में विपत्ति आती है क्योंकि हम सच्चे और एकमात्र परमेश्वर से दूर हो जाते हैं। केवल सच्चा परमेश्वर स्वर्ग और पृथ्वी पर और संसार की सारी जातियों पर राज्य करता है। किसी देश की सीमाएँ उसे बांधकर नहीं सकती और कोई भी देश उस पर स्वामिता नहीं रख सकता। वह हमेशा हमें आने का न्योता देता है।"

मूर्ख व्यक्ति ने विरोध करते हुए कहा, "परंतु हमारे पूर्वज ऐसे ही करते थे! हमने

हमेशा ही मूर्तियों की आराधना की है!"

बुद्धिमान यूहन्ना 4:4–42 में लिखी हुई 'सामरी स्त्री' की कहानी बताता है। उसने हमेशा अपने पूर्वजों की विधियों को अपनाया।

इस कहानी को पढ़ें और देखें कि बुद्धिमान उसके माध्यम से क्या समझाना चाहता है:

- सामरी स्त्री को प्रभु यीशु ने कुएँ के पास क्या देना चाहा?
- प्रभु यीशु परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता है यह उस स्त्री ने कैसे जाना?
- प्रभु यीशु ने खुद के विषय में क्या बताया?
- जब सामरी स्त्री ने उस गाँव को प्रभु यीशु के विषय में बताया तब क्या हुआ?

बुद्धिमान व्यक्ति कहानी को समझाता है। "प्रभु यीशु ने एक बार विदेश में एक स्त्री से कुएँ के पास बात की। उसने उसे ऐसा जल देना चाहा जिसे पीने पर उसे प्यास न लगती। उस स्त्री को यह समझ में नहीं आया कि वह ऐसे जल के विषय में बोल रहा है जिससे नया जीवन प्राप्त होगा। हम उसे खोजते हैं, परंतु उसे पाते नहीं।

स्त्री ने यीशु से पूछा कि क्या वह उनके पूर्वजों से बड़ा है जिन्होंने उस कुएँ को खोदा था और परमेश्वर की आराधना कैसी करें यह लोगों को सिखाया था? प्रभु यीशु ने उसे बताया कि वही है जिसे परमेश्वर ने भेजा है ताकि वह हर एक को यह सिखाएँ कि सच्चे परमेश्वर की आराधना कैसे करनी चाहिए। इस तरह की आराधना हमें सन्तुष्ट करती है और अन्य किसी भी बात से हमें सन्तुष्टि नहीं मिल सकती। उसके द्वारा हमें नया जीवन मिलता है जो हमारे लिए पहले कभी संभव नहीं था।"

इस कहानी के विषय में चर्चा करने के बाद, बुद्धिमान शिक्षार्थी से कहता है कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने हेतु अपने कदमों को धीरे धीरे बढ़ाएँ। "शिक्षार्थी, क्या तुम मेरे साथ एकमात्र सच्चे परमेश्वर से बातें करोगे और उससे क्षमा माँगोगे कि तुम उससे दूर हो गए थे? क्या तुम इस तरह की और कहानियाँ सुनना और उन्हें अपने परिवार के अन्य लोगों को बताना पसंद करोगे? हम बाइबल से इस वचन को याद करेंगे जो हमें एकमात्र, सच्चे परमेश्वर की उपासना करने की याद दिलाता है। यह है वचन मरकुस 12:30।"

पाठ 3

प्रभु यीशु की मृत्यु और पुन्रुत्थान द्वारा कैसे उद्धार पाएँ

अगले हफ्ते शिक्षार्थी और उसके दो मित्र फिर मिलते हैं। शिक्षार्थी कहता है, "मैंने अपने परिवार को वह दो कहानियाँ बता दी हैं। उन्हें वे पसंद आयी, परंतु माँ कहती है, प्रभु यीशु के अलावा और भी अच्छे शिक्षक हैं।"

बुद्धिमान व्यक्ति मत्ती 26:31–56 से प्रभु यीशु के पकड़े जाने और न्याय के विषय में बताता है।

इस कहानी को पढ़ें और देखें कि बुद्धिमान उसमें किस बात का वर्णन करता है:

- अपनी मृत्यु के विषय में प्रभु यीशु ने क्या प्रार्थना की?
- यहूदा और अन्य चेलों ने यीशु को कैसे धोखा दिया?
- प्रभु यीशु को दोष लगाने का कौनसा कारण याजकों ने बताया?

बुद्धिमान व्यक्ति समझाता है, "हम अपने पापों के कारण परमेश्वर से दूर हो गए हैं। परंतु परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपने पुत्र को भेज दिया ताकि हमें अपने पास ला सके। उसने संसार को बनाया, परंतु संसार ने उसे पहचाना नहीं (यूहन्ना 3:16; यूहन्ना 1:10)। उसके अपने चेलों ने उसे धोखा दिया और उसे त्याग दिया। वह पवित्र और निर्दोष था, फिर भी परमेश्वर के मंदिर के याजकों ने उस पर मृत्युदण्ड की घोषणा की। प्रभु यीशु के प्रियजनों के समान हमने उसे इन्कार किया है। परंतु प्रभु यीशु हमसे इतना प्रेम करता है कि वह हमारे लिए मर गया। वह केवल शिक्षक ही नहीं, परंतु उद्धारकर्ता भी था।"

मूर्ख व्यक्ति बोल उठता है, "फिर तो प्रभु यीशु कमजोर है! वह लोगों को रोक न सका ताकि वे उसे मार न डाले।"

लूका 23 और 24 में बतायी गयी प्रभु यीशु के मृत्यु और पुन्रुत्थान की कहानी बुद्धिमान ने जारी रखी।

कृपया इसे पढ़ें और देखें कि बुद्धिमान उसमें किस बात का वर्णन करता हैः

- प्रभु यीशु की मृत्यु के समय क्या हुआ जिससे यह मालूम हो कि प्रभु यीशु की मृत्यु अत्यंत महत्वपूर्ण थी?
- तीसरे दिन प्रभु यीशु को खोजने आयी स्त्रियों को स्वर्गदूतों ने क्या बताया?
- अम्माऊस के रास्ते पर चल रहे पुरुषों ने प्रभु यीशु को कैसे पहचाना?
- प्रभु यीशु ने अपने चेलों को कौनसी अंतिम सूचनाएँ दी?

बुद्धिमान अपनी कहानी को इस तरह खत्म करता है : "आपका कहना सच है कि प्रभु यीशु स्वेच्छा से मर गया। उसने क्रूस पर हमारा स्थान लिया। प्रभु यीशु को दफनाया गया और वह तीन दिन तक मरी हुई दशा में रहा। जब उसने अपना प्राण त्यागा तब सूर्य अन्धियारा हो गया और मंदिर का परदा फट गया। उस भले और निर्दोष मनुष्य के लिए मरी हुई दशा में रहना उचित न था।

"इसलिए तीसरे दिन, परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से उठाया। वह अपने चेलों के पास आया और उन्होंने उसे छुआ और उसके साथ भोजन किया। उन्होंने उसकी आराधना की और उसे प्रभु और परमेश्वर कहा। और किसी भी व्यक्ति ने मृत्यु पर इस तरह विजय नहीं पायी।"

बुद्धिमान अपनी कहानी खत्म करता है और शिक्षार्थी से कहता है कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने हेतु अपने कदमों को बढ़ाएँ। "शिक्षार्थी, क्या तुमने जाना कि प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर रहनेवाले अन्य सभी लोगों से महान था? क्या तुम परमेश्वर से बिनती करोगे कि वह तुम्हें मृत्यु से बचाए और प्रभु यीशु के नाम में आपको नया जीवन प्रदान करे? प्रभु यीशु के विषय में एक वचन है जिसे आपको अपने परिवार के साथ याद करना है : यूहन्ना 3:16।"

शिक्षार्थी उस पद को याद करता है। "श्रीमान बुद्धिमान, मुझे लगता है कि मैं अब इन कहानियों को अपने परिवारजनों को बता सकता हूँ। हर हफ्ते हम बुधवार के दिन प्रभु यीशु के विषय में बातें करने के लिए इकट्ठा होंगे। मैं आपको उस समय मिलूँगा।"

पाठ 4

बुराई और मृत्यु की सामर्थ से कैसे बचें

बुद्धिमान शिक्षार्थी से मिलने जाता है, उसी समय मूर्ख व्यक्ति एक बुरी खबर लेकर वहाँ पहुँचता है। "तुम्हारे दो चचेरे भाई अभी अभी कार दुर्घटना में मारे गए!" शिक्षार्थी कहता है, "हाय हाय! परमेश्वर ऐसी बुरी घटना क्यों होने देता है? मैं अपने परिवार को कैसे सांत्वना दूँगा?"

यूहन्ना 11:17–44 से मृत्यु पर प्रभु यीशु का अधिकार नामक कहानी के माध्यम से बुद्धिमान अपने मित्र को समझाता है।

इस कहानी को पढ़ें और देखें कि बुद्धिमान उसके द्वारा क्या समझाना चाहता हैः

- अपने मित्र की मृत्यु के विषय में प्रभु यीशु को कैसे लगा?
- प्रभु यीशु ने अपने विश्वास करनेवालों के विषय में मार्था से क्या कहा?
- प्रभु यीशु ने जब लाजरस को बुलाया तब क्या हुआ?

बुद्धिमान समझाता है : "एक बार प्रभु यीशु का बहुत अच्छा मित्र मर गया। अपने मित्र की मृत्यु के विषय में प्रभु यीशु बहत दुःखी हो गया। परमेश्वर लोगों को दुःख उठाते देखना पसंद नहीं करता। प्रभु यीशु सारी बातों को सुधारने के लिए आया। उसने मार्था से कहा कि लाजरस फिर से जी उठेगा क्योंकि वह प्रभु यीशु पर विश्वास करता था। प्रभु यीशु पुन्रुत्थान और जीवन है। उसने परमेश्वर से प्रार्थना की और लाजरस को जो कब्र में पड़ा था, पुकारा। लाजरस कब्र से जीवित चलता हुआ आया।

"प्रभु यीशु ने सबको दिखा दिया कि उसके पास मृत्यु पर अधिकार है। जब वह मर गया और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठा, तब उसने अपने सब विश्वास करनेवालों को नया जीवन दिया। यह जीवन कभी खत्म नहीं होता क्योंकि हममें परमेश्वर का आत्मा वास करता है।"

मूर्ख व्यक्ति बोल उठता है, "परंतु यीशु के पास कौनसी सामर्थ है?"

बुद्धिमान मरकुस 5:1–20 से उस व्यक्ति की कहानी बताता है जिसमें दुष्टात्माएँथीं।

बुद्धिमान शिक्षार्थी से निम्नलिखित प्रश्न पूछता है। उनके उत्तर कृपया कहानी में खोजें:

- दुष्टात्मा ने मनुष्य के अपने हाथों से उसकी क्या दशा बना रखी थी?
- दुष्टात्माओं ने प्रभु यीशु से कैसे बर्ताव किया?
- प्रभु यीशु ने उस मनुष्य के लिए क्या किया?
- उसके चंगाई पाने के बाद प्रभु यीशु ने उस मनुष्य को क्या करने कहा?

बुद्धिमान व्यक्ति समझाता है, "प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र है। वह अपने स्वभाव ही से परमेश्वर है (फिलिप्पियों 2:6)। दुष्टात्मा से पीड़ित वह व्यक्ति चिल्लाता और अपने आपको घाव करता था। वह इतना बलवान था कि कोई उसे नियंत्रण में नहीं ला सकता था। जब प्रभु यीशु आया तब उसने उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में पहचाना। उस व्यक्ति ने प्रभु यीशु के सामने घुटने टेके और दुष्टात्माओं ने बिनती की कि वह उन्हें सुअरों में भेज दें। प्रभु यीशु ने दुष्टात्माओं को निकाल दिया और वे निकल गयी। प्रभु यीशु ने उसे पूरी रीति से चंगा किया। फिर प्रभु यीशु ने उस व्यक्ति को घर भेजा और कहा कि वह अपने परिवार को यह बताए कि प्रभु यीशु ने उसके लिए क्या किया था।

"जब प्रभु यीशु स्वर्ग पर चढ़ गया तब उसने अपने आत्मा को उन लोगों में वास करने के लिए भेज दिया जो उस पर विश्वास करते थे। परमेश्वर का आत्मा सामर्थी है और वह हमें बुराई से बचाता है। वह हमें नया जीवन प्रदान करता है जो सनातन और पवित्र है। प्रभु यीशु के विषय में दूसरों को सुसमाचार सुनाने में वह हमारी सहायता करता है।"

बुद्धिमान शिक्षार्थी से कहता है कि वह परमेश्वर की ओर अपना कदम बढ़ाए। "शिक्षार्थी, क्या तुम प्रभु यीशु के नाम में प्रार्थना करना और उसे अपना जीवन बदल देने के लिए बिनती करना चाहते हो? वह तुमको बदल देगा। यहाँ एक पद है जो इस कहानी को अपने परिवार को बताने में तुम्हारी सहायता कर सकता है: यूहन्ना 11:25। यह आशा तुम अपने परिवार को दे सकते हो।"

पाठ 5

जीवन में सबसे महत्वपूर्ण क्या है?

बुद्धिमान बुधवार को अपने मित्र को मिलने जाता है, परंतु कई हफ्तों तक वह शिक्षार्थी को घर में नहीं पाता। अन्त में वे रास्ते में मिलते हैं। शिक्षार्थी क्षमा माँगता है, "श्रीमान बुद्धिमान, अन्यसंस्कार के बाद मैं बहुत व्यस्त रहा और परमेश्वर के विषय में सोच न सका। शायद एक या दो महीनों में..."

बुद्धिमान कहता है, "मैं समझ सकता हूँ कि तुम व्यस्त रह सकते हो, परंतु सावधान रहो कि इस ससांर की बातें जीवन की सबसे महत्वपूर्ण बात से तुम्हारे ध्यान को हटाने न पाए। इस पर से मुझे उत्पत्ति 6:5–14 और 7:1–24 में दी गई नूह की कहानी याद आती है।"

कृपया इसे पढ़ें और देखें कि बुद्धिमान उसमें क्या समझाना चाहता है:

- नूह के समय के लोगों के विषय में परमेश्वर को क्या लगा?
- परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार को कैसे बचाया?
- नूह ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन कैसे किया?

बुद्धिमान कहानी को समझाता है : "यीशु कहता है कि नूह के दिनों में लोग सामान्य जीवन बिता रहे थे (लूका 17:27)। वे परमेश्वर को भूल गए थे और दुष्ट और अत्याचारी बन गए थे। परमेश्वर धीरज के साथ उनके लिए रुका रहा, परंतु उन्होंने परमेश्वर की ओर ध्यान नहीं लगाया। परमेश्वर पवित्र है और वह पाप को नहीं सहन कर सकता। नूह के समय के पाप और दुष्टता को देखकर वह दुःखी और क्रोधित हो गया। उसने संसार के सभी लोगों का नाश करने का निर्णय लिया।

"नूह ही मात्र ऐसा जन था जो परमेश्वर की सुनता था। नूह परमेश्वर को देख नहीं सकता था, फिर भी उस पर विश्वास करता था। उसने जहाज को तैरानेवाला जल नहीं देखा था, फिर भी उसने जहाज बनाने में कई वर्ष बिता दिए। परमेश्वर ने नूह को बचाया क्योंकि नूह ने परमेश्वर पर विश्वास किया और उसकी आज्ञा का पालन किया। परमेश्वर

ने जल से संसार का नाश किया, परंतु नूह की जहाज में रक्षा की।

"आज हम लोग नूह के समय के लोगों के समान हैं। हम परमेश्वर पर ध्यान नहीं लगाते और पाप और अनाचार से भरे हैं। हमारा पाप परमेश्वर को दुःखी और क्रोधित करता है। यदि हम परमेश्वर द्वारा दिए गए सुरक्षित स्थान में नहीं जाएँगे, तो हम सभी मृत्यु द्वारा नाश किए जाएँगे। यह जहाज के समान सुरक्षित स्थान है, प्रभु यीशु मसीह।"

मूर्ख व्यक्ति बातचीत सुनता हुआ वहाँ से गुजरता है। वह विरोध करते हुए कहता है, "परंतु शिक्षार्थी कोई गलती नहीं कर रहा है!"

बुद्धिमान व्यक्ति लूका 12:13–21 में दी गई यीशु द्वारा बतायी गई मूर्ख धनवान की कहानी सुनाता है।

मूर्ख धनवान की इस कहानी में प्रभु यीशु ने जो चेतावनी दी थी उसे देखें:

बुद्धिमान समझाता है, "शिक्षार्थी, क्या तुमने देखा कि यह धनवान व्यक्ति मात्र अपना व्यापार ही कर रहा था। परंतु वह परमेश्वर से अधिक महत्व अनाज और कोठरियों को दे रहा था। अचानक मृत्यु उस पर आ पड़ी और वह मौत के लिए तैयार नहीं था।

"प्रभु यीशु कहता है कि वह फिर पृथ्वी पर लौट आएगा नूह के दिनों के लोगों समान कुछ लोग भी अपने रोज के व्यापार करते रहेंगे। वे प्रभु यीशु के लिए तैयार नहीं रहेंगे। जिस प्रकार लोग बाढ़ में नाश हो गए उसी तरह लोगों को विनाश होगा। परंतु जो प्रभु यीशु मसीह के हैं वे सुरक्षित रहेंगे।"

शिक्षार्थी आज्ञाकारिता के साथ उत्तर देता है : "श्रीमान बुद्धिमान, मैं समझ गया कि मैं परमेश्वर को भूल गया था। मेरे साथ प्रार्थना करें कि मैं प्रभु यीशु के नाम में क्षमा माँग सकू। मैं अपने परिवारजनों को यह कहानी बताऊँगा ताकि वे परमेश्वर को स्मरण रख सकें। इस कहानी के लिए हम कौनसा पद याद करेंगे?"

बुद्धिमान शिक्षार्थी को रोमियों 6:23 यह पद देता है और वे अगले बुधवार को फिर मिलने की योजना बनाते हैं।

पाठ 6
सच्ची भलाई कैसे पाएँ

अगले हफ्ते बुद्धिमान व्यक्ति शिक्षार्थी को अपने घर भोजन पर बुलाता है। भोजन करते समय शिक्षार्थी एक प्रश्न के विषय में परेशान दिखाई देता है। वह पूछता है, "बुद्धिमानजी, मैं जानता हूँ कि कुछ बातों के लिए मुझे परमेश्वर से क्षमा पाने की जरूरत है। परंतु मूर्ख व्यक्ति इस बात पर बल देता है कि मैं वास्तव में बुरा व्यक्ति नहीं हूँ। मैं पिता, पति और अच्छे नागरिक के नाते अपने कर्तव्यों को पूरा करता हूँ। क्या यह काफी नहीं है?"

बुद्धिमान व्यक्ति दूसरी कहानी के साथ उत्तर देने तैयार हो जाता है। "शिक्षार्थी, मैं तुम्हें भ्रष्टाचारी चुंगी लेनेवाले की कहानी बताता हूँ।" कहानी के बाद बुद्धिमान कुछ सवाल पूछता है, यह देखने के लिए कि शिक्षार्थी को कहानी समझी है या नहीं।

उसमें आप पाएँगे:

- जक्कई उसे मिलना चाहता है यह प्रभु यीशु ने कैसे जाना?
- इस भ्रष्टाचारी चुंगी लेनेवाले के साथ प्रभु यीशु ने कैसे बर्ताव किया?
- जक्कई ने प्रभु यीशु से कैसे बर्ताव किया?
- दूसरों के समान प्रभु यीशु ने जक्कई को दोष नहीं लगाया, इसलिए जक्कई ने प्रभु यीशु के प्रति धन्यवाद कैसे प्रगट किया?

बुद्धिमान इस कहानी को ऐसे समझाता है, "प्रभु यीशु हमेशा उन लोगों के पास आता है जो उसकी खोज में रहते हैं और वह उनके दिलों को बदल देता है। हम अपने प्रयासों से अच्छे लोग नहीं बन सकते। जो लोग सोचते हैं कि वे अच्छे हैं, वे घमण्डी हैं और अपने पापों को नहीं देख सकते। जब प्रभु यीशु हमारे जीवन में आता है तब वह हमें अपनी अच्छाईयाँ देता है। हम अपने बर्ताव के द्वारा उसके प्रति आभार प्रगट करते हैं।"

शिक्षार्थी फिर भी उलझन में दिखाई देता है। "परंतु मेरे धर्मी चाचा के विषय में

क्या? वह सब समय प्रार्थना करते हैं।"

बुद्धिमान कहता है, "हम कुछ नियमों का पालन करने के द्वारा और धार्मिक कर्तव्यों को पूरा करने के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। मैं तुम्हें लूका 18:9–14 में दी गई याजक और चुंगी लेनेवाले की कहानी बताऊँगा।" कहानी के बाद, बुद्धिमान शिक्षार्थी को कुछ प्रश्न पूछता है:

उसमें आप पाएँगे:

- किस प्रकार के लोगों को प्रभु यीशु ने यह कहानी बताई?
- परमेश्वर के प्रति धर्मी व्यक्ति के भाव क्या थे?
- चुंगी लेनेवाले के भाव क्या थे?
- किस व्यक्ति ने परमेश्वर को प्रसन्न किया और अच्छा बन गया?

बुद्धिमान व्यक्ति शिक्षार्थी को याद दिलाता है, "शिक्षार्थी, केवल परमेश्वर हमें अच्छा बना सकता है। जब हम अपने पापों के विषय में उसके साथ इमानदार रहते हैं और यीशु के नाम में वह हमें क्षमा करेगा ऐसा विश्वास रखते हैं तब उसका आत्मा आकर हमें वास्तव में अच्छा बनाता है। हम इस कहानी के मनुष्य के समान बहुत धर्मी बन सकते हैं, परंतु उससे परमेश्वर को प्रसन्नता नहीं होती। पश्चाताप और विश्वास उसे प्रसन्न करता है।"

दोनों अपना भोजन समाप्त करते हैं। शिक्षार्थी के जाने से पहले बुद्धिमान उसे कहता है कि वह आज्ञापालन का कदम बढ़ाए। "शिक्षार्थी, तुम्हारे परिवार की कहानी के प्रति क्या प्रतिक्रिया है? क्या वे तुम्हारे साथ परमेश्वर की ओर आज्ञापालन का कदम बढ़ाने तैयार हैं? जैसे मैंने तुम्हारे साथ प्रार्थना की, उसी तरह तुम भी उनके साथ प्रभु यीशु नाम में क्षमा पाने के लिए प्रार्थना कर सकते हो। इस पद को मुखाग्र करें : प्रेरितों के काम 2:38"

पाठ 7

यीशु में नया जीवन कैसे पाएँ

बुधवार के दिन बुद्धिमान जब आता है तब मूर्ख व्यक्ति उसके पीछे पीछे प्रवेश करता है। वे देखते हैं कि शिक्षार्थी और उनका परिवार एक साथ यह निर्णय ले रहे हैं कि यीशु के विषय में क्या करें। मूर्ख व्यक्ति कहता है, "तुम्हें कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हें तो केवल विश्वास करना है, परमेश्वर तुम्हारे दिल को जानता है।"

बुद्धिमान व्यक्ति अपनी असहमती जताता है, "नहीं, शिक्षार्थी, विश्वास करना केवल आरंभ है। परमेश्वर चाहता है कि सरल आज्ञापालन के द्वारा तुम अपने विश्वास की पुष्टि करो। यहाँ एक कहानी दी गई है जो इस सत्य को तुम्हें समझाएगी।"

बुद्धिमान व्यक्ति प्रेरितों के काम 8:26–38 में दी गई इथियोपियन अधिकारी की कहानी बताता है।

निम्नलिखित बातों को उसमें पाएँ:

- खोजा वचन में किसके विषय में पढ़ रहा था?
- ये वचन यीशु विषय में क्या कहते थे?
- प्रभु यीशु पर अपने विश्वास को दिखाने के लिए उस खोजे ने क्या किया?

बुद्धिमान कहानी को इस तरह समझाता है, "जिन वचनों को वह खोजा पढ़ रहा था वे वचन थे यशायाह 53। ये वचन प्रभु यीशु के जन्म से पहले लिखे गए थे, परंतु प्रभु यीशु क्या करेगा यह उसमें बताया गया था। उसमें यह लिखा था कि हम सब अपने पापों में भेडों कि नाई परमेश्वर से दूर हो गए थे। हम मृत्युदण्ड के योग्य थे, परंतु यीशु ने हमारे पाप, रोग, दुःख और मृत्यु को अपने कांधों पर उठा लिया। उसके दुःख उठाने और मर जाने से, हमें पाप और मृत्यु से छुटकारा मिला।

"प्रभु यीशु ने जो कुछ उसके लिए किया था उस पर खोजे नें विश्वास किया। अपने विश्वास को दिखाने के लिए उसने तुरंत फिलिप्पुस से कहा कि वह उसे

बपतिस्मा दे जहाँ पर उसने जल देखा था। बपतिस्मा के द्वारा यह प्रगट होता है कि पवित्र आत्मा ने हमें प्रभु यीशु के साथ उसकी मृत्यु में जोड़ दिया है (कुलुस्सियों 2:12)। हमारा पाप का जीवन प्रभु यीशु के साथ मर जाता है। विश्वास के द्वारा हम उसके पुन्रुत्थान में शामिल होते हैं और एक नए जीवन का आरंभ करते हैं जो अनन्तकाल का और पवित्र जीवन है। पवित्र आत्मा आकर हममें वास करता है।"

मूर्ख व्यक्ति सोचता है कि यह कितनी हास्यजनक बात है। "हमें बदलने के लिए परमेश्वर को पानी की जरूरत नहीं है।"

बुद्धिमान व्यक्ति 2 राजा 5:1–14 में बतायी गई नामान की कहानी बताता है। उसमें आप निम्नलिखित बातें पाएँगे:

- नामान ने अपने विश्वास को कैसे प्रगट किया?
- उसे कोढ़ से शुद्ध करने के लिए परमेश्वर ने पानी का कैसे उपयोग किया?

बुद्धिमान शिक्षार्थी को समझाता है, "परमेश्वर कहता है, जल का बपतिस्मा लो। नामान के जलस्नान और खोजे के बपतिस्मे के समान ही जल में हमारा बपतिस्मा हमारे विश्वास को दर्शाता है। परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने हेतु हमें यही करना है। बपतिस्मा यह दिखाता है कि परमेश्वर ने प्रभु यीशु के लोहू से हमारे सब पापों को धो दिया है (1 यूहन्ना 1:7)।

बुद्धिमान शिक्षार्थी से कहता है कि वह अपने संपूर्ण परिवार के साथ आज्ञापालन का यह कदम बढ़ाए: "शिक्षार्थी, इस पद को मुखाग्र करें : मरकुस 16:16। अपने परिवार को और मित्रों को बताएँ किस तरह बपतिस्मा हमें प्रभु यीशु से जोड़ देता है।"

पाठ 8

हम प्रभु यीशु के पीछे चलनेवाले कैसे बनते हैं

बुद्धिमान की शिक्षार्थी के साथ यह अंतिम भेट है। वह कहता है, "शिक्षार्थी, अब तुमने प्रभु यीशु के सुसमाचार को स्पष्ट रूप से सुना। एक सच्चे परमेश्वर के विषय में हमारी जरूरत को तुम जानते हो और यह भी जानते हो कि किस तरह हमें पाप और मृत्यु से छुड़ाने के लिए उसने अपने बेटे यीशु को भेजा। तुम जानते हो कि किस तरह यीशु की मृत्यु और पुन्रुत्थान के द्वारा हमें पापों की क्षमा और नया जीवन मिलता है।

"बपतिस्मा के साथ अपना विश्वास परमेश्वर को कैसे दिखाएँ इस विषय में हमने पिछने सप्ताह चर्चा की। और दो कहानियों से आपको और आपके परिवार को प्रभु यीशु के पीछे चलने वाले बनने में सहायता प्राप्त होगी। फिर मैं आपसे पूछूंगा कि आप प्रभु यीशु के विषय में क्या करना चाहेंगे।"

बुद्धिमान की पहली कहानी है पौलुस की यीशु से भेंट कैसे हुई। यह कहानी प्रेरितों के काम 22:1–16 में पायी जाती है। आप उसमें देखेंगे:

- प्रभु यीशु से भेंट होने से पहले पौलुस मसीही विश्वासियों को कैद में क्यों डालता था?
- दमिश्क के रास्ते पर पौलुस के साथ किसने बातचीत की?
- प्रभु यीशु का चेला बनने के लिए पौलुस को क्या करना पड़ा?

बुद्धिमान कहानी का सारांश बताता है : "प्रभु यीशु से भेंट होने से पहले पौलुस मसीही विश्वासियों को कैद में डालता था। वह सोचता था कि मसीही लोगों को रोकने की कोशिश करके वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है। वह विश्वास नहीं करता था कि प्रभु यीशु मरे हुओं में से जी उठा है। वह सोचता था कि मसीही लोग झूठे हैं।

"परंतु पुन्रुत्थित प्रभु यीशु ने पौलुस के साथ बात की। पौलुस अंधा हो गया और एक भविष्यद्वक्ता ने आकर उसे चंगा किया। भविष्यद्वक्ता ने पौलुस को बताया कि जो

कुछ उसने देखा और सुना था उसकी गवाही उसे सब लोगों को देना है।"

इसी समय मूर्ख व्यक्ति दौड़ता हुआ घर में प्रवेश करता है। वह जानता है कि शिक्षार्थी को प्रभु यीशु की ओर फिरने से रोकने का यह अंतिम अवसर है। वह बीच में बोलता है, "शिक्षार्थी, इतनी जल्दबाजी करने की आवश्यकता नहीं है। तुम इस पर फिर विचार करो। इस यीशु को तुम्हारे जीवन में हस्तक्षेप न करने दें!"

बुद्धिमान व्यक्ति परमेश्वर से शांतिपूर्वक प्रार्थना करता है और वह लूका 4:36–53 में दी गई प्रभु यीशु स्वर्ग पर कैसे चढ़ गया यह कहानी बताता है। वह शिक्षार्थी से कुछ सवाल पूछता है:

कृपया इन प्रश्नों के उत्तर कहानी में देखें:

- प्रभु यीशु के चेलों ने कैसे जाना कि यीशु भूत नहीं है?
- सारे राष्ट्रों को क्या प्रचार किया जाएगा?
- अपने विश्वासियों के पास किसे भेजने की प्रतिज्ञा प्रभु यीशु ने की थी?

बुद्धिमान कहानी का अंत इस तरह करता है : "प्रभु यीशु मनुष्य के रूप में स्वर्ग पर उठा लिया गया। स्वर्गदूतों ने प्रतिज्ञा की कि वह उसी तरह वापस आएगा। (प्रेरितों के काम 1:11)। उस बीच प्रभु यीशु ने अपने चेलों को कुछ काम सौंप दिया जिसे उन्हें पूरा करना है।

"हमें लोगों को उसके विषय में, उसकी मृत्यु और पुन्रुत्थान के विषय में बताना है और पश्चाताप का और पापों की क्षमा का प्रचार करना है। उसने प्रतिज्ञा की कि वह स्वर्ग से सामर्थ अर्थात् पवित्र आत्मा को भेजेगा। एक दिन वह हमारे लिए आएगा ताकि हम उसके साथ वहाँ हो सके जहाँ वह है" (यूहन्ना 14:3)।

"शिक्षार्थी, यह आपकी बारी है कि आप यह कदम परमेश्वर की ओर बढ़ाएँ: प्रभु यीशु की आवाज को सुनें। अपने पापों को अंगीकार करें और बपतिस्मा लें, अपने पापों को प्रभु यीशु के नाम में धो डालें। मत्ती 28:18–20 याद करें। आपने प्रभु यीशु के विषय में जो कुछ सुना और देखा है वह दूसरों को बताएँ। धन्यवाद हो उस दिन के लिए जब वह अपने विश्वासियों को अपने साथ ले जाने के लिए आएगा।"

भाग 2

नई कलीसियाओं की दृढ़ता के साथ स्थापना करने हेतु बाइबल की कहानियों का उपयोग

सब बातों से बढ़कर यीशु की आज्ञा माननेवाले शिष्य बनाना

बाइबल में हम तीतुस नामक पासबान के विषय में पढ़ते हैं। तीतुस 1:5 में आप पढेंगे कि किस तरह प्रेरित पौलुस ने इस पासबान को क्रेते नाम टापू पर नए मसीही विश्वासियों की सहायता करने के लिए छोड़ दिया। पौलुस ने तीतुस को बताया कि क्रेते की नई मण्डलियों में जो कार्य बाकी रह गया है उसे वह पूरा करे। आपने स्तर एक में बुद्धिमान से भेंट की होगी। यदि नहीं, तो मैं उसका परिचय आपसे करवाना चाहूँगा। वह एक पासबान है। वह वास्तविक व्यक्ति नही है, परंतु बाइबल के तीतुस के समान वह है।

बुद्धिमान ने हाल ही में शिक्षार्थी नामक एक मित्र को प्रभु यीशु के विषय में सुसमाचार सुनाया। बुद्धिमान ने बाइबल की कहानियों का उपयोग किया। शिक्षार्थी ने यही कहानियाँ अपने परिवारजनों को बतायी। अब शिक्षार्थी परिवार और कई मित्रों ने हाल ही में बपतिस्मा लिया है। प्रभु यीशु के आज्ञाकारी शिष्य बनने में उनकी सहायता करने हेतु बुद्धिमान और कहानियों का उपयोग कर रहा है। यह कहानियाँ इतिहास की घटनाओं से संबंधित हैं। शिक्षार्थी उस स्थान में रहता है जहाँ यीशु के विश्वासियों को सताया जाता है।

शिक्षार्थी का मित्र मूर्ख बाइबल के उस व्यक्ति के समान है जिसने अपना घर बालू पर बनाया। वह कहता है, "शिक्षार्थी, अब तुम नए मसीही हो। इस से पहले कि तुम बाहर जाकर कुछ करो, तुम्हें पूरी बाइबल याद कर लेनी चाहिए।"

परंतु दूसरी ओर, बुद्धिमान उस व्यक्ति के समान है जिसने मजबूत चट्टान पर

अपना घर बनाया। वह मजबूत चट्टान प्रभु यीशु है। वह चेतावनी देते हुए कहता है, "नहीं मेरे मित्र, हमें परमेश्वर के वचन को केवल सुनते ही नहीं रहना चाहिए। हमें उससे लाभ पाने के लिए उस पर अमल भी करना चाहिए। मैंने आपको दो घर बनाने वालों की कहानी बताई ताकि हम जाने कि हमारे मसीही जीवन के आरंभ ही से उसके वचनों को पालन करना कितना महत्वपूर्ण है।

दो घर बनाने वाले

बुद्धिमान मत्ती 7:24—29 से दो घर बनानेवालों की कहानी खोज निकालने में शिक्षार्थी की सहायता करता है।

कृपया अब इस कहानी को पढ़ें। यदि आपके पास आपकी भाषा में बाइबल नहीं है तो जिसके पास है उसे बताने कहें। इस कहानी को पढ़ने के बाद नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें जिन्हें बुद्धिमान ने शिक्षार्थी के लिए तैयार किए हैं:

- इन दो व्यक्तियों के बीच क्या फर्क है, क्योंकि दोनों ने प्रभु यीशु के वचनों को सुना था?
- सब बातों का आधार चट्टान कौन है?
- हम अपना जीवन और सेवकाई इस चट्टान पर किस तरह खड़ी करते हैं?

शिक्षार्थी कहता है, "फिर केवल प्रभु यीशु के वचनों को सुनना ही काफी नहीं है! प्रभु यीशु हमें क्या करने की आज्ञा देता है यह जानने की हमें जरूरत है, परंतु केवल जानना ही काफी नहीं है। हमें प्रभु यीशु मसीह की आज्ञाओं पर अमल भी करने की जरूरत है। क्योंकि हम उससे प्रेम करते हैं, इसलिए हम उसकी आज्ञा को मानना चाहते हैं।"

बुद्धिमान अपनी सहमति जताते हुए कहता है, "हाँ, हमें सुनना और करना है, सुनना और करना है, सुनना और करना है, और न ही सुनना, सुनना, सुनना और बाद में करना हो।"

"प्रभु यीशु रूपी चट्टान पर घर बनाने का अर्थ है बच्चे के समान विश्वास और प्रेम से उसकी आज्ञा का पालन करना। परमेश्वर हमारे प्रेमपूर्ण आज्ञापालन को

आशीषित करता है, और न ही केवल उसके वचन के ज्ञान को।

प्रभु यीशु के स्वर्ग पर चढ़ने से पहले, उसने हमें हमारे बाकी जीवन के लिए आज्ञा दी। इन आदेशों को हम मत्ती 28:18–20 में पाते हैं। प्रभु यीशु हमें शिष्य बनाने कहता है। वह हमें बताता है कि हम बपतिस्मा देने से आरंभ करें और फिर उन्हें वे सारी बातें जिनकी आज्ञा उसने दी है सिखाएँ।

"हम प्रभु यीशु की सारी आज्ञाओं को मानने के द्वारा उसके शिष्य बन जाते हैं। दूसरों को उसकी सारी आज्ञाओं का पालन करना सिखाने के द्वारा हम उन्हें शिष्य बनाते हैं। शिष्यता का सारा कार्य यहीं आरंभ होता है, प्रेम के साथ आज्ञा मानना उसका एक मात्र आधार है। कलीसिया लोगों का वह झुण्ड है जो प्रेम के साथ यीशु की आज्ञा का पालन करने हेतु इकट्ठा हुआ है।"

पहिली कलीसिया ख्रीष्ट की आज्ञाओं को मानती है।

शिक्षार्थी का छोटा भाई कमरे में जाता है और बोलता है, "बुद्धिमानजी," वह कहता है, मैंने शहर के अध्यक्ष को यह कहते हुए सुना है कि वह तुम्हारी शिक्षा को पसंद नहीं करता। आप शायद खतरे में हो सकते हैं। शायद आपको शहर छोड़कर जाना होगा।"

बुद्धिमान कहता है, "मैं अभी छोड़कर जाना नहीं चाहता। मैं तुम्हारे परिवार को तथा मित्रों को पहले मजबूत कलीसिया बनाने में मदद करना चाहता हूँ। इसके लिए तुम्हें प्रभु यीशु के आज्ञाकारी चेले बनना है। तब मैं इस स्थान को छोड़कर जाऊँगा और दूसरे स्थान में जाकर सुसमाचार सुनाऊँगा।

"प्रभु यीशु ने कई बातों की आज्ञा दी, परंतु हम उन्हें साम मुख्य आदेशों में इकट्ठा कर सकते हैं। हम उद्धार पाने के लिए इन आज्ञाओं का पालन नहीं करते। जब हम प्रभु यीशु के बन जाते हैं तब आज्ञापालन स्वाभाविक ही है। हम प्रेम और आदर के कारण उसकी आज्ञाओं को मानते हैं। जब हम उसकी सात आज्ञाओं को मानते हैं तब उससे यह पता चलता है कि उसका जीवन हम में है।"

यहाँ सरल रूप में प्रभु यीशु की मूल सात आज्ञाएँ दी गई हैं:

- पश्चाताप करो और विश्वास करो
- नए विश्वासियों को बपतिस्मा दो
- प्रेम करो
- रोटी तोड़ो
- प्रार्थना करो
- दो
- चेले बनाओ

बुद्धिमान शिक्षार्थी को और उसके भाई को प्रेरितों के काम 2:36–47 से बताता है कि किस तरह प्रारंभिक कलीसिया ने प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन किया। वह इस कहानी से संबंधित प्रश्न पूछता है।

कृपया इस कहानी को पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:

- नए विश्वासियों ने कितनी जल्दी बपतिस्मा लिया?
- उन्होंने रोटी कहाँ तोड़ी?
- उन्होंने एक दूसरे के प्रति अपने प्रेम को कैसे प्रगट किया?
- परमेश्वर ने कलीसिया की प्रेमपूर्ण आज्ञाकारिता के लिए उसे कैसे आशीष दी?

शिक्षार्थी सावधानी के साथ सुनता है और कहता है, "इसका अर्थ स्थानीय कलीसिया लोगों का ऐसा झुण्ड़ है जो प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन करने के लिए एक स्थान में इकट्ठा होता है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में बतायी गई कहानी हमें यह बताती है कि प्रभु यीशु का आदर करने के लिए प्रारंभिक मसीही कलीसिया क्या करती थी। प्रभु यीशु ने जो सिखाया था उसे वे याद करते थे और वे जोश और आनंद के साथ उसकी आज्ञा का पालन करते थे। पवित्र आत्मा की सामर्थ से, वे प्रभु यीशु की सातों आज्ञाओं का तुरंत पालन करते थे। परमेश्वर की आशीष और आनंद उन कलीसियाओं को प्राप्त होता है जो प्रेम के साथ मसीह की आज्ञा को मानते हैं।

मैं चाहता हूँ कि हमारे परिवार मसीह का आदर वैसे ही करें जैसे प्रारंभिक मसीही विश्वासी करते थे।"

प्रात्यक्षिक कार्य

- यूहन्ना 14:15 और प्रभु यीशु की सात आज्ञाओं को याद करने में मण्डली की सहायता करें।
- प्रेम के आधार पर, न कि साथ आज्ञा मानने में मण्डली की सहायता करें।
- मनुष्य के बनाए हुए नियमों से बढ़कर प्रभु यीशु की आज्ञाओं को मानने के विषय में अपने अपनी मण्डली के साथ सहमत हो।

पाठ 1

पश्चाताप, विश्वास और पवित्र आत्मा को ग्रहण करने हेतु यीशु की आज्ञाओं को मानना

दूसरे हफ्ते, बुद्धिमान शिक्षार्थी को पश्चाताप करने, विश्वास करने और पवित्र आत्मा को ग्रहण करने की प्रभु यीशु की मरकुस 1:15, यूहन्ना 3:16 और यूहन्ना 20:22 में दी हुई आज्ञा के विषय में शिक्षा देता है। वे शिक्षार्थी के रिश्तेदारों को जो दूसरी जाति के हैं, प्रभु यीशु के विषय में बताने की योजना बनाते हैं। परंतु मूर्ख सदा ही छाँव के समान उनके पीछे रहता है और यह कहकर उन्हें निराश करने की कोशिश करता है कि, "उन लोगों के पास मत जाओ। उन्होंने अपने पिछले दिनों में बहुत बुरे काम किए हैं।"

यूहन्ना बपतिस्मा करनेवाला पश्चाताप का प्रचार करता है।

बुद्धिमान इस बात से असहमत होता है। वह मत्ती 3:4–10 से शिक्षार्थी को यूहन्ना बपतिस्मा करनेवाले के प्रचार के विषय में बताता है। वह पूछता है, "यूहन्ना बपतिस्मा करनेवाले ने किस प्रकार के लोगों को बपतिस्मा दिया– उन लोगों को जो उसके योग्य थे, अच्छे थे, या बुरे थे और जरूरत रखते थे?"

इस कहानी को पढ़ें और इस प्रश्न का उत्तर दें।

शिक्षार्थी उत्तर देता है, "जो सोचते हैं कि वे सच्चे हैं उनकी अपेक्षा, जो लोग जानते हैं कि उनके जीवन में पाप है, प्रभु यीशु की क्षमा की प्रतिज्ञा को जल्दी स्वीकार करते हैं। परंतु हम उन्हें परमेश्वर के विषय में क्या बताएँ?"

प्रभु यीशु के सुसमाचार को कैसे सुनाएँ

बुद्धिमान शिक्षार्थी को सुसमाचार की सबसे महत्वपूर्ण बातें बताता है।

लूका 24:36–53 में दी गई इस कहानी को पढ़ें और निम्नलिखित महत्वपूर्ण बातों को देखें:

- प्रभु यीशु के जीवन के इतिहास की कौनसी महत्वपूर्ण बातें हम बताते हैं?

- पापों की क्षमा पाने के लिए पापी व्यक्ति की क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए?
- जब हम दूसरों को प्रभु यीशु के विषय में बताते हैं तब हमें कहाँ से सामर्थ मिलती है?

"जब हम दूसरों को प्रभु यीशु के विषय में बताते हैं, तब हम बताते हैं कि वह परमेश्वर द्वारा भेजा गया है (ख्रीष्ट) और उसकी मृत्यु और पुन्रुत्थान के विषय में बताते हैं। हम लोगों को न केवल निर्णय लेने के लिए बुलाते हैं, बल्कि हम उन्हें कार्य करने भी बुलाते हैं। यह कार्य है पश्चाताप जो बपतिस्मा द्वारा दृढ़ होता है। हम नए विश्वासियों की सहायता करते हैं ताकि वे इस बात को समझें कि परमेश्वर ने पवित्र आत्मा के द्वारा प्रभु यीशु के विषय में बताने की सामर्थ देता है।"

मूर्ख व्यक्ति बेचैनी से कहता है, "उन्हें अपने पापों के विषय में बुरा लगने की जरूरत नहीं है। उन्हें केवल सन्देश को ग्रहण करना है!"

सुसमाचार के प्रति प्रतिक्रिया कैसी प्रगट करें

बुद्धिमान यह जानता है कि लोगों को सुसमाचार सुनने से बढ़कर भी और बहुत कुछ करना है। वह शिक्षार्थी को दिखाता है कि प्रेरितों के काम 2:37–38 में कैसे पतरस ने प्रभु यीशु को अपने लोगों के पास लाया।

इस कहानी को पढ़ें और आप पाएँगे किः

- पतरस ने प्रभु यीशु के विषय में क्या कहा?
- उसकी प्रतिक्रिया के रूप में पतरस ने लोगों को क्या करने कहा?

बुद्धिमान समझाता है कि प्रेरित पौलुस ने सुसमाचार के महत्वपूर्ण सत्यों को प्रचार किया। तीन हजार लोगों ने पश्चाताप किया और पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा विश्वास किया। उन्होंने उसी दिन बपतिस्मा लिया और कलीसिया के साथ मिल गए।

पतरस ने सिखाया :

- प्रभु यीशु वह व्यक्ति है जिसे परमेश्वर ने चमत्कारों के द्वारा प्रभु और मसीहा मान्य किया।

- उसकी मृत्यु के द्वारा हमें क्षमा मिलती है।
- उसके पुन्रुत्थान के द्वारा मृत्यु पर विजय और परमेश्वर के पवित्र आत्मा के द्वारा नया जीवन मिलता है।
- हमारी प्रतिक्रिया पश्चाताप, यीशु में विश्वास, बपतिस्मा और कलीसिया में प्रवेश है।"

शिक्षार्थी पतरस का उदाहरण अपनाता है और अपने रिश्तेदारों को यीशु के जीवन, मृत्यु और पुन्रुत्थान की सामर्थी कहानी बताता है। शिक्षार्थी दूसरी कहानियों को भी उपयोग में लाता है जो उसे पहले पहले बुद्धिमान ने बताई थी। बुद्धिमान उसे बाइबल से कहानियों की एक सूची देता है ताकि लोगों को सुसमाचार को समझ लेने में मदद मिल सके।

- यह सूची स्तर तीन के अंत में पायी जाती है।

शिक्षार्थी के दो मित्र स्वीकार करते हैं। वे पश्चाताप करते हैं और प्रभु यीशु में विश्वास करते हैं। जितने जल्द हो सके उतने जल्द बपतिस्मा लेने में अपने मित्रों की सहायता करने की शिक्षार्थी योजना बनाता है।

प्रात्यक्षिक कार्य

- अपनी कलीसिया की लूका 24:46,47 याद करने में मदद करें।
- लोगों की पश्चाताप करने में और प्रभु यीशु में विश्वास करने में आप कैसी मदद करेंगे इस विषय में योजना बनाएँ।
- नए विश्वासियों की यह समझने में मदद करें कि जब वे परमेश्वर की ओर फिरते हैं तब उन्हें पापों की क्षमा और पवित्र आत्मा का वरदान प्राप्त होता है।

पाठ 2

बपतिस्मा देने की प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन करना

शिक्षार्थी इस बात से खुश होता हुआ घर आता है कि उसके दो रिश्तेदार प्रभु यीशु के आ रहे हैं। बुद्धिमान उसे बपतिस्मा लेने हेतु प्रोत्साहित करता है। वह शिक्षार्थी को मत्ती 28:18–20 में प्रभु यीशु ने बपतिस्में के विषय में प्रभु यीशु ने दी हुई आज्ञा सिखाता है। मूर्ख सोचता है कि शिक्षार्थी जल्द ही बपतिस्मा लेगा। वह शिक्षार्थी को चेतावनी देता है, "सावधान रहो। इनमें से कुछ लोग यदि प्रभु यीशु से दूर हो गए तो क्या होगा? रुको और उनके विश्वास की परीक्षा लो। फिर जो विश्वासयोग्य हैं उन्हें बपतिस्मा का पुरस्कार दो।"

पश्चाताप करनेवाला कैदखाने का अधिकारी

प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन करने में इस तरह देर करने के बहाने का शिक्षार्थी इन्कार करता है। वह कहता है, "नहीं उन्हें रुकने की जरूरत नहीं है। मैं जानता हूँ कि उन्होंने पश्चाताप किया है। कल मैंने कैदखाने के अधिकारी की कहानी पढ़ी। इसे हम प्रेरितों के काम 16:22–34 में पढ़ते हैं।"

शिक्षार्थी ने जो पाया उसका अध्ययन करने हेतु इस कहानी को पढ़ेः–

- यह अधिकारी खुद को क्यों मारना चाहता था?
- अपने उद्धार पाने के तुरंत बाद इस अधिकारी ने किस तरह दूसरों को चेले बनाना आरंभ किया।
- वह और उसके परिवार ने कितने जल्दी बपतिस्मा लिया?

इस तरह अधिकारी का भय उचित था कि उसका नाश हो रहा है; वह हारा हुआ और जीवन जीने के योग्य नहीं है; और उद्धार की आशा उसके पास नहीं है। वह अपने प्रयासों से बदल नहीं सकता था। मेरे रिश्तेदार भी वैसे ही हैं, परंतु प्रभु यीशु ऐसे लोगों को बचाने आया जो समझते है कि वे खोए हुए और लाचार हैं।

बपतिस्मा उन लोगों के लिए वरदान है जिन्हें क्षमा की जरूरत है।"

बुद्धिमान कहता है, "जी हाँ, प्रेरित पौलुस ने रोमियों 6:3–4 में साफ शब्दों में बताया है कि बपतिस्मा केवल पानी से धोया जाना नहीं है। बपतिस्मा में हमारा पापमय स्वभाव प्रभु यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाया जाता है। हम पुन्रुथित प्रभु यीशु के साथ नए जीवन के लिए उभारे जाते हैं। जब लोग पश्चाताप कर बपतिस्मा लेते हैं तब प्रभु यीशु में उनके जीवन का आश्वासन पाने में उनकी मदद करें। उन्हें बताएँ कि पवित्र आत्मा परमेश्वर की ओर से भेंट के रूप में उनके पास आता है और नए जीवन को उनके लिए संभव बनाता है।

इस क्रिया के द्वारा हम देखते हैं कि कैदखाने के अधिकारी ने प्रभु यीशु पर विश्वास किया। उसने अपने परिवार को बुलाया और वे एकसाथ प्रभु यीशु के शिष्य बन गये। उन्होंने अपने परिवार, रिश्तेदार और मित्रों से आरंभ किया।

अधिकारी के बपतिस्में से उसका तुरंत पश्चाताप और विश्वास प्रगट होता है। बपतिस्मा ही एक मात्र ऐसा विधी है जिसका पालन करने की आज्ञा हमें दी गई है। इस विधी के द्वारा यह साबित होता है कि हमारे हृदय में बदलाव आया है। जितने प्रभु यीशु की ओर फिरे उन सभों को प्रेरितों ने तुरंत बपतिस्मा दिया। कलीसिया ने देखा कि परमेश्वर ने पवित्र आत्मा के द्वारा कलीसिया अर्थात मसीह की देह के साथ जोड़ा है।

मूर्ख व्यक्ति विरोध करता हुआ कहता है, "तुम्हारे कुछ रिश्तेदार शराबी और चोर हैं। जब तक वे अपने आपको सही साबित नहीं करते तब तक आपको उन्हें अपने झुण्ड़ में शामिल नहीं करना चाहिए। नहीं तो दूसरे आप नाम रखेंगे।

चुंगी लेनेवाला जिसे क्षमा की गई थी

बुद्धिमान शिक्षार्थी को लूका 18:9–14 में बताई गयी क्षमाप्राप्त चुंगी लेनेवाले की कहानी बताकर प्रोत्साहित करता है। वह शिक्षार्थी से पूछता है, "दो लोग प्रार्थना कर रहे थे। परमेश्वर की दृष्टि में कौन सही रहा?"

कृपया इस कहानी को पढ़ें और बुद्धिमान के प्रश्न का उत्तर खोजें। प्रेरितों ने

लम्बे समय के अध्ययन के बाद अपने आप को योग्य साबित करने वालों को पदवीदान समारोह के रूप में बपतिस्मे का उपयोग नहीं किया। ये मानवी परम्पराएँ बाद में आयी। नए नियम की कलीसिया में, लोग पश्चाताप और बपतिस्मा के द्वारा कलीसिया में प्रवेश करते थे। उसके बाद वे कलीसिया अर्थात् मसीह की देह की सहायता से आत्मिक उन्नति करते थे।"

कलीसिया में हमारा अधिकार कहाँ से आता है?

"शिक्षार्थी, नए विश्वासियों को बपतिस्मा देने अधिकार हम बाइबल से खोजें। मत्ती 28:18–20 देखें।"

निम्नलिखित बातों को पाने के लिए बाइबल के अनुच्छेद को पढ़ें:

- कौन से अधिकार से चेले बनाने की प्रभु यीशु आज्ञा देता है?
- प्रभु यीशु के नए चेलों के विषय हमें कौनसी दो जिम्मेदारियाँ हैं?
- आज्ञा को संभव बनानेवाली कौनसी प्रतिज्ञा प्रभु यीशु करता है?

बुद्धिमान अधिकार के तीन स्तरों को समझाता है। "शिक्षार्थी, कलीसिया में हमारा अधिकार कहाँ से आता है यह याद रखने का आसान तरीका यहाँ है:

- सर्वप्रथम, प्रभु यीशु के और उसके प्रेरितों की आज्ञा से,
- प्रेरितों के काम करने के तरीके से,
- तीसरा, हमारे कलीसिया की परम्परा से।"

"हम सारी बातों से बढ़कर प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन करते हैं। प्रेम से उसकी आज्ञा का पालन करने से हमें कोई नहीं रोक सकता। प्रेरितों के काम हमारे लिए उदाहरण हैं। उन्होंने जो काम किए उन्हें हम नहीं मना कर सकते। हम उन्हें आज्ञा भी नहीं दे सकते क्योंकि प्रभु यीशु ने भी नहीं दी थी। प्रेरितों के कुछ रिवाज़ इस तरह थे: रविवार को इकट्ठा होना, घरों में मिलना, तुरंत बपतिस्मा, और हाथ रखना।

"तीसरे स्तर का अधिकार है मानवी परम्परा। मेल के साथ काम करने में ये

हमारी सहायता करते हैं। परंतु यदि कोई मानवी परम्परा प्रभु यीशु की आज्ञाओं में दखलअंदाज़ी करती है, तो हमारे पास महत्वपूर्ण चुनाव है। हम कलीसियाई परम्पराओं के अनुसार चलेंगे या प्रभु यीशु की आज्ञाओं का पालन करेंगे?"

प्रात्यक्षिक कार्य

- अपनी कलीसिया के साथ मत्ती 20:18–20 याद करें।
- बिना अनुचित विलंब के नए विश्वासियों को बपतिस्मा दें और पवित्र आत्मा की सामर्थ से वे कलीसिया के पूर्ण सदस्य कैसे बन सकते हैं इसकी योजना बनाएँ।
- योजना बनाएँ कि नए विश्वासी तुरंत अपने परिवार और मित्रों के बीच चेले बनाना आरंभ करें।
- अपने कलीसिया की परम्परा का परीक्षण करें कि कोई भी बात आपको प्रभु यीशु की आज्ञा पालन करने से रोकने न पाए।

पाठ 3

शिष्य बनाने की मसीह की आज्ञा का पालन करना

एक हफ्ते बाद, बुद्धिमान अपने मित्र शिक्षार्थी को उदास पाता है। शिक्षार्थी दुःख के साथ पूछता है, "बायबल का ठीक से अध्ययन न करते हुए दूसरों को प्रभु यीशु के पास लाता हूँ, इसलिए मेरे मित्र मेरी आलोचना करते हैं। आप जानते हैं कि मैं अच्छा वक्ता नहीं हूँ।"

प्रभु यीशु ने शिष्य कैसे बनाएँ

बुद्धिमान शिक्षार्थी को मत्ती 28:19 से शिष्य बनाने की यीशु की आज्ञा के विषय सिखाने का निर्णय लेता है। मसीह ने साधारण लोगों को शिष्य बनने के लिए बुलाया, प्रसिद्ध वक्ताओं को नहीं। फिर वह लूका 5:1–11 और 5:27–32 में प्रभु यीशु की एक प्रतिज्ञा को दिखाता है।

कृपया इस भाग को पढ़ें:

- अपने चेले बनाने के लिए प्रभु यीशु ने क्या प्रतिज्ञा दी?
- प्रभु यीशु का चेला होने के नाते प्रभु यीशु ने कौनसी दो बातें की?
- किस तरह के लोगों को बचाने और मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाने के लिए यीशु आया?

"देखो, शिक्षार्थी, प्रभु यीशु ने अपने चेलों को मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाने की प्रतिज्ञा की। पतरस के समान, हम भी उसके बिना कुछ नहीं कर सकते। केवल उसी की सामर्थ से हम लोगों को विश्वास और पश्चाताप के लिए बुला सकते हैं। पवित्र आत्मा के दान के द्वारा वह हमें सामर्थ देता है। उसने अपने चेलों को एक साथ मिलकर काम करना सिखाया, दो और उससे अधिक लोगों के दल में।

"मैं जानता हूँ कि जब तुम यीशु के विषय में बोलते हैं तब आप अपने भाई को साथ ले जाने की योजना बना रहे हैं। हम इसी समय दोनों के लिए गिड़गिड़ाकर

प्रार्थना करें। हम प्रार्थना करेंगे कि पवित्र आत्मा तुम्हें अभिषेक देगा और तुम्हें और सहयोगी देगा (मत्ती 9:38)।"

प्रार्थना करने के बाद, बुद्धिमान कहता है, "जब यीशु ने लेवी को बुलाया तब लेवी ने अपना सब कुछ छोड़ दिया और वह तुरंत यीशु के पीछे चल पड़ा, जैसे पतरस और अन्य चेलों ने किया था। शिष्य बनने का अर्थ है अपने जीवन के हरेक भाग में प्रभु यीशु को राज्य करने का अधिकार देना और तुरंत उसकी आज्ञा का पालन करना।"

मूर्ख व्यक्ति बीच में ही बोल पड़ता है, "यह ठीक है, शिक्षार्थी। अब तुम यीशु को जानते हो, दूसरों के बारे में भूल जाओ। अपने खुद के आत्मिक जीवन की परवाह करो!"

बुद्धिमान आवेश के साथ उसके बीच बोल उठता है, "नही! प्रभु यीशु के पीछे चलने का अर्थ हम दूसरों की परवाह करना छोड़ दें ऐसा इसका अर्थ नहीं है। सच्चाई तो यह है कि हम उन्हें और भी प्रेम करते हैं। प्रभु यीशु का शिष्य होने के नाते मत्ती ने सबसे पहले अपने मित्रों को भोजन पर इकट्ठा बुलाया ताकि वह उन्हें यीशु के पास ला सके। हम अपने मित्रों और परिवारों के बीच चेले बनाना आरंभ करते हैं। हम उन्हें प्रभु यीशु के व्यक्तित्व, उसकी मृत्यु और पुन्रुत्थान के विषय में बताते हैं (1 कुरिन्थियों 2:2–5)।

"मत्ती और उसके मित्रों को व्यवस्था के शिक्षकों ने पापी यह नाम दिया था। पतरस भी जानता था कि वह पापी है। इन्हीं लोगों को पश्चाताप के लिए बुलाने और मनुष्यों के मछुआरे बनाने के लिए यीशु आया था। मत्ती के भोज में आए चुंगी लेने वालों के समान पापियों का दल प्रभु यीशु अपनी कलीसिया के लिए चाहता है। केवल वही उन्हें बदल सकता है!

पहली कलीसिया कैसे आरंभ हुई

बुद्धिमान शिक्षार्थी को प्रेरितों के काम 2:36–47 से वह कहानी बताता है जहाँ प्रेरितों ने शिष्य बनाने की प्रभु यीशु की आज्ञा का कैसे पालन किया यह बताया है।

कृपया इस कहानी को पढ़ें। उसमें आप निम्नलिखित बातों को पाएँगे:

- उद्धार पाए हुए 3000 लोगों को बपतिस्मा पाने और कलीसिया में शामिल होने के लिए प्रेरितों ने क्या करने कहा?
- प्रेरितों की शिष्यता के अधीन, नए विश्वासियों ने बपतिस्मा के तुरंत बाद क्या किया?

शिक्षार्थी उत्साह के साथ कहता है, "प्रेरितों के काम 2 में, प्रेरित प्रभु यीशु के विषय में, उसकी मृत्यु और पुन्रुत्थान के विषय में बोलने से रुक नहीं सकते थे। आत्मा की सामर्थ से कई लोगों ने पश्चाताप किया! प्रेरित पतरस ने उन्हें पश्चाताप करने और पापों की क्षमा और पवित्र आत्मा के वरदान के लिए बपतिस्मा लेने के लिए कहा। तीन हजार लोगों ने पश्चाताप किया, बपतिस्मा लिया और वे उसी दिन कलीसिया के साथ शामिल हो गए!"

बुद्धिमान और आगे कहता है, "हाँ, और बपतिस्मा के बाद प्रेरितों की शिक्षा के अनुसार, नए विश्वासियों ने तुरंत प्रभु यीशु की सातों आज्ञाओं का पालन किया। प्रेरितों के काम 2 में देखें। उसमें लिखा है कि लोगों ने सुना और प्रेरितों की शिक्षा का पालन किया, आपस में वे संगति रखते थे, एक साथ रोटी तोड़ते और प्रार्थना करते थे और जरूरतमंदों को देते थे। पहली कलीसिया इसी तरह आरंभ हुई!"

शिक्षार्थी कहता है, "मैं चाहता हूँ कि हमारा चर्च भी पहली सदी की कलीसिया के समान प्रेम के साथ प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन करने के द्वारा तैयार हो। प्रभु यीशु ने जिन बातों की आज्ञा दी है उनका पालन करने में हम एकदूसरे की सहायता करें। मैं चाहता हूँ कि हम सब यह सीखें कि प्रभु यीशु ने शिष्य कैसे बनाए।

आराधना के महत्वपूर्ण भाग

बुद्धिमान खुशी के साथ कहता है, "मैं खुश हूँ। कलीसिया जब इकट्ठा होती है तब वह मसीह की आज्ञाओं पर अमल करती है। प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन करना यह परमेश्वर की सच्ची आराधना है। जब हम इकट्ठा होते हैं तब हम आराधना के महत्वपूर्ण भागों को सीखेंगे। फिर जब आप अपने परिवार और मित्रों के साथ आराधना के लिए इकट्ठा होते हैं तब उनका उपयोग करें। अब आप और आपके परिवार का प्रभु

यीशु की देह में बपतिस्मा हुआ है, तो आप परमेश्वर की एक साथ आराधना करना चाहेंगे।

आराधना के महत्वपूर्ण भाग यहाँ दिए गए हैं:

- प्रार्थना और परमेश्वर की स्तुति करें
- परमेश्वर के वचन की शिक्षा दें
- अपने पापों को कबूल करें और क्षमा का आश्वासन प्राप्त करें
- प्रभुभोज का उत्सव मनाएँ
- दान दें
- एक दूसरे के साथ सहभागिता"

शिक्षार्थी को प्रोत्साहन देता हुआ बुद्धिमान कहता है, "आपके परिवार के समान नया और छोटा चर्च भी जब इकट्ठा होता है तब साधारण रूप में इन बातों को कर सकता है। जब आप किसी घर में मिलते हैं तब उसका निश्चित आरंभ और निश्चित अन्त हो यह अच्छा है। जब हम इकट्ठा होते हैं, केवल उसी समय हम प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन नहीं करते। हम सारा दिन आनंद के साथ उसकी आज्ञाओं का पालन करने के तरीके खोज निकालते हैं।"

बुद्धिमान शिक्षार्थी के परिवार की पारिवारिक आराधना में अगुवाई कर रहे हैं। सहभागिता के इस समय के दौरान वह चेतावनी देते हैं, "मैंने आपके लिए परमेश्वर की आराधना का जीवन आरंभ किया है। परंतु मैं हमेशा यहाँ न रहूँगा। मुझे किसी भी समय छोड़कर जाना होगा, और आपको सब अकेले ही करना होगा। अब आप स्वयं आराधना में अगुवाई करना आरंभ करें। शिक्षार्थी, प्रत्येक व्यक्ति को उनके आत्मिक वरदानों के अनुसार कुछ करने के लिए दें, ताकि आप सभी आराधना में शामिल हो सकें।"

प्रात्यक्षिक कार्य

- आपके निकट रहनेवाले लोगों के लिए और संपूर्ण संसार के लिए जिन्हें प्रभु यीशु की जरूरत है, अपनी मण्डली के साथ प्रार्थना करें।

- अपने परिवार और मित्रों के साथ दूसरों को प्रेम और मधुरता के साथ यीशु के विषय में कैसे बताएँ यह दिखाने के लिए योजना बनाएँ।
- यदि आवश्यकता हो तो, अपनी कलीसियाई मीटिंग का सीमित रूप से आयोजन करें, ताकि लोगों को बाहर जाकर सुसमाचार सुनाने में मदद मिले।
- आराधना के लिए इकट्ठा होते समय, आराधना के महत्वपूर्ण भागों को उपयोग करने की योजना बनाएँ।
- जब आप आराधना के लिए इकट्ठे होते हैं तब प्रत्येक सदस्य को कुछ न कुछ करने का अवसर प्रदान करें।

पाठ 4

प्रेम करने की प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन करना

शिक्षार्थी और उसका भाई प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनाते हुए पड़ोसियों और मित्रों की भेंट कर रहे थे। एक पड़ोसी ने हाल ही में अपनी नौकरी खो दी थी, परंतु वे उसे मिलना नहीं चाहते थे। इस व्यक्ति ने शिक्षार्थी के परिवार की भूमि चुराई थी और वह उनका दुश्मन माना जाता था। शिक्षार्थी उसे पसंद नहीं करता था।

अच्छा सामरी

इसलिए बुद्धिमान ने शिक्षार्थी को मत्ती 22:36–40 से प्रभु यीशु की प्रेम करने की आज्ञा के विषय में सिखाया। अच्छे सामरी की यीशु की कहानी को वह लूका 10:25–37 से फिर दोहराता है। शिक्षार्थी देखता है कि वास्तविक प्रेम क्या है।

इस कहानी को पढ़ें:

- परमेश्वर के अलावा, हमें और किसे प्रेम दिखाना है?
- सामरी ने अपने पड़ोसी पर कैसे प्रगट किया कि वह उससे प्रेम करता है?
- परमेश्वर की दृष्टि में हमारे पड़ोसी कौन हैं?

"शिक्षार्थी, जो धार्मिक अगुवे घायल यात्री को अनदेखा कर चल पड़े थे, वे जानते थे कि अपने पड़ोसी से प्रेम करने की आज्ञा उन्हें दी गई है, फिर भी वे नहीं रुके। सामरी और घायल यहूदी यात्री एकदूसरे के शत्रु थे, परंतु फिर भी सामरी उसकी सहायता करने के लिए रुक गया। हरेक जरूरतमंद व्यक्ति परमेश्वर की दृष्टि में हमारा पड़ोसी है, फिर वह हमारा शत्रु ही क्यों न हो। परमेश्वर चाहता है कि हम उन सबसे प्रेम करें।"

बुद्धिमान समझाता है, "परमेश्वर प्रेम है, और हमें परमेश्वर की समानता में बनाया गया है। उसने हमें बनाया ताकि हम उससे और एकदूसरे से प्रेम करें, जैसे उसने हमसे प्रेम किया है। प्रेम उपयुक्त हो। प्रभु यीशु के विषय में केवल बोलना ही काफी

नहीं है। जब हम एकदूसरे के प्रति प्रेम जताते हैं तब लोग जानते हैं कि हम मसीह के हैं। केवल परमेश्वर हमारे लिए क्या कर सकता है इसी बात में हम दिलचस्पी नहीं रखते।

"हम परमेश्वर के प्रति अपना प्रेम उसकी आज्ञा को मानकर जताते हैं। हमारी आराधना और बाकी सब आज्ञाओं के प्रति हमारी आज्ञाकारिता इसी महान आज्ञा पर निर्भर है। अपने पड़ोसी के प्रति अपना प्रेम हम उनकी जरूरतों के समय उनकी सेवा कर प्रगट करते हैं।"

क्षमा न करनेवाला सेवक

मूर्ख व्यक्ति बीच में ही कहता है, "आप लोगों को आपको दुःख पहुँचाने की अनुमति नहीं दे सकते। आपको उन्हें बताना है कि वे गलत हैं और उन्हें उसकी सजा दें ताकि दोबारा ऐसा न हो!"

बुद्धिमान इस बात से असहमत है। वह कहता है, "नहीं। मैं आपको मत्ती 18:21–35 से क्षमा न करनेवाले दास की कहानी बताना चाहूँगा।

हम उसे पढ़ें:

- मालिक ने कितना कर्ज माफ किया?
- पहले नौकर ने दूसरे नौकर के साथ किस तरह बर्ताव किया?
- क्षमा न करनेवाले नौकर के साथ मालिक ने क्या किया?

"दुश्मनों के प्रति हम अपना प्रेम दर्शाने के लिए उन्हें माफ करते हैं। प्रभु यीशु ने हमें इसी तरह क्षमा की। नए विश्वासियों का हमारे कलीसियाई परिवार में स्वागत करके हम उनके प्रति अपने प्रेम को दिखा सकते हैं। शिष्यों के प्रति अपना प्रेम दिखाने के लिए हमें उनकी सुनना होगा और उपयुक्त सेवकाई के लिए उनकी मदद करना होगा।"

काफी प्रार्थना के बाद, शिक्षार्थी अपने पड़ोसी के लिए भोजन पहुँचाने का निर्णय लेता है और उसके लिए नौकरी खोजने का प्रयास करता है।

द्वेष करनेवाले सेवक

मूर्ख व्यक्ति घमण्ड के साथ शिक्षार्थी को बताता है, "देखो, तुम कितने मजबूत मसीही हो! तुम अपने दल के नए विश्वासियों के समान नहीं हो। उन्हें क्या करना चाहिए यह मालूम नहीं है। यदि तुम उन्हें भाग लेने की अनुमति देते हैं तो वे गलती करते हैं!"

यह सुनकर, बुद्धिमान शिक्षार्थी को द्वेष रखनेवाले सेवकों की कहानी बताता है जो मत्ती 20:1–16 में पाई जाती है।

नए विश्वासियों को कैसे प्रेम करे यह जानने के लिए इसे पढ़ें।

शिक्षार्थी आश्चर्य के साथ कहता है, "तब तो नए विश्वासियों को पुराने विश्वासियों के समान ही अधिकार प्राप्त हुए! परमेश्वर ने हमें जो अनुग्रह दिखाया उसी अनुग्रह के साथ हम उन्हें अपनी कलीसिया में ग्रहण करते हैं।"

हम एक दूसरे से प्रेम करें इसलिए यीशु कैसे प्रार्थना करता है

कलीसिया में हमारी एकता के विषय में समझाकर बुद्धिमान प्रेम से संबंधित अपनी शिक्षा पूरी करता है। वह यूहन्ना 17:20–23 में बताया गई हमारे लिए यीशु की प्रार्थना के विषय में शिक्षार्थी को बताता है।

इस भाग को पढ़ें और आप उसमें निम्नलिखित बातें पाएँगे:

- प्रभु यीशु ने परमेश्वर से हमारे लिए क्या करने कहा?
- हमारी एकदूसरे के साथ एकता किस तरह परमेश्वर पिता और पुत्र के बीच की एकता के समान है?
- प्रभु यीशु को परमेश्वर ने भेजा था यह संसार कैसे जानेगा?

परमेश्वर की दृष्टि में कलीसिया मसीह में एक है। स्थानीय कलीसिया लोगों का ऐसा समूह है जो प्रेम में प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन करने के लिए जहाँ कहीं भी हो, इकट्ठा हुआ है। यह परमेश्वर की इच्छा है कि हम एकदूसरे की सहायता करें और एकदूसरे की उन्नति करें। प्रभु यीशु यह नहीं कहता कि हम अपने अपने तरीके से अकेले ही उसके पीछे चलते रहें।

"पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा तीन व्यक्ति हैं, परंतु फिर भी एक ही परमेश्वर है। हम कई लोग हैं, परंतु मसीह की देह में एक हैं। हम कलीसिया अर्थात् मसीह की देह में यीशु की आज्ञा का पालन करना सीखते हैं। परमेश्वर के प्रति और एकदूसरे के प्रति अपना प्रेम कैसे प्रगट करना चाहिए यह हम वहाँ सीखते हैं।

"नए नियम के नए विश्वासी प्रेम के साथ मसीह की आज्ञा का पालन करने के लिए इकट्ठा होते थे। प्रेरितों के काम 2 में लिखा है कि पश्चाताप और बपतिस्मा के बाद, वे प्रेरितों की शिक्षा पर अपने जीवन में अमल करते थे। वे प्रेम के साथ सहभागिता रखते थे, उदारता के साथ देते थे, प्रभु भोज मनाते और सामर्थ के साथ प्रार्थना करते थे। इस एकता से और प्रभु यीशु की तुरंत तथा प्रेम के साथ आज्ञा मानने के द्वारा कलीसिया का आरंभ हुआ।"

प्रात्यक्षिक कार्य

- प्रार्थना करें की आपकी कलीसिया प्रेम में जड़ पकड़े और मजबूत हो।
- लूका 10:27 याद करने में आप कलीसिया की मदद करें।
- आपके क्षेत्र में भावनात्मक, शारीरिक या आत्मिक तौर पर जो जरूरतमंद हैं उनकी आपकी कलीसिया किस तरह सेवा करेंगी इसकी योजना तैयार करें।
- कलीसिया में आप कैसी एकता बनाएँगे इसकी योजना तैयार करें।

पाठ 5

मसीह की प्रार्थना करने की आज्ञा का पालन करना

कुछ दिनों के बाद बुद्धिमान शिक्षार्थी को अपना दरवाजा खटखटाता हुआ पाता है। वह कहता है, "बुद्धिमान, पुलिस तुम्हारे विषय में पूछ रही है! तुम प्रभु यीशु के विषय में इतने हियाव से बताते हैं यह उन्हें पसंद नहीं है। हम क्या करेंगे?"

दोनो मिलकर प्रार्थना करते हैं। बुद्धिमान कहता है, "शिक्षार्थी, मैं नहीं जानता कि मैं तुम्हारे साथ कितने दिन रहूँगा। मैं देखना चाहता हूँ कि मेरे जाने से पहले प्रार्थना तुम्हारे जीवन का एक निश्चित हिस्सा बन जाए। जब हम इस तरह खतरे में पड़ जाते हैं तब प्रार्थना बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होती है। मैं यूहन्ना 16:24 से प्रभु यीशु की प्रार्थना करने की आज्ञा के संबंध में तुम्हें बताना चाहता हूँ।"

प्रभु यीशु क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले प्रार्थना करता है।

बुद्धिमान मृत्यु से पहले यीशु ने जो प्रार्थना की उसके विषय में बताता है। "शिक्षार्थी, घर जाने पर मत्ती 26:36–46 पढ़ो।"

कृपया इसे पढ़ें और आप उसमें निम्नलिखित बातों को पाएँगे:

- अपनी प्रार्थना की आवश्यकता को प्रभु यीशु ने कैसे प्रगट किया?
- प्रार्थना में प्रभु यीशु की सबसे बड़ी इच्छा क्या थी?
- प्रभु यीशु ने कहाँ और किससे क्या प्रार्थना की?

आप देखेंगे कि प्रभु यीशु ने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की। कभी भूमि पर गिरकर और कभी रोकर उसने प्रार्थना की। मृत्यु का सामना करने के लिए तैयार होने तक उसने अपनी महान जरूरत को परमेश्वर के सामने लगातार रखा। वह क्रूस पर जाना नहीं चाहता था, परंतु वह अपने परमेश्वर पिता की आज्ञा का पालन करना चाहता था। वह विश्वास करता था कि पिता का उत्तर यद्यपि नहीं है, फिर भी उत्तम है। हमें भी

गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करना सीखना है, अपनी इच्छा माँगने के बजाय उस पर विश्वास करते रहना है।

"यीशु के समान हम पवित्र आत्मा की सामर्थ में परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं।

हम प्रभु यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं जो परमेश्वर की ओर आने का रास्ता है। क्रूस पर उसने किए हुए कार्य के द्वारा सीधे परमेश्वर की उपस्थिति में जाना और हमारी आवश्यकता के अनुसार हियाव से माँगना हमारे लिए संभव हो गया है (इब्रानियों 4:16)। हमारे पाप के कारण हमारी प्रार्थनाएँ रुकती नहीं। केवल प्रभु यीशु ही हमारा एकमात्र मध्यस्थ है। वचन हमें बताता है कि हम मरे हुओं को संबोधित कर प्रार्थना न करें (व्यवस्था विवरण 18:11)। हमारी सभी प्रार्थनाएँ प्रभु यीशु के नाम में हैं।

हम भिन्न भिन्न तरीकों से क्यों प्रार्थना करते हैं?

शिक्षार्थी पूछता है, "क्या एक तरीका दूसरे तरीके से ज्यादा सामर्थी है? यदि मैं मेरी प्रार्थना को कई बार दोहराती हूँ या उसे ऊँची आवाज में बोलते हूँ, तो क्या परमेश्वर हमारी प्रार्थना का उत्तर देगा?"

शिक्षार्थी पूछता है, "क्या एक तरीका दूसरे तरीके से ज्यादा सामर्थी है? यदि मैं मेरी प्रार्थना को कई बार दोहराता हूँ या उसे ऊँची में बोलता हूँ, तो क्या परमेश्वर मेरी प्रार्थना का उत्तर देगा?"

बुद्धिमान कहता है, "बाइबल हमें बताती है कि हमारी प्रार्थना हृदय से होनी चाहिए, और उसमें उलझन नहीं होनी चाहिए। हमें प्रार्थना में दूसरों को प्रभावित करने के लिए अलंकारपूर्ण शब्दों को या बार बार किसी बात को दोहराना नहीं चाहिए।

बाइबल हमें प्रार्थना करने के कई तरीके बताती है। अपनी बड़ी जरूरत को प्रगट करने के लिए पिता के सामने अधीनता को व्यक्त करने के लिए प्रभु यीशु भूमि पर गिरकर प्रार्थना करता था। बाइबल के अन्य लोग हाथों को उठाकर प्रार्थना करते थे। प्रार्थनाएँ बोली जाती थी, गाई जाती थी, जोर की आवाज में या शान्तिपूर्ण ढंग से की जाती थी। शरीर की अवस्था महत्वपूर्ण नहीं हैं। अपने हृदयों को प्रामाणिकता के साथ परमेश्वर के सामने उण्ड़ेलना महत्वपूर्ण है।

कभी कभी प्रभु यीशु अपने पिता के साथ अकेले में प्रार्थना करने के लिए मित्रों से दूर से जाकर प्रार्थना करता था। हमें भी अपने भाई और बहनों के साथ ऊँची आवाज में प्रार्थना करना है। और साथ ही साथ एकान्त में भी प्रार्थना करना है।"

प्रभु यीशु हमें सिखाता है कि हम कैसे प्रार्थना करें। बुद्धिमान कहता है, "प्रभु यीशु ने उदाहरण के तौर पर हमें प्रार्थना करना सिखाया। घर जाने पर, प्रार्थना क्यों करनी चाहिए इसके कारणों को हम मत्ती 6:9—13 में खोजें। इन कारणों को खोजने के लिए, "प्रभु की प्रार्थना" नामक प्रार्थना को पढ़ेंः

परमेश्वर की स्तुति करेंः

- परमेश्वर के राज्य को बढ़ाएँ।
- हमें किस बात की आवश्यकता हैं उसे माँगे।
- आत्मिक सुरक्षा माँगे।
- परमेश्वर की महिमा करें।

शिक्षार्थी पूछता है, "परंतु मैं परमेश्वर से नया घर माँग रहा हूँ और मुझे वह नहीं मिला हैं। परमेश्वर क्यों हमारी सभी प्रार्थनाओं को नहीं सुनता।"

बुद्धिमान समझाता है, "हमारी प्रार्थनाओं के उत्तर परमेश्वर के प्रति हमारे आज्ञापालन पर निर्भर करते है, जैसा कि वह 1यूहन्ना 21,22 हमें समझता है। चार तरह के पाप हमारी प्रार्थनाओं को रोक सकते हैंः क्षमा न करना, स्वार्थ, विश्वास का अभाव, दूसरों के प्रति प्रेम का अभाव। जब हम इन पापों को कबूल करते हैं, तब परमेश्वर अपनी विश्वासयोग्यता और न्याय के अनुसार हमें क्षमा करता है और हमारे हृदय को बदल देता है।"

शिक्षार्थी हरेक को बुद्धिमान के लिए प्रार्थना करने के लिए इकट्ठा करता है। प्रेरितों के काम 4:29—31 में नए नियम की कलीसिया के समान, वे गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें प्रभु यीशु के सुसमाचार को और ज्यादा लोगों को बताने की सामर्थ दें।

प्रात्याक्षिक कार्य

- अपनी कलीसिया की मत्ती 6:9–13 में दी गई प्रभु की प्रार्थना याद करने में सहायता करें।
- निजी, पारिवारिक और सार्वजनिक प्रार्थना की योजना बनाएँ।
- उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए कलीसिया को प्रार्थना के उत्तरों के विषय में जानकारी दें।
- बड़े बड़े शब्दों से या लम्बी प्रार्थना दोहराकर लोगों को प्रभावित न करते हुए हृदय से प्रामाणिकता के साथ कैसी प्रार्थना करें यह अपनी कलीसिया को सिखाएँ।

पाठ 6

रोटी तोड़ने की मसीह की आज्ञा का पालन करना

रविवार की सुबह दिन निकलते ही, शिक्षार्थी की मण्डली बुद्धिमान को खोजती है ताकि प्रभुभोज एक साथ मनाया जा सके। वे जानते हैं कि बुद्धिमान को शहर के अगुवों से खतरा है, और उसे जल्द ही छोड़कर जाना होगा। आराधना के बाद, वह उन्हें मत्ती 26:26,27 में दी गई रोटी तोड़ने की आज्ञा के विषय में सिखाता है।

हम प्रभुभोज क्यों मनाते हैं?

बुद्धिमान मेज पर रखे प्याले और रोटी की ओर निर्देश करता है। वह उन्हें याद दिलाता है, "मैंने तुम्हें दिखाया कि प्रभुभोज ग्रहण करने से पहले मेरे साथ बाइबल में पढें। 1 कुरिन्थियों 11:23–34 में यह पाया जाता है।"

प्रभुभोज से संबंधित इस अनुच्छेद को बाइबल से पढ़ेंगे। उसमें हम निम्नलिखित बातें पाएँगे:

- रोटी और प्याले के विषय में यीशु ने क्या कहा?
- हम प्रभुभोज क्यों मनाते हैं?
- प्रभुभोज किसे लेना चाहिए?

"प्रभु यीशु हमें बताता है कि रोटी उसकी देह है और प्याला वह नई वाचा है जो परमेश्वर ने प्रभु यीशु के लहू में बान्धी है। इस भोज में, हम जानते हैं कि प्रभु हमारे बहुत नज़दीक है। परमेश्वर और हमारे बीच में जो नई वाचा है वह हमें प्रभु यीशु के द्वारा परमेश्वर के निकट लाती है। प्रभु यीशु के द्वारा, पवित्र आत्मा की सामर्थ से हमारे पास नया, पवित्र और अनंत जीवन है। यह हम प्रेरितों के काम 2:38 और इब्रानियों 9:15 में पाते हैं। प्रभुभोज ग्रहण करने के द्वारा, हम प्रभु यीशु के अनुग्रह में हमारे विश्वास को दृढ़ करते हैं।

"प्रभु यीशु के स्मरण में और उसके आने तक उसकी मृत्यु में अपने विश्वास को

प्रगट करने हेतु हम प्रभुभोज मनाते हैं। जो भेद की बात हो रही है उसे समझने की हमें जरूरत नहीं है। परंतु हमारी आज्ञाकारिता के लिए प्रभु की ओर से आशीष पाने के लिए हमें इमानदारी के साथ और नियमित रूप से हमें प्रभुभोज मनाने की आवश्यकता है। जो कलीसिया प्रभुभोज को भूल जाती है वह प्रभु यीशु की महिमा नहीं करती। प्रभुभोज देह के रूप में एकदूसरे के साथ और सिर के रूप में ख्रीष्ट के साथ हमारी एकता को दर्शाती है।

"शिक्षार्थी, क्या तुम देखते हो कि किस तरह 1 कुरिन्थियों 10:16–17 में हमें बताया गया है कि रोटी और प्याले में सहभागी होने का अर्थ है प्रभु यीशु की देह और लहू में सहभागी होना है। शायद हम इसे भली भाँति समझ न पाए, परंतु जब हम प्रभुभोज लेते हैं तब हम बाइबल के कुछ भागों का उल्लेख करना चाहेंगे। प्रभु यीशु ने जो कहा था वही हम कहना चाहेंगे, "लो और इसे खाओ; यह मेरी देह है। इसे पिओ, यह नई वाचा का मेरा लहू है" (मत्ती 26:26–28)।

मूर्ख खिड़की से देख रहा है। वह जोर से विरोध करता हुआ कहता है, "यह पवित्र विधी है। आपको प्रभुभोज खिलाने के लिए प्रमाणपत्र और उचित शिक्षा पाए हुए पासबान की जरूरत है! और यदि आप इस बार बार कहेंगे, तो कोई भी उसे गंभीरतापूर्वक ग्रहण नहीं करेगा।"

बुद्धिमान इस बात से असहमति जताता है, "नए नियम की कलीसिया प्रति रविवार अपने घरों में एक साथ रोटी तोड़ती थी, जैसा कि प्रेरितों के काम 20:7 में बताया गया है। परमेश्वर हमें हर सप्ताह रोटी तोड़ने के लिए नहीं कहती, परंतु प्रेरितों ने इस बात का नमूना हमारे लिए डाल रखा है। इसके द्वारा नई कलीसिया के अनुशासन और आराधना में मजबूती आती है। विश्वासियों का कोई भी समूह, भले ही वह छोटा हो या नया, उसे प्रभुभोज मनाने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए। प्रभु ने यह नहीं कहा कि जब तक आपके पास ज्यादा पढ़ा लिखा पासबान नहीं आ जाता तब तक रुके रहो!"

जिन्होंने पाप किया है और पश्चाताप किया है उन मसीही लोगों के साथ हम क्या करें?

"शिक्षार्थी, इस बात को याद रखो कि प्रभुभोज के समय हम ख्रीष्ट के प्रति और एकदूसरे के प्रति अपना प्रेम प्रगट करते हैं। हमारा पाप इस सहभागिता को तोड़ता है। यूहन्ना 1:9 में परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है कि 'यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुध्द करने में विश्वासयोग्य और न्यायी है।' इसलिए पश्चाताप करने वाले भाई–बहनों का प्रभु की मेज में फिर स्वागत करें।

शिक्षार्थी बोलता है, "परंतु मेरे मौसेरे भाई ने तो पाप किया है..."

बुद्धिमान दृढ़ता के साथ उसे रोकता हुआ कहता है, "शिक्षार्थी, पहले, मत्ती 18:15–17 में देखो कि जिन्होंने पश्चाताप नहीं किया है उनके विषय में हम क्या कदम उठाते हैं। कलीसिया गप लड़ाने का स्थान नहीं है, परंतु लोगों को परमेश्वर के पास लौट आने में सहायता करने की जगह है। "

शिक्षार्थी देखता है कि बुद्धिमान के आँखों में आँसू हैं। शिक्षार्थी जान लेता है कि जल्द ही उनका शिक्षक चले जाएगा। बुद्धिमान ने इस नई कलीसिया से प्रेम किया है और प्रभु यीशु की सात मूल आज्ञाओं का पालन कैसे करना चाहिए यह उन्हें सिखाया है ताकि उसके जाने के बाद भी उनकी कलीसिया मजबूत रह सके। बुद्धिमान देखना चाहता है कि कलीसिया की उन्नति के लिए आवश्यक सभी बातें यहाँ हों और वह स्वयं ही नई कलीसिया तैयार कर सके। बुद्धिमान जानता है कि एक और बात की जानी चाहिए।

प्राचीन की योग्यताएँ

बुद्धिमान तीतुस 1:1–9 से प्राचीन की योग्यताओं के विषय में शिक्षार्थी को सिखाता है।

कृपया बाइबल के इस अनुच्छेद को पढ़ें और इन योग्यताओं के विषय में जान लें।

बुद्धिमान शिक्षार्थी से कहता है, "तुम्हारी कलीसिया धर्मी प्राचीनों के बगैर अधूरी है। कुछ महीनों से मैं तुम्हारे मसीही जीवन को देख रहा हूँ, और बाइबल में दी गई प्राचीन की योग्यताएँ तुममें पाई जाती हैं। तुम्हारे भाई में भी यह योग्यताएँ हैं।

"मैं तुम पर और तुम्हारे भाई पर हाथ रख कर प्रार्थना करना चाहता हूँ, जैसे कि क्रेते के नए प्राचीनों के लिए तीतुस ने किया था। तुम दोनों अपनी नई कलीसिया के प्राचीन ठहरोगे। तुम अपने विश्वास में नए हैं, परंतु तुम्हारे पास अगुवाई पाने के लिए बाइबल है और सामर्थ देनेवाला पवित्र आत्मा है। मेरे जाने के बाद मैं तुम्हें पत्र लिखूँगा। जिन बातों की मैंने तुम्हें शिक्षा दी है उनकी याद दिलाने के लिए मैं तुम्हें कुछ सहायक भेजूँगा।

"मैं तुम दोनों को पूछना चाहता हूँ कि क्या तुम विश्वासयोग्यता के साथ अपने कलीसिया की अगुवाई करने के लिए तैयार हो? अन्य सब बातों से अधिक प्रभु यीशु की आज्ञाओं का पालन करना क्या तुम उन्हें सिखाओगे? क्या तुम नम्र होकर दूसरों की सेवा करोगे और जैसा हमें 1 पतरस 5:1–3 में सिखाया गया है उसके अनुसार कलीसिया में उनका कार्य खोजने में उनकी सहायता करोगे?"

शिक्षार्थी और उसका भाई झूण्ड के सामने गंभीरता के साथ प्रतिज्ञा करते हैं, "हम परमेश्वर की सहायता से परमेश्वर के लोगों की सूधी लेने के लिए तैयार हैं।" पूरा झूण्ड प्रार्थना के लिए घुटने टेकता है। जब प्रार्थना समाप्त होती है तब हर कोई रोता हुआ दिखाई देता है।

प्रात्यक्षिक कार्य

- 1 कुरिन्थियों 11:23–26 याद करें ताकि आप प्रभुभोज के समय प्रभु यीशु के शब्द बोल सकें।
- जो कोई पश्चातापी हृदय के साथ कलीसिया में आते हैं उन्हें अपनी कलीसिया में नियमित रूप से प्रभुभोज देने की योजना बनाएँ।
- नए मण्डलियों को किस तरह प्रभुभोज ग्रहण करने का अधिकार है और शिक्षा किस तरह दें इस विषय में योजना बनाएँ।

पाठ 7

देने के विषय में प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन करना

शिक्षार्थी और उसका शिक्षक बुद्धिमान दोनों एक साथ प्रार्थना कर रहे हैं। वे दरवाजे पर जोर से खटखटाने की आवाज सुनते हैं। गाँव का कोई अगुवा खड़ा है। वह कठोरता के साथ कहता है, "बुद्धिमान, मैं तुम्हें यह बताने आया हूँ कि तुम्हें हमारा शहर छोड़कर जाना है। आज ही तुम्हें छोड़कर जाना है।"

बुद्धिमान जाने की तैयारी करते हुए शिक्षार्थी को लूका 6:38 में दी गई प्रभु यीशु की देने की आज्ञा के विषय में शिक्षा देता है। वह धीरे से कहता है, "शिक्षार्थी, तुम्हारे पास और तुम्हारी कलीसिया के पास प्रभु यीशु के पीछे चलने के लिए आवश्यक सारी बातें हैं। और अब जैसे परमेश्वर ने आपको दिया है उसी तरह दूसरों को उदारता के साथ दें।

"जरूरतमंद लोगों को धन देकर या वस्तुएँ देकर उनकी सहायता करो और कलीसिया की देकर मदद करो, परंतु उससे भी बढ़कर दो। जैसे मैंने अपना सम्पूर्ण जीवन दिया उसी तरह अपना सम्पूर्ण जीवन दो। संसार के अगुवों के समान न बनो। नम्र बनो, नई मण्डलियों के नए प्राचीनों को अधिकार दो। हमेशा दूसरों को प्रभु यीशु के बारे में बताने के तरीके खोजते रहो।"

उदार विधवा

बुद्धिमान आगे कहता है, "यह रही मेरी बाइबल। लूका 21:1–4 में दी गई उदार विधवा की कहानी इसमें पढ़ें।"

कृपया इस कहानी को पढ़ें और निम्नलिखित बातों को खोज निकालें:

- अपनी संपूर्ण कमाई में से विधवा ने कितना दिया?
- धनवानों की भेंटों के साथ उसकी भेंट की परमेश्वर ने किस प्रकार तुलना की?

देखें कि किस तरह इस विधवा ने जो कुछ भी जीवन निर्वाह के लिए उसके पास था उसमें से सब कुछ दे दिया– 100 प्रतिशत? पुराने नियम के लोगों को सब वस्तुओं का 10 प्रतिशत देने की आज्ञा दी गई थी, परंतु नए नियम के अनुसार हमें वैसा नहीं करना है। परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम से हम प्रेरित हैं। उस विधवा के समान हम जितना अधिक दे सकते हैं, दें। पौलुस ने कुरिन्थियुस की कलीसिया को बताया कि वे हर सप्ताह परमेश्वर के कार्य के लिए कुछ भाग निकालकर रखें (1 कुरिन्थियों 16:2)। हमारी कमाई का दस प्रतिशत अच्छा आरंभ है।

"2 कुरिन्थियों 9:6–7 में लिखा है कि जो आनंद और धन्यवाद के साथ परमेश्वर को देते हैं, उन्हें आशीष देने की परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है। हमारे पास जो कुछ भी है वह परमेश्वर के पास से आता है, इसलिए आनंद के साथ देने के द्वारा हम यह दिखाते हैं कि हम उसके आभारी हैं। उदारता यह दिखाती है कि जो कुछ भी हमारे पास है उस पर वह प्रभु है। उसके द्वारा उसकी प्रतिज्ञा में हमारा विश्वास प्रगट होता है कि वह हमारी सूधी लेगा और हमें आशीष देगा।"

शिक्षार्थी विधवा की कहानी दोहराता है, "परमेश्वर ने उस विधवा के और धनवानों के हृदय में झाँककर देखा। उसने देखा कि वे क्यों दे रहे हैं। धनवानों ने अपनी बहुतायत में से दिया, अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए या लोगों को प्रभावित करने के लिए दिया। विधवा ने केवल दो छोटे सिक्के दिए, परंतु परमेश्वर जानता था कि वह प्रेम का बलिदान है, इसलिए उसने उसे धनवानों के दानों से भी अधिक जाना।"

बुद्धिमान शिक्षार्थी को बाइबल के लोगों के दान देने के कुछ तरीकों के विषय में बताता है:

- अपने पासबान और मिशनरियों की सहायता के लिए।
- विधवा और अनाथों की और अन्य जरूरतमंदों की मदद करने के लिए
- जो भूखे हैं उनकी सहायता करने के लिए
- उनके मंदिरों के पुनःनिर्माण के लिए

बुद्धिमान जाने के लिए तैयार है। मूर्ख बुद्धिमान को समझाने के लिए आता है।

"अच्छा होगा कि अपने अधिकारियों को तुम यह वायदा करो कि तुम उनकी आज्ञा का पालन करोगे, ताकि वे तुम्हें शहर में रहने दें। तुम अपना जीवन क्यों बरबाद करना चाहते हो? यीशु के बारे में भूल जाओ और यहाँ अच्छी नौकरी ढूँढ़ लो!"

भविष्य के विषय में कहानी

बुद्धिमान अपना सिर हिलाकर इन्कार करता है। "नहीं। श्रीमान मूर्खजी, तुम हमारी आशा के विषय में नहीं समझते। हम प्रभु यीशु मसीह के आने का इंतजार कर रहे हैं। जैसे वह गया था, वैसे वह आएगा भी (प्रेरितो के काम 1:9–11)। जब वह आएगा, तब सब कुछ बदल जाएगा। शिक्षार्थी, प्रकाशित वाक्य 21:1–9 में देखो कि प्रभु यीशु में हमारा भविष्य क्या है।"

कृपया बाइबल के इस अनुच्छेद को पढ़ें। आप उनमें निम्नलिखित बातों को पाएंगे

- नए राज्य में परमेश्वर किसके साथ रहता है?
- आँसुओं का और मृत्यु का स्वर्ग में क्या होगा?
- जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करने से और अपने पापमय जीवन का त्याग करने से इंकार करते हैं उनका क्या होगा?

शिक्षार्थी अपनी आँखों में आनन्द की चमक लिये हुए वचन का पढ़ता है। "देखो यहाँ क्या लिखा हुआ है! हम परमेश्वर के साथ रहेंगे और उसके लोग होंगे। हम सिद्ध होंगे, और वह हमारा वैसे ही स्वागत करेगा जैसे दुल्हा अपनी दुल्हन का स्वागत करता है! न तो रोना होगा, और न दुःख, और न मृत्यु। सब कुछ नया और सुन्दर होगा! बुद्धिमान, यदि मैं आपको दोबारा नहीं देख सका, तौभी मैं उस समय आपको देखूँगा जब परमेश्वर नए आकाश और नई पृथ्वी को बनाएगा। कितना महान सुख!"

बुद्धिमान कहता है, "शिक्षार्थी, हम एक नये अद्‌भुत राज्य के इंतजार में हैं। इसलिये इस जीवन में प्रभाव पाने के लिये और धन–सम्पत्ति इकट्ठा करने की चिंता मत करो। यह जीवन की महत्वपूर्ण बातें नहीं हैं, क्योंकि यह जीवन जल्द ही बीतता जाएगा। यदि परमेश्वर हमें धन देता है तो उसे परमेश्वर की और कमजोरों की सेवा के लिये उपयोग में लाओ। तुमने मेरा उदाहरण देखा। मैं तुम पर कभी बोझ न बना।

स्मरण रखो कि लेने से देना उत्तम है, जैसे कि परमेश्वर ने प्रेरितो के काम 20:34, 35 में कहा है।"

बुद्धिमान शिक्षार्थी को और उसके भाई को गले से लगाता है। वे एक साथ रोते और प्रार्थना करते हैं। जल्द ही बुद्धिमान को बस पकड़ने के लिये वहाँ से निकल जाना है। शिक्षार्थी बुद्धिमान को फिर कभी न देख सका।

प्रात्यक्षिक कार्य

- अपनी कलीसिया की 2कुरिन्थियों 9:6–7 याद करने में मदद करें।
- दिये गये दानों और भेंट का सही तरीके से हिसाब रखने की अपनी कलीसिया के साथ योजना बनाएँ।
- उन दानों का किस तरह उपयोग करना चाहिये इस विषय में अपनी कलीसिया के साथ योजना बनाएँ।

भाग 3

कलीसिया की मूल सेवाओं में उन्नति

इस पुस्तक के पहले दो भागों में, हमने बुद्धिमान नामक एक अध्यापक से आपका परिचय कराया। बुद्धिमान एक वास्तविक व्यक्ति नहीं है, परंतु वह बाइबल के पौलुस के समान है। प्रभु यीशु ने पौलुस को विभिन्न राष्ट्रों में विश्वासियों की मण्डलियाँ बनाने का कार्य सौंपा था। पौलुस ने सुसमाचार सुनाया, मण्डलियों की स्थापना की और उन सभी स्थानों में प्राचीनों को नियुक्त किया। फिर उसने अपने बाद उस कार्य को जारी रखने के लिए तीतुस और तीमुथियुस के समान लोगों को शिक्षा दी। पौलुस ने जिन मण्डलियों की स्थापना की उन्हें वह भूला नहीं और उन्हें प्रोत्साहन देने और शिक्षा देने उसने पत्र भेजें। इनमें से कुछ पत्र हम बाइबल में पाते हैं। उसने तीतुस और तीमुथियुस को शिक्षा देने के लिए जो पत्र लिखे वे भी बाइबल में हैं। पौलुस के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, बुद्धिमान ने शिक्षार्थी को नई कलीसिया की स्थापना करने में मदद की। उन्होंने प्रभु यीशु की मूल आज्ञाओं के अनुसार चलना और आराधना में परमेश्वर हमें जिन बातों को करने की आज्ञा देता है, उन पर अमल करना आरंभ किया। उसके बाद बुद्धिमान को उस शहर से निकाल दिया गया, और शिक्षार्थी उसे फिर कभी न मिल पाया।

परंतु पौलुस प्रेरित के समान, बुद्धिमान शिक्षार्थी को पत्र लिखता रहा और उसके पास विश्वासियों को भेजता रहा। पास्टर की कहानियों का यह तीसरा भाग शिक्षार्थी और उसकी कलीसिया को बुद्धिमान ने लिखे हुए पत्रों का संग्रह है। जब कभी नई कलीसिया में बुद्धिमान ने किसी भी समस्या और अवसर के विषय में सुना, उसने एक पत्र उन्हें लिखकर भेजा। इन पत्रों के द्वारा कलीसिया को सेवकाई में उन्नति करने में सहायता प्राप्त हुई जो प्रभु यीशु की सात मूल आज्ञाओं पर आधारित हैं। भाग 3 का प्रत्येक अध्याय कलीसिया की चौदह मूल सेवकाईयों में से एक है। पौलुस और बुद्धिमान के समान आपकी कलीसिया को किन समस्याओं का या अवसर का सामना करना पड़ रहा है इस विषय में विचार करें। फिर इन अध्यायों का उपयोग किसी रेस्त्राँ के मेनु के समान करें। समय की आवश्यकता के अनुसार, आपकी कलीसिया को

मजबूत बनाने वाली सेवकाई को खोज निकालें। संबंधित अध्यायों में दी गई कहानियों को सिखाकर अपनी कलीसिया में उस सेवकाई को बढ़ाएँ। इस तरह आपकी कलीसिया परमेश्वर की सच्चाईयों पर अमल करना सीखेंगी।

कलीसिया की चौदह मूल सेवकाईयों की सूची

जिन बातों पर कलीसिया उचित तरीके से अमल कर रही है उन पर चिन्ह लगाएँ।

भेड़ों की रखवाली

[ ] सेवकाई 1. कलीसिया के लोगों को भेंट देना, समस्याग्रस्त लोगों को सलाह देना

[ ] सेवकाई 2. पूरे परिवार के विश्वास को मजबूत बनाना

मसीह की सनातन देह का अंग बनना

[ ] सेवकाई 3. सुसमाचार सुनाना और नए विश्वासियों को बपतिस्मा के साथ कलीसिया में लाना

[ ] सेवकाई 4. प्रत्येक को कलीसिया में अपने वरदानों का उपयोग करने हेतु तैयार करना

प्रेम पर अमल करना

[ ] सेवकाई 5. बीमार, जरूरतमंद और पीड़ितों की देखरेख करना

[ ] सेवकाई 6. मण्डलियों में और मण्डलियों के बीच सहभागिता को बढ़ावा देना

बदलाव और पवित्रता

[ ] सेवकाई 7. परमेश्वर की आराधना करना, प्रभुभोज का उत्सव मनाना

[ ] सेवकाई 8. मसीह के समान बनना, गलत लोगों को सुधारना

प्रार्थना करना और परमेश्वर की सुनना

[ ] सेवकाई 9. प्रार्थना करना

[ ] सेवकाई 10. अध्ययन करना, सिखाना, परमेश्वर के वचन का पालन करना

देना और जाना

[ ] सेवकाई 11. परमेश्वर के साधनों के अच्छे भण्डारी बनना

[ ] सेवकाई 12. नई कलीसिया आरंभ करने में खुद को लगा देना

शिष्य बनाना

[ ] सेवकाई 13. अगुवों को प्रशिक्षित करना

[ ] सेवकाई 14. मिशनरियों को भेजना

भेंट देना और सलाह देना

शिक्षार्थी एक कागज लेकर अपने भाई के घर में दौड़ता हुआ जाता है। वह बोल पड़ता है, "हमें बुद्धिमान से एक पत्र मिला है! क्या तुम्हें याद है कि मैंने उसे अपनी कलीसिया में निराशा की समस्या के विषय में लिखकर भेजा था? उन्होंने यहाँ उसका उत्तर लिखा है।" रविवार के दिन, शिक्षार्थी पूरी मण्डली को वह पत्र पढ़कर सुनाता है।

प्रिय शिक्षार्थी और उसके घर में इकट्ठा होनेवाले मेरे प्रिय भाई–बहनो, मैं हमेशा ही तुम्हारे बारे में सोचता हूँ और प्रार्थना करता हूँ। तुम सदा मेरे हृदय में हो। शिक्षार्थी ने मुझे लिखा है कि आपमें से कई लोगों के जीवन में समस्या है और आप दुःख उठा रहे हैं। आपमें से कुछ निराश हैं। भेंट करने की और सलाह देने की सेवकाई के द्वारा कलीसिया में विश्वास बढ़ाने का समय आ गया है। जब जीवन में कठिनाईयाँ आती है उस समय भी परमेश्वर में विश्वास करने और आनंद करने में एकदूसरे की सहायता करने के कुछ तरीके यहाँ दिए गए हैं।

पवित्र आत्मा को परामर्शदाता या मार्गदर्शक कहा गया है। 1 राजा 19:1–18 से एक निराश भविष्यद्वक्ता की कहानी पढ़ें और देखें कि परमेश्वर ने किस तरह इस निराश भविष्यद्वक्ता की सहायता की:

- एलिय्याह इतना निराश क्यों था? (अध्याय 18 पढ़ें।)
- एलिय्याह?
- गुफा में एलिय्याह?

- एलिय्याह ने कैसे जाना कि परमेश्वर उससे बात कर रहा है?
- एलिय्याह?

मेरे प्रिय मित्रो, परमेश्वर के बहादुर भविष्यद्वक्ता भी निराश हुए। एलिय्याह ने परमेश्वर के लिए बड़े बड़े आश्चर्यकर्म किए थे, परंतु जब रानी ने उसे जान से मार देने की धमकी दी तब वह डर गया। वह मरना चाह रहा था। परमेश्वर ने देखा कि उस तरह की निराशा उसके मन में इस कारण आयी क्योंकि वह कमजोर हो गया था और थक गया था। परमेश्वर ने भोजन और जल लेकर एक स्वर्गदूत को उसके पास भेजा और उसे सोने दिया ताकि वह विश्राम पा सके। फिर परमेश्वर उसे एक एकान्त स्थान में ले गया ताकि वे आपस में बात कर सकें। परमेश्वर के पहले शब्द प्रश्न थे, "तू यहाँ क्यों आया है?" परमेश्वर ने पहले एलिय्याह की सुन ली। परमेश्वर ने धीमी, सौम्य आवाज में उससे बात की, क्रोधपूर्ण गर्जन के साथ नहीं। अन्त में परमेश्वर ने एलिय्याह को जीने का एक कारण दिया। परमेश्वर ने एलिय्याह को एक काम दिया और उसकी सामर्थ में उसे एक नई आशा दी।

उस महान मार्गदर्शक का उदाहरण अपनाएँ। जब आप जानते हैं कि लोग निराश हैं, तो जाकर उनसे भेंट करें। पहले, यह जानने की कोशिश करें कि क्या कोई भौतिक कारण उनकी समस्या के पीछे है। क्या वे थके, भूखे या बीमार हैं? उनकी चंगाई के लिए प्रार्थना करें और उनकी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करें। फिर प्रश्न पूछें। समस्या क्या है यह खोजने का प्रयास करें। धीरज और बुद्धिमानी के साथ यह खोजने का प्रयास करें कि लोगों की निराशा या विपत्ति का वास्तविक कारण कया है। सौम्य बने रहें। परमेश्वर हमारे तरस के द्वारा दुःखी लोगों से बातें करता है, हमारे क्रोध से नहीं।

इन लोगों के साथ गुप्त रूप से बात करने का तरीका खोज निकालें। उनकी बुरी बातों को जो आपने सुना है, उस विषय में दूसरों के पास न दोहराने की सावधानी बरतें। बकवास से दूर रहें। निराश लोगों को वे प्रभु में कौन हैं यह बताकर उन्हें नई आशा प्रदान करें। इफिसियों 1:3–14 में दिए गए वचन उन्हें जोर से कहने लगाएँ, प्रत्येक प्रतिज्ञा को वे खुद पर लागू करें। वे पदों को स्वयं पढ़ सकते या आपके पीछे पीछे

दोहरा सकते हैं। कई बार उनके जीवन में पाप होता है जिसे उन्होंने परमेश्वर के पास कबूल न किया हो। उन्हें अपने पापों को अंगीकार करने में और जिन्होंने उन्हें चोट पहुँचायी है विशेषकर उनके परिवार के लोगों को क्षमा करने में उनकी सहायता करें। परमेश्वर की क्षमा का उन्हें आश्वासन दें। अन्त में परमेश्वर की सेवा करने के व्यवहारिक मार्ग उन्हें बताएँ, कठिन परिस्थितियों में भी।"

शिक्षार्थी पत्र पढ़ना बंद करता है और कहता है, "इन बातों को इसी समय करना आरंभ करें! हम भेंट और सलाह देने की सेवकाई आरंभ करेंगे। इस समय हमारी मण्डली को किन समस्याओं का सामना करना पड़ सहा है?" वे कुछ समस्याओं का उल्लेख करते हैं:

- कुछ लोग दूसरों के साथ संघर्ष में लगे हैं, सामान्यतया अपने परिवार के लोगों के साथ।
- कुछ लोग बूढ़े और बीमार हैं और उनके पास काम नहीं है।
- कुछ लोग शराबखोरी या लैंगिक समस्याओं के साथ संघर्ष कर रहे हैं।
- कुछ लोग नए विश्वासी हैं जो समूह में अपने स्थान को नहीं जानते।
- हरेक के पास ऐसे मित्र और परिवारजन हैं जो अभी तक यीशु को नहीं जानते।

शिक्षार्थी ऐसे सहायकों को खोज निकालता है जो अपने मसीही भाई–बहनों को भेंट करना चाहते हैं। वह उन्हें इस तरह नियुक्त करता है ताकि हरेक के घर नियमित रूप से भेंट हो सके। वे जोड़ियों से जाते हैं, पुरुष पुरुषों के साथ, स्त्रियाँ स्त्रियों के साथ ताकि दूसरे नाम न रख सकें। संभव होने पर पति–पत्नी परिवारों को भेंट करते हैं। वे लोगों के साथ प्रार्थना करते हैं। लोगों को यीशु की जो कहानी वे बताते हैं पहले वे उसका अध्ययन करते हैं। उद्धार न पाए हुए मित्रों को भेंट करते समय नए विश्वासियों के साथ अधिक परिपक्व विश्वासी जाने तैयार हो जाते हैं। शिक्षार्थी उन्हें स्मरण दिलाता है, "विचारशीलता रखो! लोग जब खाना खाते हैं या काम करते हैं तब उन्हें मत मिलो। साफ सफाई रखो, आदरयुक्त एवं सौम्यतापूर्ण बर्ताव करो। प्रभु यीशु कैसा है यह हम उन्हें बताना चाहते हैं।" भेंट की सेवकाई तय कर लेने के बाद

शिक्षार्थी पत्र पढ़ना बंद करता है।

प्रिय मित्रो, बीमारों को भेंट करते समय अय्यूब की कहानी याद करो। अय्यूब 1 और 2 अध्याय पढ़ें :

- परमेश्वर ने अय्यूब के विश्वास को कैसे परखा?
- परमेश्वर क्यों परीक्षा ले रहा है यह क्या अय्यूब समझ पाया?
- अब अय्यूब 38 और 42 देखें।
- परमेश्वर ने अय्यूब को कैसे उत्तर दिया?
- अन्त में उसका क्या हुआ?

दुःख हमारे जीवन में कई कारण से आ सकता है। कभी कभी हम अपने ही मूर्खतापूर्ण कामों के कारण अपने जीवन में दुःख को खुद ही ले आते हैं। परमेश्वर भी बीमारी का उपयोग करता है ताकि हम अपने जीवन में सुधार ला सकें, उसे याद करें, हमें स्वर्ग ले जा सके। वह दुःखों को अनुमति देता है कि वे हमारे विश्वास को परखें और मजबूत बनाएँ। कभी कभी वह अपनी सामर्थ से हमें चंगा कर सकता है। कभी कभी वह हमारी कमजोरी में अपने बल को प्रगट करता है जैसा कि पौलुस कुरिन्थियों की कलीसिया को बताता है।

2 कुरिन्थियों 1:3–7, 4:7–12 और 12:7–10 में पढ़ें और दुःखों के प्रति पौलुस की क्या प्रवृत्ति थी यह खोजें। परमेश्वर हमें दुःखों में नहीं ढकेलता। प्रभु यीशु हमारे दुःखों को अपने काँधों पर उठाने के लिए आया। यदि हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, तो वह हमारे दुःखों के द्वारा कुछ भलाई ही उत्पन्न करेगा जैसे कि उसने प्रभु यीशु, पौलुस और अय्युब के दुःखों के द्वारा भलाई ही को उत्पन्न किया। याकूब 5:13–20 में से उन लोगों के लिए सांत्वना के शब्द खोज निकालें जो कठिन परिस्थितियों से गुजर रहे हैं।

यूहन्ना 9 से उस अन्धे व्यक्ति की कहानी पढ़ें जिस पर कोई विश्वास न करता था। इस मनुष्य के अन्धेपन से जो अच्छी बातें हुई उन्हें खोज निकालें।

आपको अनुग्रह मिले, प्रभु में आपका भाई, बुद्धिमान।

प्रात्यक्षिक कार्य

अपनी मण्डली का इस तरह प्रबंध करें कि प्रत्येक व्यक्ति को नियमित रूप से भेंट दी जा सके। मण्डली के बुजुर्ग, बीमार, नए लोग, उद्धार न पाए हुए मित्र और परिवार, और जिनकी विशेष जरूरतें हैं उन्हें याद रखें।

कलीसिया के उन लोगों को खोज निकालें जो दूसरों को सलाह मार्गदर्शन कर सकते हैं। उन्हें प्रोत्साहन देने और दूसरों को उपदेश देने के लिए इस भाग में दी गई कहानियों का उपयोग कर शिक्षा दें।

पूरे परिवार के विश्वास को मजबूत बनाना

शिक्षार्थी पत्र पढ़ रहा है। इतने में मूर्ख व्यक्ति उससे मिलने आता है और शिकायत करता है, "आप मसीही लोगों को अच्छा जीवन बिताना चाहिए, परंतु आपकी कलीसिया के परिवारों में समस्याएँ हैं। पति अपनी पत्नियों से लड़ रहे हैं और अपने बच्चों की ओर नज़रअंदाज कर रहे हैं। आपका विश्वास कहाँ है?"

शिक्षार्थी उत्तर देता है, "बुद्धिमान इसी विषय में इस पत्र में लिखता है। वह मेरे सवाल का जवाब लिख रहा है : हम पूरे परिवार के विश्वास को कैसे मजबूत बनाएँ? मैं तुम्हें यह पत्र पढ़कर सुनाता हूँ।"

प्रिय भाई–बहनो, तुम्हें शांति मिले, परमेश्वर के अनुग्रह से तुम उसके परिवार में बुलाए गए हो। मैं तुम्हें अब्राहम के परिवार के विषय में बताता हूँ। उत्पत्ति 21:1–7 और 22:1–18 पढ़ो। आप उसमें निम्नलिखित बातें पाएँगेः

- सारा को उसके बुढ़ापे में किसने पुत्र दिया?
- परमेश्वर ने अब्राहम को उसके प्रिय बेटे को क्यों मारने कहा?
- परमेश्वर ने अब्राहम के बेटे को किस तरह बचाया?
- अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया इसलिए परमेश्वर ने उसके साथ क्या प्रतिज्ञा की?

परमेश्वर ने अब्राहम को बेटा दिया। उसने अब्राहम को उसके बेटे को बलिदान करने कहा और उसकी परीक्षा ली। अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और उसकी आज्ञा का पालन किया, परंतु परमेश्वर ने उसके बदले में मेम्ने को भेजकर इसहाक को बचा लिया। यह इस बात का उदाहरण है कि किस तरह प्रभु यीशु हमारे बदले में मरा। प्रभु यीशु, जो अब्राहम के परिवार से आता है उसके द्वारा परमेश्वर ने समस्त पृथ्वी को आशीष देने की अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया।

परमेश्वर ने विवाह का निर्माण किया और उसे अच्छा बनाया। वह हमें बच्चे देता है और उन्हें आशीष देता है। यदि हम परिवार की इस योजना के अनुसार चलते हैं,

तो हम मेल के साथ रहते हैं। इफिसियों 5:22–33 में बताया गया है कि पुरुष और स्त्री अपने माता–पिता को छोड़कर अपने परिवार के साथ मिले रहेंगे। उन्हें जीवनभर एकदूसरे के साथ विश्वासयोग्य रहना है। पति को अपनी पत्नी से अपना समान प्रेम करना है। पत्नी को अपने पति का आदर करना है और उसके अधीन रहना है। क्रोध से भरे शब्दों से और धमकियों से उस पर राज्य करना उसका काम नहीं है। उसके बदले में पौलुस उन्हें कहता है कि वे एकदूसरे के अधीन रहें। यदि पति अपनी पत्नी से प्रेम करता है और अपने परिवार की सूधी लेता है, तो पत्नी खुशी के साथ उसके पीछे चलेगी।

मूर्ख बीच में ही कहता है, "यह तभी सफल होता है जब दोनों पति और पत्नी मसीही हो। तुम्हारे चचेरे भाई को अपनी अविश्वासी पत्नी को तलाक दे देना चाहिए! शायद तभी बच्चे भला बर्ताव करेंगे!"

शिक्षार्थी समझाता है, "नहीं। पौलुस हमें 1 कुरिन्थियों 7:10–16 में बताता है कि हमें अपने अविश्वासी जीवनसाथी के साथ, यदि वह न छोड़ना चाहे तो बने रहना है। वह अविवाहित लोगों को यह बताता है कि वे मसीह के अन्य विश्वासियों के पीछे चलें। पौलुस यह भी बताता है कि हम अपने बच्चों का पालन पोषण कैसे करें। मैं आपको बुद्धिमान के पत्र का और भाग पढ़कर सुनाऊँगाः"

> प्रिय मित्रो, पौलुस इफिसियों 6:1–4 में बच्चों को बताता है कि वे प्रभु में अपने माता–पिता की आज्ञा का पालन करें ताकि वे अच्छा जीवन बिता सके। वह माता–पिता को यह भी बताता है कि वे बच्चों का पालन–पोषण अच्छी तरह करें, उन आज्ञाओं के द्वारा उन्हें निराश न करें जिनका पालन वे नहीं कर सकते। अच्छे माता–पिता बाइबल की कहानियों का उपयोग कर अपने बच्चों को आज्ञा मानना सिखाएँगे। वे उन्हें प्रार्थना करना और प्रभु यीशु की आज्ञाओं को मानना सिखाएँगे। वे नियमित रूप से एक साथ प्रार्थना का समय नियुक्त करेंगे। 1 शमुएल 3 में अच्छे और बुरे बेटे की कहानी पढ़ें।

- जब शमुएल को लगा कि एली उसे बुला रहा है तब उसने कितने जल्दी उसकी आज्ञा मानी?

- अपने विद्रोही बेटों के साथ एली क्या करे ऐसा परमेश्वर चाहता था?

परमेश्वर ने पहले ही एली को चेतावनी दी थी कि वह अपने बच्चों को सुधारे। इस्राएल का महायाजक होने के नाते वह संपूर्ण राष्ट्र के सामने गलत आदर्श प्रस्तुत कर रहा था। उसके बेटे अपने पद का गलत उपयोग कर रहे थे, वे लोगों के भाग में से चुरा रहे थे और उनके साथ गलत बर्ताव कर रहे थे, परंतु एली ने उन्हें रोका नहीं। एली ने अपने दोनों बेटों को नहीं सुधारा इसलिए वे दोनों मर गए। दूसरी ओर, शमुएल के माता–पिता ने उसे तुरंत और आनंद के साथ आज्ञा मानना सिखाया। परमेश्वर ने उसे उसकी आज्ञाकारिता के लिए जीवनभर आशीष दी।

माता–पिता, अपने बच्चों को उनके बचपन ही में शिक्षा दें और उनको आत्मिक खतरों से बचाएँ। आप उनसे क्या करवाना चाहते हैं यह उन्हें समझाएँ और शमुएल के समान तुरंत आज्ञापालन की उनसे आशा रखें। यदि वे खुशी के साथ और तुरंत आपकी आज्ञा का पालन नहीं करते तो उन्हें सुधारें, उन्हें ताड़ना दें। बिलकुल छोटे बच्चों को तुरंत ताड़ना देने पर वे जल्दी सीखते हैं, जैसा कि नीतिवचन 13:24 में लिखा है।

बड़े बच्चे को उनके लिए महत्वपूर्ण वस्तु उनसे दूर हटा देने से आज्ञा मानना सीखते हैं। अपने बच्चों का आदर करें। उन पर चीखे या चिल्लाए नहीं या उन्हें बुरा नाम न दें। उन्हें क्रोध से सुधारने की कोशिश न करें या उन्हें चोट न पहुँचाएँ। इस बात का ध्यान रखें कि माता और पिता दोनो समान नियमों का पालन करें। अपने उदाहरण के द्वारा अपने बच्चों को सिखाएँ। उन्हें शराब पीना और नशाखोरी से दूर रहना सिखाएँ। उन्हें ऐसे मित्रों का चुनाव करना सिखाएँ जो उन्हें परीक्षाओं में नहीं डालेंगे। परिश्रम करना उन्हें सिखाएँ। हरेक काम इस तरह अच्छे ढंग से करना चाहिए मानो आप परमेश्वर के लिए उस काम को कर रहे हैं इस बात की उन्हें शिक्षा दें। अपने जीवन में परमेश्वर के वचन का उपयोग कैसे करना चाहिए यह उन्हें सिखाएँ।

बाइबल के परिवारों की कुछ कहानियाँ यहाँ बतायी गई हैं। बच्चों को यह

सिखाना आसान है।

- देखें कि उत्पत्ति 24 में परमेश्वर ने इसहाक के लिए किस तरह दुलहन खोज निकाली।
- देखें कि उत्पत्ति 29 में कि याकूब ने अपनी पत्नी राहेल से कितना प्रेम किया।
- प्रेरितों के काम 7:9–14 में देखें कि यूसुफ ने उन भाईयों को किस तरह क्षमा की जिन्होंने उसे गुलाम के रूप में बेच दिया था और परमेश्वर ने यूसुफ के कष्टों का उपयोग कर अकाल से किस तरह उसके पूरे परिवार को बचाया।

शिक्षार्थी पत्र नीचे रखता है। मूर्ख के जाने के बाद, शिक्षार्थी की पत्नी, जो कि अच्छी अध्यापिका है यह सुझाव देती है, "हम बच्चों की कहानी की सूची बनाएँ और हर सप्ताह नाटिका के रूप में उसे मण्डली के समान प्रस्तुत करें। मैं दूसरी दो स्त्रियों से जो कि अच्छी शिक्षिकाएँ हैं, और कल्पना लेना चाहूँगी। हम हर सप्ताह एक साथ तैयारी करेंगे। हम चाहते हैं कि पढ़ते समय बच्चे आदर और खुशी के साथ पढ़ें। मैं अपने बच्चों को भी बताऊँगी कि कल से उनके स्कूल जाने से पहले हम लोग परिवार के रूप में प्रार्थना करेंगे।"

प्रात्यक्षिक कार्य

- अपनी कलीसिया के परिवारों को परिवार में परमेश्वर के अधिकार की योजना के अनुसार चलना सिखाएँ।
- अपनी कलीसिया के परिवारों की परमेश्वर के वचन, गीत और एक साथ प्रार्थना का समय तय करने में सहायता करें।
- अपनी कलीसिया के माता–पिता को यह सिखाएँ कि वे अपने बच्चों में प्रेम के साथ कैसे सुधार लाएँ।
- बच्चों के लिए बाइबल की कहानियों को सुनने की और आराधना में भाग लेने की योजना बनाएँ।

दूसरों को सुसमाचार सुनाना

रविवार की आराधना के बाद, शिक्षार्थी का भाई उससे बात करने के लिए रुक जाता है। वह दुःख के साथ कहता है, "भाई, मैं लोगों को सुसमाचार सुनाने के लिए कहता हूँ, परंतु वे कहते हैं कि सुसमाचार कैसे सुनाना यह वे नहीं जानते। वे डरते हैं। जो कार्य करने की हम कोशिश करते हैं वह सफल नहीं होती। क्या हम उस पत्र को पढ़ें जिसमें उसने सुसमाचार के विषय में लिखा है।" वे पत्र पढ़ते हैं:

शिक्षार्थी को और उस कलीसिया को जो तुम्हारे घर में मिलती है, तुम्हें प्रभु यीशु की ओर से शान्ति मिले।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम अपने विश्वास के अनुसार चलोगे ताकि यह देख सको कि परमेश्वर हमें कितनी आशीष देता है। जब तुम यीशु के बारे में दूसरों से बातें करेंगे तब तुम्हें कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। दाऊद की कहानी तुम्हें धीरज देगी। 1 शमुएल 17:1—51 पढ़ें और तुम पाओगे कि किस तरह भय के दानव के साथ हमें लड़ना है:

- गड़रिए के रूप में काम करने के द्वारा दाऊद दानव के साथ लड़ने किस तरह तैयार हो सका?
- सिपाही के हथियार के बिना ही वह दानव को हरा सकता है ऐसा दाऊद क्यों समझता था?

अपने भेड़ों की सूधी लेते समय, दाऊद ने कठिन परिस्थिति में परमेश्वर पर भरोसा करना सीखा। उसने परमेश्वर की आराधना में और उसके वचन के अध्ययन में समय बिताया। इसके द्वारा उसने निर्भय होकर गोलियत का सामना करना सीखा। बाइबल के कई लोग परमेश्वर के गवाह रहे। दानिएल 3 में से अब हम आग में पड़े तीन लोगों की कहानी पढ़ें। उसमें आप निम्नलिखित बातों को पाएँगे:

- उन्होंने निर्भयता के साथ खतरों का सामना कैसे किया?
- परमेश्वर की महानता के विषय में उन्होंने राजा को कैसे समझाया?

प्रभावी रूप से कैसे सुसमाचार सुनाना चाहिए इसका बाइबल हमें उदाहरण देती है। यदि आप सावधानीपूर्वक प्रेरितों के काम 10 में दी गई कर्नेलियस की कहानी पढ़ेंगे, तो आपको सुसमाचार प्रचार के तीन भाग दिखायी देंगे। पहले, 1–33 वचनों में देखें कि किस तरह पतरस ने प्रभावी सुसमाचार की तैयारी की:

- जब लोग पतरस को खोजने के लिए योप्पा की ओर चल पड़े थे तब पतरस क्या कर रहा था?
- परमेश्वर ने पतरस को कैसे बताया कि लोगों के उसके समान बनने की राह देखने के बजाय उसे दूसरों के पास जाना है?
- पतरस के साथ कैसरिया को कौन गया?
- कर्नेलियस के अलावा पतरस ने और किसे उसका इन्जार करते हुए देखा?
- अपने सुसमाचार का सन्देश शुरू करने से पहले पतरस ने कर्नेलियस के प्रति अपने प्रेम को किस तरह जताया?

पतरस ने प्रार्थना के द्वारा सुसमाचार की तैयारी की। प्रार्थना के दौरान, परमेश्वर ने उसे दिखाया कि वह सब को ग्रहण करता है। लोग हमारे समान बने इसकी राह देखने के बजाय, पहले हम उनके पास सुसमाचार ले जाते हैं। पतरस ने अकेले जाने के बजाय अपने साथ दूसरे लोगों को भी लिया। कैसरिया को जाने के बाद, उसने देखा कि कर्नेलियस के मित्रों का और परिवारजनों का एक बड़ा समूह सुसमाचार सुनने के लिए उसकी राह देख रहा है। उसने यह कहकर अपना प्रेम जताया कि उन्होंने उसे क्यों बुलाया है और प्रचार करने से पहले उसने उनकी सुन ली। हमें भी दो या अधिक लोगों के साथ सुसमाचार सुनाने के लिए जाना चाहिए। हमें उनके प्रति सच्चा प्रेम दिखाना है। जब लोग कर्नेलियस के समान प्रतिक्रिया प्रगट करते हैं, तब हमें उनके मित्रों और परिवार तक सुसमाचार सुनाने में उनकी मदद करनी चाहिए।

अब 34–35 वचन में देखें। वहाँ सुसमाचार का दूसरा भाग दिया गया है। उसमें आप निम्नलिखित बातों को पाएँगे:

- पतरस ने खुद के विषय में क्या गवाही दी?

- पतरस ने प्रभु यीशु के बारे में कौनसी तीन बातें कही?
- प्रभु यीशु ने अपने पुन्रुत्थान की प्रतिक्रिया के रूप में चेलों को क्या करने की आज्ञा दी?
- पतरस ने यीशु के नाम में क्या प्रतिज्ञा की?

पतरस के समान हम अपने सन्देश में साधारण शब्दों में यह बताएँ कि परमेश्वर ने हमें किस तरह बदल दिया है और हमें उसके विषय में बताने के लिए भेजा है। हमें प्रभु यीशु की भलाई और सामर्थ, उसकी मृत्यु और उसके पुन्रुत्थान के विषय में बताना है। हमें प्रभु यीशु के नाम में पापों की क्षमा का आश्वासन देना है।

- 44–48 वचनों में पतरस ने जो आज्ञा दी, उसे सुसमाचार प्रचार के तीसरे भाग के रूप में पाएँ।
- परमेश्वर ने पतरस को कैसे बताया कि लोगों के उसके समान बनने की राह देखने के बजाय उसे दूसरों के पास जाना है?
- पतरस के सुनने वालों पर पवित्र आत्मा कब उतर आया?
- पवित्र आत्मा के कार्य की पुष्टी करने के लिए पतरस ने तुरंत क्या किया?

पतरस ने जब देखा कि लोगों ने उसके सन्देश पर विश्वास किया है तब उसने तुरंत उस समूह के लिए बपतिस्मे की आज्ञा दी। उसने इस बात को समझ लिया कि उन्होंने अपने पापों से पश्चाताप किया और क्षमा पाई है, क्योंकि पवित्र आत्मा उन पर आया था। उसने और किसी बात की राह न देखी, परंतु बपतिस्मा के द्वारा पवित्र आत्मा के कार्य की पुष्टी की। मत्ती 28:18–20 में दी गई चेले बनाने की प्रभु यीशु की आज्ञा का पतरस ने पालन किया। प्रभु यीशु में क्षमा कैसे प्राप्त करें यह उसने कर्नेलियस को और उसके मित्रों को बताया और जब उन्होंने उसकी बात स्वीकार की तब उसने उन्हें तुरंत बपतिस्मा दिया। हमें तुरंत और सरल रूप से पतरस के उदाहरण के अनुसार चलते हुए प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन करना है।

शिक्षार्थी और उसका भाई पत्र पढ़ना बंद करते हैं और बुद्धिमान के पत्र में बतायी गई बाइबल की कहानियों का ध्यान से अध्ययन करते हैं और प्रश्नों के उत्तर देते हैं। शिक्षार्थी का भाई कहता है, "इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि हम प्रभावी नहीं हैं! एक बात यह है कि हम लोगों के पास जाने के बजाय उनको हमारे पास लाने के लिए सुसमाचार की सभाओं पर निर्भर रहे। हरेक की विशेषकर हमारे समूह के नए लोगों की उनके अपने परिवार के लोगों से और मित्रों से बातचीत करने में सहायता करने के बजाय, हमने इन सभाओं के लिए दूसरी कलीसियाओं से प्रचारकों को बुलाया।"

शिक्षार्थी इस बात से सहमत होता है, "हाँ, इनमें से कुछ प्रचारकों ने बड़े बड़े शब्दों का और कठिन सन्देशों का उपयोग किया जिन्हें लोग नहीं समझ सकते। प्रभु यीशु को जो नहीं जानते ऐसे लोगों को अपनी ओर खींचने के बजाय उन्होंने दूसरी कलीसिया के मसीही लोगों को अपने पास खींच लिया। एक प्रचारक तो केवल दान पाना चाहता था! हम पतरस के समान सुसमाचार प्रचार करें। मैं हमारी मण्डली के नए भाई को आज रात पूछूँगा कि क्या हम उसके मित्र के साथ प्रभु यीशु के विषय में बातचीत करने के लिए जा सकते हैं।"

उन्होंने बाकी पत्र पढ़ाः

मेरे प्रिय मित्रो, कुछ लोग आपका इन्कार करेंगे। यदि कोई नहीं सुनता तो दूसरे के पास जाएँ, जैसे प्रभु यीशु हमें मत्ती 10:14 में बताता है। प्रेरितों के काम 6:54–7:60 में से स्तिफनुस की कहानी पढ़ें। इस कहानी में हम देखेंगे कि किस तरह उसके सन्देश का इन्कार हो जाने के बावजूद भी उसने परमेश्वर को महिमा प्रदान की। अपनी सामर्थ से नहीं, परंतु परमेश्वर की सामर्थ से बलवान हो जाओ।

प्रात्यक्षिक कार्य

- इस भाग की कहानियों का उपयोग कर प्रत्येक को अपने परिवारजनों के और मित्रों के पास सुसमाचार पहुँचाने के लिए प्रोत्साहन दें।

- अपनी कलीसिया के लोगों की सरल गवाहियाँ और प्रभु यीशु के जीवन, मृत्यु और पुन्रुत्थान का सन्देश तैयार करने में सहायता करें।
- जल्द से जल्द बपतिस्मा के द्वारा लोगों के पश्चाताप और प्रभु यीशु में विश्वास की पुष्टी करें।
- इस तरह मण्डली की योजना बनाएँ ताकि परिपक्व मसीही लोग नए मसीही विश्वासियों की उनके मित्रों और परिवारजनों का यीशु के बारे में बताने में सहायता कर सके।

बपतिस्मा के द्वारा नए विश्वासियों को कलीसिया में लाना

मूर्ख सोमवार की सुबह शिक्षार्थी के घर में जा पहुँचता है। एक लड़की शिक्षार्थी के पत्नी से भेंट करने आयी है। मूर्ख क्रोध से उस पर दोष लगाता है, "तुमने कल कैसे इस लड़की को बपतिस्मा दिया? उसके पास एक लावारिस बच्चा है और वह यह नहीं जानती कि उसका पिता कौन है!" शिक्षार्थी शांति से उत्तर देता है, "उसने वह पुराना जीवन अब छोड़ दिया है।" मूर्ख व्यक्ति चिल्लाता हुआ पाँव पटककर बाहर जाता है, "तुम उसे नहीं जानते। तुम्हें पता चलेगा। तुम्हें पछतावा होगा कि तुमने उसे बपतिस्मा दिया है।" लड़की रोने लगती है।

शिक्षार्थी की पत्नी उस जवान लड़की को सांत्वना देती है क्योंकि शिक्षार्थी ने अभी अभी बपतिस्मा के विषय में बुद्धिमान का पत्र पढ़ना खत्म किया है। वह यूहन्ना 8:1–11 से लड़की को उस स्त्री की कहानी बताती है जिसे लोग पत्थरवाह कर जान से मार डालना चाहते थे। उस कहानी को पढ़ें और आप उसमें निम्नलिखित बातों को पाएँगे।

- फरीसियों ने उस व्यभिचार स्त्री को यीशु के पास क्यों लाया था?
- ऐसी स्त्रियों के साथ क्या करना चाहिए ऐसी आज्ञा मूसा के व्यवस्था में दी गई है?
- फरीसियों ने इस पापी स्त्री के साथ जिसे मृत्यु की सजा दी गई थी, क्या सलूक किया?
- प्रभु यीशु ने उसके साथ क्या सलूक किया?
- पापियों को दोष लगाने का अधिकार किसे है?

शिक्षार्थी की पत्नी उस लड़की को आश्वासन देती है, "मेरी जवान मित्र, जब परमेश्वर ने तुम्हें पहले ही माफ किया है तो मैं कौन होती हूँ तुम्हें दोष लगाने वाली?

वह तुमसे प्रेम करता है! मूर्ख व्यक्ति ने तुम्हारे साथ फरीसियों के समान बर्ताव किया। उन्होंने स्त्री की परवाह नहीं की। उन्होंने केवल यीशु को छल में पकड़वाने के इरादे से उसे यीशु के पास लाया था। उन्होंने उसे सबके सामने खड़े किया और उसे लज्जित किया। प्रभु यीशु सिद्ध व्यक्ति था और उसे पत्थरवाह कर सकता था, फिर भी उसने उसे कभी दोष नहीं लगाया। उसने उसे मृत्यु से बचाया। उसने तुम्हें भी मृत्यु से बचाया है।"

"प्रभु यीशु के आने के पहले, परमेश्वर ने मूसा को अपनी व्यवस्था दी जिसमें बताया गया कि लोगों को कैसा जीवन बिताना है। व्यवस्था कहती थी कि मूर्तिपूजा न करें, हत्या न करें, चोरी न करना, झूठ न बोलना, या व्यभिचार न करना। हम व्यवस्था पुराने नियम में देखते हैं। इस व्यवस्था ने लोगों को बताया कि परमेश्वर पवित्र परमेश्वर है और वह पाप को सह नहीं सकता। जिन लोगों ने व्यवस्था तोड़ी, उन्हें मरना पड़ा। प्रभु यीशु ही एकमात्र परमेश्वर था जिसने व्यवस्था का पूर्ण रूप से पालन किया। जब उसकी मृत्यु हुई, उसने व्यवस्था की सामर्थ को तोड़ दिया जो हमें मृत्युदण्ड देती है।

हमने कल तुम्हें बपतिस्मा दिया क्योंकि जब तुमने प्रभु यीशु के नाम में पापों की क्षमा माँगी तब उसने तुम्हें मृत्यु से बचा लिया और एक नया जीवन तुम्हें दिया। उसने तुम्हें पवित्र आत्मा का वरदान दिया। हमने बपतिस्मे के द्वारा तुम्हारे विश्वास की और परमेश्वर के प्रतिज्ञा की पुष्टी की। जब तुम पानी में गए, तब तुम प्रभु यीशु के साथ व्यवस्था और तुम्हारे पाप के लिए मर गए। उसके बाद तुम उस नए जीवन के लिए जो प्रभु यीशु मसीह देता है, बाहर आए। प्रभु यीशु की पूर्ण क्षमा को स्मरण करो और पाप न करो।"

लड़की रोना बंद करती है, परंतु वह चिंतित है। " शायद बपतिस्मा लेने में मैंने जल्दबाजी की है। हो सकता है मैं पाप में गिर जाऊँ।" शिक्षार्थी की पत्नी यूहन्ना 3 में दी गई यीशु के बपतिस्मा की कहानी उसे याद दिलाती है। उस कहानी में आप निम्नलिखित बातें पाएँगे।

- क्या प्रभु यीशु का बपतिस्मा इसलिए हुआ था कि वह पापी था? या इसलिए कि वह सब पापियों के पक्ष का था?
- प्रभु यीशु का बपतिस्मा उसकी सेवकाई का आरंभ होने से पहले हुआ या सेवकाई आरम्भ होने के बाद हुआ?

लड़की कहती है, "प्रभु यीशु पापी नहीं था। उसने सबको यह दिखा दिया कि वह मेरे जैसे और उस व्यभिचारी स्त्री जैसे लोगों को दोष लगाने नहीं आया, वह मूर्ख के समान नहीं था। वह हमारी ओर से होने के लिए आया। उसके बपतिस्मा का यही अर्थ है। वह परमेश्वर का सन्देशवाहक है यह साबित करने से पहले उसने बपतिस्मा लिया। इसलिए मैं प्रभु यीशु के समान अब सेवा करना शुरू कर सकती हूँ।"

शिक्षार्थी की पत्नी उससे सहमती जताती हुई कहती है, "हाँ, यह ठीक है। अब उन सेवकों की कहानी पढ़ो जो देर से आए। यह कहानी मत्ती 20:1–16 में दी गई है। आप देखेंगे कि परमेश्वर हमें काम देता है जिन्हें हमें जल्द से जल्द पूरा करना है।" इस कहानी को पढ़ें। इसमें आप पाएँगे,

- समय खत्म होने के बाद भी मालिक ने मजदूरों से क्या करने कहा?
- मालिक ने पहले मजदूरों को कैसे अप्रसन्न किया?

लड़की खुशी से हँसती है। "मुझे मण्डली के दूसरे सदस्यों के समान ही अधिकार प्राप्त हैं। परमेश्वर मुझे तुरंत अपनी कलीसिया में काम देगा। मैं अपने संपूर्ण हृदय से उसकी सेवा करके उसके प्रति अपना प्रेम जताना चाहती हूँ। क्या मैं आपके घर के काम में आपकी सहायता कर सकती हूँ ताकि आप बच्चों के लिए बाइबल की कहानियाँ तैयार कर सको।"

शिक्षार्थी लड़की की बातें आश्चर्य से सुनता है। वह यह समझ नहीं पा रहा था कि नए विश्वासी कितनी जल्द परमेश्वर की सेवा कर सकते हैं। नए विश्वासी किस तरह कलीसिया में काम पाते हैं यह देखने के लिए शिक्षार्थी बुद्धिमान का पत्र पढ़ता है। वह पढ़ता है कि किस तरह पवित्र आत्मा कलीसिया में प्रत्येक व्यक्ति को काम सौंपता है।

"मेरे मित्र शिक्षार्थी, मैं चाहता हूँ कि तुम जानो कि पवित्र आत्मा हमारे जीवन में तीन काम करता है। इफिसियो 1:10–12 में कहा गया है कि पवित्र आत्मा हम पर लगी मुहर के समान है जो इस प्रतिज्ञा की हमी देता है कि परमेश्वर हमें बचाएगा। पवित्र आत्मा हमें प्रभु यीशु से जोड़ देता है ताकि यद्यपि हमारा शरीर पाप में मरा हुआ है, फिर भी हम प्रभु यीशु में जीवित हैं। वह हमारे मन में यह इच्छा उत्पन्न करता है कि हम प्रभु यीशु के लिए जीए। दूसरी बात यह है कि वह हममें फल उत्पन्न करता है। गलतियों 5:16–26 में निम्नलिखित बातें देखें।

- जब हम प्रभु यीशु के पास आते हैं तब हम क्या करना छोड़ देते हैं?
- पवित्र आत्मा हममें कौनसे नौ गुणों या फलों को उत्पन्न करता है?

यद्यपि जब हम प्रभु यीशु के पास आते हैं तब परमेश्वर हमें पूरी तरह से माफ करता है, और हम उसे प्रसन्न करना चाहते हैं, फिर भी रोमियों 8:1–17 में बताया गया है कि हमें एक तरह का आंतरिक संघर्ष करना पड़ता है। हम जो उचित है वही करना चाहते हैं, परंतु फिर भी हम पाप में पड़ जाते हैं। जब तक हम मर नहीं जाते तब तक हम परमेश्वर के पीछे चलने के लिए संघर्ष करते रहेंगे। पवित्र आत्मा हमें सामर्थ देता है और अपने गुणों को हममें मजबूत बनाता है। यह एकदम से नहीं होता। जब हम विश्वास से परमेश्वर के प्रति अपनी प्रतिक्रिया प्रगट करते हैं, तब हम प्रभु यीशु की समानता में कैसे बदलते जाना है यह सीखते हैं। हम उस समय की बाट जोहते हैं जब हम पापरहीत जीवन के लिए जिलाए जाएँगे।

तीसरी बात यह है कि पवित्र आत्मा हममें से प्रत्येक को आत्मिक वरदान देता है। आत्मिक वरदान कलीसिया में काम करने के लिए दी गई एक विशेष योग्यता है। ये वरदान हमारी अपनी सेवा के लिए नहीं हैं, परंतु संपूर्ण कलीसिया की उन्नति के लिए हैं। अच्छे अगुवे मण्डली में प्रत्येक की सहायता करते हैं कि वे संपूर्ण कलीसिया की सेवा के लिए अपने वरदानों का उपयोग कर सके।

शिक्षार्थी, मैंने देखा है कि तुम नहेम्याह के समान प्रशासक हो। तुम्हारी पत्नी एज्रा के समान शिक्षिका है। तुम्हारा भाई इफिसियों के प्राचीनों के समान एक

पासबान है। दूसरे लोग तुम्हारी कलीसिया में अक्विल्ला और प्रिस्किल्ला के समान अच्छे सहायक हैं। यहाँ बाइबल के वरदानों के कुछ अच्छे उदाहरण दिए गए हैं और यह कि लोग उनका कैसे उपयोग करते हैं। कलीसिया में उनका काम खोजने के लिए प्रत्येक को प्रोत्साहन दें।

रोमियों 12:3–8 में दी गई वरदानों की सूची

- [ ] 1 शमुएल 1:20–28 के शमुएल के समान सेवा करें।
- [ ] यूहन्ना 1:26–34 के यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के समान भविष्यद्वाणी करें।
- [ ] 1 शमुएल 25 की अबीगईल के समान दें।
- [ ] नहेम्याह 8 के एज्रा के समान सिखाएँ।
- [ ] प्रेरितों के काम 20:17–38 में जिस तरह पौलुस ने इफिसियों के प्राचीनों को प्रोत्साहन दिया वैसे प्रोत्साहन दें।
- [ ] निर्गमन 18:13–26 के मूसा के समान अगुवाई करें।
- [ ] 1 शमुएल 24 के दाऊद के समान दया दिखाएँ।

1 कुरिन्थियों 12:4–11 में दी गई अन्य वरदानों की सूची

- [ ] 1 राजा 3:5–28 के सुलैमान के समान बुद्धि से परामर्श दें।
- [ ] प्रेरितों के काम 17:10–12 के बेरियन्स् के समान ज्ञान पर आधारित निर्णय लें।
- [ ] प्रेरितों के काम 18:1–5, 24–28 के अक्विल्ला और प्रिस्किल्ला के समान सहायता करें।
- [ ] प्रेरितों के काम 13:14 के पौलुस और बरनबास के समान प्रेरित बनकर जाएँ।
- [ ] 2 शमुएल 11:12 के नाथान के समान परखें।

[ ] मरकुस 2:1–12 के अनुसार प्रभु यीशु के समान चंगाई करें।

[ ] नहेम्याह 2 और 3 के नहेम्याह के समान प्रशासन रखें।

[ ] 1 राजा 18:16–46 के एलिय्याह के समान आश्चर्यकर्म करें।

[ ] प्रेरितों के काम 10:44–48 में जिस तरह कर्नेलियस के घराने ने अन्य भाषा बोली उस तरह अन्य भाषा में बोलें।

[ ] 1 कुरिन्थियों 14:26–28 के कुरिन्थियों के समान अन्य भाषा का अनुवाद करें।

[ ] मत्ती 8:1–13 के कोढ़ी और सूबेदार के समान विश्वास में प्रेरित हों।

इफिसियों 4:11–16 में दी गई अन्य वरदानों की सूची

[ ] प्रेरितों के काम 8:26–40 के फिलिप्पुस के समान प्रचारक के रूप में सुसमाचार की घोषणा करें।

[ ] प्रेरितों के काम 20:28–34 के इफिशियन प्राचीनों के समान पासबानी और चरवाहे की सेवा करें।

शिक्षार्थी वरदानों की सूची और बाइबल से उनका उपयोग करने के उदाहरणों को देखता है। वह इस बात को जान लेता है कि लड़की के पास दूसरों की सेवा करने के शमुएल के वरदान पाए जाते हैं। जिस तरह शमुएल ने स्वेच्छा से परमेश्वर के मंदिर की देखभाल की, उसी तरह वह लड़की हमेशा उसकी पत्नी की घर के काम में सहायता करती है। वह उसे शमुएल के वरदान के विषय बताता है, और वह लड़की काम करते हुए खुशी से मुस्कराती है।

शिक्षार्थी अपने वरदानों के विषय में भी सोचता है। वह नहेम्याह की कहानी का अध्ययन करता है और देखता है कि किस तरह इस अगुवे ने अपने लोगों को उस कार्य को पूरा करने के लिए तैयार किया जो कि शायद ही संभव था। इस कहानी में, यहूदी लोगों ने परमेश्वर को त्याग दिया था। उसने उन्हें शत्रुओं से हरा दिया। उनकी राजधानी यरूशलेम का नाश हो गया था और उन्हें विदेश ले जाया गया। और जैसी

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी उसके अनुसार वे घर लौटे, परंतु उन्होंने यरूशलेम की दीवारों को फिर नहीं बनाया। ये दीवारें सैंकड़ो वर्षों तक विनाश की दशा में पड़ी रही। नहेम्याह ने इस विषय में सुना और वह सहायता करने गया। इस पुस्तक का अध्ययन करें और आपको उत्तम अगुवों के गुणों के विषय जानकारी प्राप्त होगी।

नहेम्याह 1:11 देखें और आप उसमें निम्नलिखित बातों को पाएँगे:

- नहेम्याह को उस विपत्ति के विषय में कैसे लगा जिसमें उसके लोग फँसे थे?
- नहेम्याह ने अपने और अपने लोगों के पापों के विषय में क्या प्रार्थना की?

अध्याय 2 में आप निम्नलिखित बातें पाएँगे:

नहेम्याह राजा के लिए प्रार्थना कर रहा था उस समय परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना का उत्तर कैसे दिया?

- अपनी योजना के विषय किसी के साथ बोलने से पहले नहेम्याह ने यरूशलेम में क्या किया?
- दीवार के बनाने का काम लोग आरंभ करें इस दृष्टि से नहेम्याह ने क्या किया?

अध्याय 3 में देखें। आप उसमें निम्नलिखित बातें पाएँगे:

- नहेम्याह ने लोगों को कैसे इकट्ठा किया?

अध्याय 4 में देखें। आप उसमें निम्नलिखित बातें पाएँगे:

- उन्हें विरोध का किस तरह सामना करना पड़ा?
- इस विजय पर विरोध पाने के लिए नहेम्याह ने लोगों को कैसे तैयार किया?
- नहेम्याह ने लोगों के सामने किस तरह का आदर्श रखा?

अध्याय 6:15–17 में आप निम्नलिखित बातें पाएँगे:

- लोगों ने कितने दिनों में दीवार तैयार की?
- परमेश्वर ने उन्हें किस तरह आशीष दी?
- 8:1–6 और 9:3 में देखें। यहाँ आप निम्नलिखित बातें पाएँगे:
- लोगों के जीवन में बड़ी बेदारी लाने के लिए नहेम्याह को परमेश्वर ने कैसे उपयोग किया?

शिक्षार्थी को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि 100 वर्ष तक उजड़ी हुई दशा में रहने के बाद लोगों ने 52 दिनों में दीवार को बना दिया। वह नेहेम्याह के समान अगुवा बनना चाहता है। वह अपनी कलीसिया की और अपने देश की समस्याओं की चिन्ता करता था। जब उसने अपनी मण्ड़ली के लिए और अपने देश के अगुवों के लिए प्रार्थना की तब उसने खुद के लिए और उनके लिए क्षमा माँगी। जिन समस्याओं को उसने देखा उनके विषय में उसने लोगों से ईमानदारी के साथ बातें की और उनको दूर करने के लिए सावधानीपूर्वक योजना बनाई। शिक्षार्थी ने नेहेम्याह का उदाहरण अपनाया और विरोध के बावजूद लोगों को प्रभु में बने रहने के लिए प्रेरित किया। प्रत्येक ने पूरे समुह के लिए अपने वरदानों को उपयोग में लाया।

प्रात्यक्षिक कार्य

- जितना जल्द संभव हो सके, उतने जल्द प्रभु यीशु के पास क्षमा पाने हेतु आने वाले लोगों को बपतिस्मा देने की योजना बनाएँ और उनका कलीसियाई जीवन में स्वागत करें।

कलीसिया की उन्नति के लिए अपने वरदानों का उपयोग करने में कलीसिया के प्रत्येक व्यक्ति की, नए मसीही, बच्चों की भी सहायता करने के लिए इस भाग में दी गई आत्मिक वरदानों की और बाइबल के मॉडल्स की सूची का उपयोग करें। नम्रता के साथ अगुवाई करें, नहेम्याह के समान पहले अपने पापों को परमेश्वर के पास कबूल करें और परमेश्वर के लिए महान कार्य करने के लिए अपनी कलीसिया को प्रेरित करने

और तैयार करने हेतु परमेश्वर अपनी बुद्धि प्रदान करें ऐसी प्रार्थना करें। बीमार, जरूरतमंद और पीडितों की सूधी लेना। शिक्षार्थी की कलीसिया में अधिकतर लोग बहुत गरीब हैं। उसकी कलीसिया में दो विधवाएँ हैं और एक स्त्री है जिसका पति विश्वासी होने के कारण कैद में है। शिक्षार्थी नियमित रूप से इनके लिए भोजन ले जाता है। एक दिन वह स्त्री जिसका पति कैद में है, शिक्षार्थी से कहती है, "भाई, क्या आप मेरे साथ वकील को ढूंढने शहर चलोगे?" शिक्षार्थी जान लेता है कि तीनों बहनों को उससे अधिक सहायता की जरूरत है जितनी वह दे रहा है। दोनों विधवाओं का घर दुरुस्त करना है और एक के साथ शहर जाना है। मूर्ख व्यक्ति शिकायत करता है, "शिक्षार्थी, तुम अपने कर्तव्य को पूरा नहीं कर रहे?"

शिक्षार्थी जरूरतमंदों की बहुत सूधी लेता है। वह मत्ती 24:31–46 में दी गई भेड़ और बकरियों की कहानी याद करता है। इस कहानी को पढ़ें और आप उसमें निम्नलिखित बातें पाएँगे:

- जब हम जरूरतमंदों की सहायता करते हैं तब हम किसकी सेवा करते हैं?
- जो जरूरतमंदों की सहायता नहीं करते उनका क्या होता है?

प्रभु यीशु ने कहा कि जो गरीब हैं, भूखे हैं, और शोकित हैं, जिन्हें बेगुनाह होते हुए भी दुःख उठाना पड़ता है उन्हें विशेष आशीष मिलेगी। जब हम इनकी सेवा करते हैं तब हम परमेश्वर की सेवा करते हैं। जब हम इन्हें नजरअन्दाज करते हैं तब हम परमेश्वर का इन्कार करते हैं।

शिक्षार्थी यह भी याद करता है कि किस तरह निर्गमन की पुस्तक में यह लिखा है कि कैसे परमेश्वर ने अपने लोगों की इस्राएलियों की सूधी ली। कई वर्ष मिस्र की गुलामी में रहने के बाद, परमेश्वर ने उनके पास अपने भविष्यद्वक्ता मूसा को भेजा। मूसा ने मिस्र के राजा फिरौन को बताया कि परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग स्वतंत्र हो। उनके इन्कार करने पर परमेश्वर ने मिस्र देश पर सात पीड़ाओं को भेजा। अन्त में परमेश्वर ने मृत्यु के दूत को भेजकर उनके बड़े बेटों को मार डाला। मूसा ने इस्राएलियों को चेतावनी दी की मेम्ने को मारे और अपने घर के दरवाजे की चौखट पर उसका लहू लगाए ताकि मृत्यु का दूत उन्हें हानि न पहुँचा सके। खुद फिरौन का

बेटा भी मर गया। अन्त में उसने इस्राएलियों को जाने की अनुमति दी।

लोग मिस्र देश से बाहर निकलकर लाल समुद्र तक जाकर रुक गए। उन्हें जाने के लिए मार्ग नहीं था। फिरौन का मन बदल गया और उसने अपनी सेना को उनके पीछे भेजा। परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए लाल समुद्र में सूखा मार्ग निकाला, और जब मिस्र की सेना ने जाना चाहा तब समुद्र की लहरे उन पर उमड़ पड़ी। उसके बाद अपनी जन्मभूमि पर वापस लौटने तक इस्राएलियों ने चालीस वर्ष जंगल में बिताए। जंगल में उनके पास खाने के लिए कुछ भी न था, कभी कभी तो पानी भी नहीं मिल पाता। परंतु परमेश्वर ने उन्हें वे सारी बातें दी जिसकी उन्हें जरूरत थी। निर्गमन 16:11–35 से मान्ना की कहानी पढ़े और उसमें आप निम्नलिखित बातें पाएँगे।

- परमेश्वर ने अपने लोगों को कैसे खिलाया?
- क्या मान्ना के कारण लोगों ने परमेश्वर के विरोध में कुड़कुड़ाना और उसकी आज्ञा तोड़ना बंद किया?
- उसी तरह, प्रभु यीशु ने भी जरूरतमंदो की देखभाल की। यूहन्ना 6 में यीशु अपनी देह भोजन के रूप में देता है।

यह कहानी पढ़ें:

वचन 2–13 में प्रभु यीशु ने बीमार और भूखे लोगों की कैसे सूधी ली?

वचन 14–27 में लोग प्रभु यीशु से कौनसी दो बातों चाहते थे?

वचन 17–29 में, प्रभु यीशु ने कैसे दिखाया की वह प्रकृति का राजा है?

वचन 27–40, में स्वर्ग की रोटी कौन है और हम इस रोटी को कैसे पा सकते हैं?

वचन 41–69 में, हमें अनंत काल का जीवन देनेवाली रोटी हम कैसे पा सकते हैं?

यीशु ने कई बीमारों को चंगा किया, और उसके सुननेवाले खुद भोजन का प्रबंध न कर सके तो उसने उन्हें रोटी खिलायी। लोग चाहते थे कि वह राजा बने और उन्हें

मुफ्त भोजन खिलाए। प्रभु यीशु ने यह आसानी से किया होता, क्योंकि वह सबका सच्चा राजा है। वह पानी पर भी चल सकता था। प्रभु यीशु जानता था कि शारीरिक भोजन उनके हृदय को बदल सकता है। वे फिर भी परमेश्वर से दूर ही रहते। प्रभु यीशु चाहता था कि उन्हें ऐसा भोजन दे जो उन्हें हमेशा सन्तुष्टि देता। यह भोजन स्वयं यीशु है। प्रभु यीशु चाहता है कि प्रत्येक व्यक्ति उसपर विश्वास करे और उससे अनंत जीवन पाए। जब हम कलीसिया के अंग बन जाते है, तब वह हमें यह जीवन देता है।

शिक्षार्थी बुद्धिमान को पत्र लिखने का निर्णय लेता है। वह पूछता है, "कलीसिया के अपने सिखाने और अगुवाई करने के वरदान को नजरअन्दाज न करते हुए मैं जरूरतमंदो की सुधी कैसे ले सकता हूँ?" बुद्धिमान उसका उत्तर लिखता है;

> शिक्षार्थी और उसके घर में इकट्ठा होने वाली मण्ड़ली से परमेश्वर अपनी इच्छा जान लेने के लिए तुम्हें जरूरतमंदों को नजरअन्दाज न करते हुए सिखाने और अगुवाई करने के वरदान को चमकाना है। यरूशलेम की प्रारंभिक कलीसिया के अगुवों को भी इसी समस्या का सामना करना पड़ा। उन्हें सुसमाचार सुनाने के साथ साथ कई विधवाओं की सूधी लेनी थी जो उनकी कलीसिया में थी। पहली कलीसिया के डिकन्स की कहानी पढ़ें जो प्रेरितों के काम 6 और 7:54–60 में पायी जाती हैं।
>
> - विदेशी विधवाओं को नज़रअंदाज न किया जा सके इसलिए प्रेरितों ने क्या किया?
> - जरूरतमंदों की सेवा करने के लिए प्रेरितों ने लोगों को कैसे नियुक्त किया?
> - स्तिफनुस किस प्रकार का व्यक्ति था?
>
> प्रेरितों ने जान लिया कि वे अपनी शिक्षा देने की और यरूशलेम की कलीसिया की अगुवाई करना नहीं छोड़ सकते। इसलिए उन्होंने लोगों से कहा कि वे सात सुनाम, बुद्धिमान और पवित्र आत्मा से भरे हुए पुरुषों को चुने। प्रेरितों ने इन लोगों के लिए प्रार्थना की और उन पर हाथ रखे। जरूरतमंदों की इस तरह देखभाल करनेवाले सेवकों को डिकन्स कहा जाता था। डिकन्स परमेश्वर के लोगों के

सेवक थे। स्तिफनुस भी एक डिकन था जिसने पवित्र आत्मा की सामर्थ से भरकर यहूदी लोगों को एक बहुत अच्छा सन्देश सुनाया। उसका चेहेरा चमक उठा और उसने यीशु को स्वर्ग में पिता के दाहिने हाथ पर बैठे देखा। उन्होंने उसे पत्थरवाह कर मार डाला।

पौलुस ने अपने चेले तीमुथियुस को बताया कि डिकन्स को अच्छे माता–पिता और अच्छे जीवनसाथी होना चाहिए। वे परिपक्व मसीही हो, उनका अच्छा नाम हो, वे पैसे के लोभी न हो, न नशे के आदि हो। जरूरतमंदों की सेवा करनेवाली दो स्त्रियाँ थी जिनका नाम था दुर्कस, जो गरीबों के लिए कपड़े सिलती थी, और लुदिया जिसने पौलुस के मिशनरी दल को रहने के लिए स्थान दिया था। याकूब की पत्री 5:13–17 में देखें कि किस तरह डिकन्स बीमारों की सेवा करते थे।

शिक्षार्थी चैन की साँस लेता है। मण्डली के जरूरतमंदों की सहायता होती रहे इस बात का ध्यान रखते हुए कलीसिया में अपना सिखाना जारी किस तरह रखा जा सकता है इस बात को अब वह समझ लेता है। प्रारंभिक कलीसिया के समान डिकन्स को नियुक्त करने के लिए वह कलीसिया की सभा बुलाता है। मण्डली एक पुरुष को और उसकी पत्नी को चुन लेती है। वे उस पर हाथ रखते हैं और प्रार्थना करते हैं कि जरूरतमंदों की सेवा करते समय परमेश्वर उसे स्तिफनुस के समान बुद्धि प्रदान करे।

प्रात्यक्षिक कार्य

- अपने मण्डली और समाज के लोगों की सूची बनाएँ जिन्हें आपकी सहायता की जरूरत है।
- जरूरतमंदों की सहायता करने का वरदान किसे है इस विषय में अपनी कलीसिया के साथ प्रार्थना करें।
- पौलुस ने प्रार्थना करने और हाथ रखने के लिए जिन योग्यताओं को प्रस्तुत किया है उनके अनुसार चलनेवाले डिकन्स की नियुक्ति करें।

मण्डली में और मण्डली के बीच सहभागिता को बढ़ावा देना

दूसरे दिन जब शिक्षार्थी काम से घर लौटता है तब मण्डली के कुछ लोग उसकी बाट जोहते रहते हैं। वे अभी शहर से किसी विख्यात प्रचारक सन्देश सुनकर लौटे हैं। आनेवाली सभा के लिए वे शिक्षार्थी को और मूर्ख को आमंत्रित करते हैं। मूर्ख बाद में शिकायत करता है, "शिक्षार्थी, हम सब गलत कर रहे हैं। हमें इस प्रचारक के समान सुसमाचार सुनाना है। वह वास्तव में कैसा प्रचार करना चाहिए यह जानता है! इस मनुष्य की शिक्षा के पीछे चलने वाला एक नया समूह हम आरंभ करनेवाले हैं!"

शिक्षार्थी इस बात से नाराज़ होता है और जब यह बात कलीसिया में फैल जाती है तब मण्डली में फूट पड़ जाती है। फिर बुद्धिमान का एक पत्र आता है।

प्रभु यीशु से प्रेम करने वाले प्रत्येक के साथ तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिले।

जिस तरह पौलुस ने कुरिन्थियों की पहली पत्री में किया, मैं भी तुम्हें प्रभु यीशु के नाम में बिनती करता हूँ कि तुम एकदूसरे के साथ विवाद करना बंद कर दो। सच्चे मेल के साथ रहो ताकि तुम में विभाजन और फूट न हो। मैं तुमसे बिनती करता हूँ कि तुम एकचित्त, और विचार और उद्देश्य में एक हो। तुमने बालकों के से विश्वास और प्रेम के साथ प्रभु यीशु की आज्ञाओं को मानना सीखा। अब आपस का विवाद बंद कर दो।

शिक्षार्थी के परिवार ने मुझे बताया है कि तुममें से कुछ कहते हैं, "मैं बुद्धिमान के पीछे चलता हूँ," दूसरे कहते हैं, "मैं शहर के प्रचारक के पीछे चलता हूँ।" और दूसरे कहते हैं, "मैं मसीह के पीछे चलता हूँ।" क्या मसीह टूकड़ों में विभाजित है? क्या मैं बुद्धिमान तुम्हारे लिए क्रूस पर चढ़ा? यह विचार घमण्ड से आता है। जब मैं पहले तुम्हारे पास आया, तब मैंने बड़े बड़े शब्दों का और अद्‌भुत कल्पनाओं का उपयोग नहीं किया। मैंने प्रभु यीशु पर और उसकी क्रूस की मृत्यु पर अपना ध्यान लगाया। मेरा सन्देश और प्रचार स्पष्ट था, परंतु पवित्र आत्मा ने उसका उपयोग किया। हम संसार की बुद्धि का उपयोग नहीं करते। याद करो कि तुममें से कई

लोग संसार के लोगों की दृष्टि से बुद्धिमान या सामर्थी नहीं थे, परंतु फिर भी परमेश्वर ने अपनी सामर्थ से तुम्हारे जीवनों में अद्‌भुत काम किए।

क्या तुम जानते हो कि तुम सब मिलकर परमेश्वर का मन्दिर हो और परमेश्वर का आत्मा तुममें वास करता है? किसी एक अगुवे के पीछे चलने के विषय में घमण्ड न करो। हम सब केवल मसीह के सेवक हैं जिसने प्रत्येक को अपनी मण्डली में एक काम सौंपा है। एक बीज बोता है, दूसरा उसे पानी डालता है, परंतु बीज को परमेश्वर बढ़ाता है। तुम परमेश्वर की बारी हो, उसका भवन हो, हमारा नहीं। तुम्हारे बीच में यह फूट घमण्ड के कारण आती है। उत्पत्ति 11:1–9 में देखो कि कैसे मनुष्य के घमण्ड और मूर्खता ने संसार को कैसे विभाजित किया।

- लोगों ने किसकी महानता में विश्वास किया?
- परमेश्वर ने इस घमण्ड से भरे विद्रोह को बंद करने के लिए क्या किया?

लोग हजारों वर्षों से विभिन्न देशों और भाषाओं में विभाजित हैं। अब परमेश्वर अपनी महानता के अनुसार उन्हें फिर मसीह में इकट्ठा कर रहा है, जैसी कि उसने आरंभ ही में योजना बनाई थी। जब प्रभु यीशु ने हमारे लिए यूहन्ना 17 में प्रार्थना की तब उसने परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह हमें एक बनाए, जैसा कि वह और पिता एक हैं। यीशु की प्रार्थना का उत्तर कलीसिया है, क्योंकि वहाँ पर एक देह हैं और यीशु प्रभु हमारा सिर है। हम उसके समान बर्ताव न करते हो, परंतु इससे वह सत्य बदल नहीं जाता कि हम पवित्र आत्मा द्वारा जोड़े गए हैं।

बुद्धिमान का पत्र पढ़ने के बाद, शिक्षार्थी कलीसिया के विभाजन के विषय में जान लेने के लिए 1 कुरिन्थियों पढ़ता है और वह 13 वे अध्याय तक आ पहुँचता है, जो कि प्रेम का अध्याय है। इस अध्याय में आप निम्नलिखित बातें पाएँगे:

- यदि हम अपने वरदानों का उपयोग प्रेम के साथ नहीं करते तो उनका क्या मूल्य है?
- प्रेम क्या है?

- प्रेम क्या नहीं है?
- प्रेम क्या करता है?
- प्रेम क्या नहीं करता?

शिक्षार्थी इस बात को जान लेता है कि यदि हम अपने वरदानों को प्रेम के साथ उपयोग न करते हुए घमण्ड के साथ उपयोग करते हैं, तब ये वरदान व्यर्थ हो जाते हैं। परमेश्वर हमारे मन में प्रेम उण्डेलता है, और चाहता है कि हम दूसरों के हितों की परवाह करें। वह उन्हें क्षमा करने की सामर्थ देता है। हम जो महसूस करते हैं वह प्रेम नहीं है, हम जो करते हैं वह प्रेम है। हमें महसूस हो या न हो, हम विश्वास से लोगों के साथ बर्ताव करते हैं। प्रेम करने के हमारे निश्चय के साथ कभी कभी हमारी भावनाएँ मेल नहीं खाती। वह विचार करता है कि उसका समूह कलीसिया में विभाजन ला रहा है। उनके विरोध में अपने क्रोध के लिए वह परमेश्वर से माफी माँगता है और उनसे प्रेम करने के लिए वह धीरज माँगता है।

मूर्ख उसे मिलने आता है और बिना अभिवादन के ही बोल उठता है, "आप कुछ लोगों को अपने अधिकार को दबाने की अनुमति दे रहे हैं। आपको उन्हें कलीसिया से खदेड़कर बाहर निकालना चाहिए। एक सभा बुलाओ और उन्हें बता दो कि आप उनके विषय में क्या सोचते हैं। वे आपकी परम्पराओं को बदल रहे हैं।

कलीसिया में भेदों को कैसे सुलझाएँ

शिक्षार्थी यह जानना चाहता है कि कलीसिया में मतभेदों को कैसे सुलझाएँ। वह 1 राजा 12:1–19 में दी गई विभाजित राज्य की कहानी याद करता है। राजा दाऊद ने परमेश्वर से सच्चे मन से प्रेम किया था, और परमेश्वर ने उसके साथ प्रतिज्ञा की थी कि उसकी संतान सदा के लिए राज्य करेगी। उसका बेटा सुलैमान परमेश्वर से इस्राएल पर राज्य करने के लिए बुद्धि माँगता है, उसने यरूशलेम में परमेश्वर का मंदिर भी बनवाया। परंतु सुलैमान का बेटा रहोबाम अपने पिता और दादा के समान परमेश्वर की और उसके लोगों की परवाह नहीं करता। उसने गलत परामर्श लिया और एक सभा में ऐसा निर्णय लिया जिससे इस्राएल के राज्य में फूट पड़ी। इस कहानी में आप निम्नलिखित बातें पाएँगे:

- रहोबाम ने कौनसे सलाहकारों की सुनी?
- रहोबाम हमारी समस्याओं के विषय में परवाह नहीं करता यह जानने के बाद लोगों की क्या प्रतिक्रिया रही?

शिक्षार्थी जान लेता है कि उसे बड़ी सावधानी के साथ इस समस्या को सुलझाना चाहिए। विवाद को सुलझाने वाली दो मण्डलियो की कहानी का वह अध्ययन करता है। यह कहानी प्रेरितों के काम के पंद्रहवे वे अध्याय में पाई जाती है। यहाँ बताया गया है कि पौलुस और अन्य प्रेरितों ने किस तरह कलीसिया में फूट डालने वाली समस्या को सुलझाया। उन्होंने मतभेदों को कैसे सुलझाया यह प्रेरितों के काम के अध्याय में पढ़ें:

- कलीसिया के अगुवों ने किस तरह प्रत्येक को विवाद में अपना पक्ष रखने का अवसर दिया?
- जो फरीसी उसके विचारों से मतभेद रखते थे उनके प्रति पतरस ने कैसे आदर बताया?
- याकूब ने मतभेद का उत्तर कैसे खोज निकाला?
- वे एक ही निर्णय तक कैसे पहुँच सके?
- क्या यहूदी मसीही लोगों ने अन्यजाति विश्वासियों को अपनी प्रथाओं का पालन करने की जबरदस्ती की?
- पौलुस और सिलास ने किस तरह अपनी सेवकाई अलग होकर पूरी करने का निर्णय लिया?

शिक्षार्थी इस अध्याय में पाता है कि प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर की समान रूप से सेवा नहीं करता। कलीसिया में एकता का अर्थ यह नहीं है कि प्रत्येक के पास समान आत्मिक वरदान, समान विचार या समान प्रथा हो। जिन बातों को करने की आज्ञा हम लोगों को देते हैं वे प्रभु यीशु की और उसके प्रेरितों की आज्ञाएँ हैं। फरीसी दूसरी आज्ञाओं पर बल देते थे मानो उन्हें भी वही अधिकार था। पतरस और याकूब ने बिना किसी आलोचना के उन्हें वचन में से पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा यह समझाया कि अन्य जाति यहूदी प्रथाओं से मुक्त हैं।

अगुवे होने के नाते, पतरस और याकूब ने पहले उनकी बातें सुन ली, और फिर प्रेम के साथ सच्चाई उन्हें समझायी। फरीसीयों ने उनकी बात मान ली और उनके अधीन हो गए और एक स्वर में निर्णय लिया। पौलुस और बरनबास ने इस बात को समझाया कि किस तरह परमेश्वर अन्यजातियों पर यहूदी प्रथा का पालन करने की जबरदस्ती न करते हुए उन्हें कलीसिया में स्वीकार करता है। बाद में, सेवकाई किस तरह की जानी चाहिए इस विषय को लेकर उनमें मतभेद हुआ, और दोनों अपने वरदानों की भिन्न तरह से उपयोग करने लगे। अपने मतभेदों को उन्होंने गुप्त में सुलझाया, उसका बतंगड़ नहीं बनाया, और न ही एकदूसरे की आलोचना की। अलग अलग अपना सेवाकार्य करने से सहमत हो गए। परमेश्वर ने दोनों की सेवकाईयों को आशीषित किया।

प्रेरितों के काम 15 में जिन मतभेदों की चर्चा की गई है उनके विषय में शिक्षार्थी विचार करता है। पहला विवाद है कलीसिया में मसीह की आज्ञा के अधिकार के विषय में। दूसरा विवाद था इन आज्ञाओं को लागू करने का तरीका। कलीसिया प्रभु यीशु की आज्ञाओं के अधिकार के अंतर्गत एक है। परन्तु मसीही विश्वासी इन आज्ञाओं को अपने वरदानों के अनुसार विभिन्न सेवाओं में उपयोग करने के लिए स्वतंत्र हैं। विभाजन तब आता है जब हम कलीसिया में अधिकार के स्तरों के बीच उलझन पैदा कर देते हैं।

शिक्षार्थी निर्णय लेता है कि यह मण्डली की सभा बुलाने का समय है। कलीसिया में इस तरह मेल न रहने की दशा में प्रभुभोज मनाना उसे उचित न लगा। उसने और प्राचीनों ने उपवास किया और प्रार्थना की और फिर उन्होंने उस समस्या से संबंधित प्रत्येक व्यक्ति को सभा में बुलाया। सभा में उन्होंने प्रार्थना की और एकसाथ गीत गाया। फिर उन्होंने उन लोगों से पूछा जो शहरी प्रचारक के तरीकों को अपनाना चाहते थे, कि वे कलीसिया में क्या बदलाव लाना चाहते हैं। उन्होंने उत्तर दिया कि उनमें से प्रत्येक उस प्रचारक का उपदेश सुनने शहर जाना चाहता है।

काफी चर्चा के बाद शिक्षार्थी बुद्धिमान का पत्र प्रत्येक को पढ़कर सुनाता है और प्रेरितों के काम 15 के विवादों के विषय में उन्हें समझाता है। वह धीरे से कहता है, "मैं

यह देखकर प्रसन्न हूँ कि यह विवाद प्रभु यीशु की आज्ञाओं के विषय में नहीं है। यह मतभेद सेवकाई करने के विभिन्न तरीको के संबंध में है। शहर का प्रचारक सुसमाचार सुनाने के दूसरे तरीकों को अपनाता है। हमारे पास उसके वरदान नहीं हैं, और हमने देखा है कि हमारे तरीके हमारे गाँव में सफलता के साथ अपनाए जा सकते हैं। हमारे प्राचीनों ने और मण्डली ने इन्हीं तरीकों को अपनाने का निर्णय लिया है जिनमें परमेश्वर उन्हें आशीष देता आया है, क्योंकि वे हमारे लोगों के लिए आसान हैं। दूसरे अलग तरीके को अपनाते हैं इसलिए हमें उनकी आलोचना नहीं करना है या उन्हें बदलाव लाने की जबरदस्ती नहीं करना है। हममें से काफी लोग शिक्षार्थी के शब्दों से सहमत हैं। हम एकदूसरे को क्षमा माँगेंगे कि हमने भिन्न तरीकों को अपनाने के विषय में एकदूसरे की आलोचना की।

कुछ लोग नाराज होकर सभा से चले जाते हैं। शिक्षार्थी अपनी मण्डली को समझाता है कि प्रारंभिक कलीसिया प्रतिदिन अपने घरों में और मंदीर में इकट्ठा होती थी। वे एकसाथ भोजन करते और अपनी संपत्ति को आपस में बाँटते थे और जरूरतमंदों की सूधी लेते थे। वे एक प्यारे परिवार के समान थे। शिक्षार्थी यह बताता है कि किस तरह कलीसिया कई बार एकदूसरे की आलोचना करने के बजाये आपसी भेदों को आपस में सुलझाती थी। जब अन्यजाति कलीसिया भिन्न परम्पराओं को अपनाती थी, तब भी वे आपस सहभागिता रखते थे। उन्होंने प्रत्येक संस्कृति को अपनी प्रथाओं का पालन करने की अनुमति दे रखी थी, परंतु वे एकदूसरे का आदर करते थे और प्रभु यीशु की आज्ञाओं का पालन करते थे। शिक्षार्थी की मण्डली बीच बीच में भोजन के लिए मिलने का निर्णय लेती है। वे आसपास के गाँवों में इकट्ठा होनेवाली नई मण्डलियों को प्रोत्साहन देने के लिए सेवकों को भेजते हैं। शिक्षार्थी का भाई बुद्धिमान को मिलने जाता है और मण्डलियाँ आपस में मिलती रहती है।

व्यावहारिक कार्य

- मण्डली में सहभागिता के लिए नियमित समय तय करें।
- दूसरी मण्डलियों के साथ सहभागिता का समय तय करें।
- प्रत्येक सदस्य को आदर देनेवाली सभाओं का मण्डली में आयोजन करें।

परमेश्वर की आराधना करना

एक रविवार शिक्षार्थी मण्डली में शिक्षा देता है, उस समय कुछ लोग सो जाते हैं। बच्चे बेचैन होकर यहाँ वहाँ देखते हैं। प्रभुभोज के समय कुछ परिवार दूसरी ही बातों की चर्चा करते हैं और अपनी बैग से खाने की चीजें निकालकर खाते हैं। बाद में वह बड़े बच्चे से पूछता है कि क्या बात हैं। "बड़ा बोर हुआ!" वह कहती हैं "आप हमेशा सब कुछ एक साथ और एक समान करते हैं। केवल विधी मालूम पड़ती है जिसकी कोई परवाह नहीं करता। उसके बदले तो मैं खाना पसन्द करूंगी!"

शिक्षार्थी का भाई कलीसिया में जो कुछ हो रहा है उसके विषय में पूछने के लिए बुद्धिमान से मिलने गया है, इसलिए शिक्षार्थी इस इंतजार में है कि वह क्या सन्देश भेजता है।

बुद्धिमान लिखता है: शिक्षार्थी के घर में मिलनेवाली कलीसिया, परमेश्वर के अपने पवित्र लोग होने के लिए जिसे बुलाया गया है। जैसे कि पौलुस प्रेरित ने कहा है, ऐसे लगता है कि जब तुम इकट्ठा होते हो तब भलाई के बदले तुम हानी ही करते हो। जब तुम इकट्ठा होते हो, तब तुम प्रभुभोज के विषय में चिन्तित होते हो। मुझे ऐसे बताया गया है कि तुम आराधना के समय उन लोगों के सामने भोजन खाते हो जो भूखे हैं। क्या तुम्हारे पास खाने पीने के लिए घर नहीं हैं? जब हम प्रभुभोज के विषय में गंभीर नहीं होते, तब हम प्रभुभोज मनाते समय पाप करते हैं। मुझे लगता है कि कलीसिया के रूप में आराधना करते समय परमेश्वर उपस्थित रहता है इस बात को तुम भूल गए हो।

मैंने तुम्हें वचन जो कहता है, वही बताया है। (1 कुरिन्थियों 11:17–38 पढ़ें) :

- जिस रात प्रभु यीशु पकड़वा दिया गया था उस रात प्रभु यीशु के शब्द क्या थे?
- प्रभुभोज के समय जब हम प्रभु की देह का अनादर करते हैं तब हम किसके विरोध में पाप करते हैं?
- प्रभुभोज के पहले हम क्या करते हैं ताकि परमेश्वर का न्याय हम पर नआए?

मेरे जाने से पहले, मैंने तुम्हें यह सिखाया कि जब हम इकट्ठा होते हैं तब परमेश्वर उपस्थित होता है। हम जो कुछ भी करते हैं उसके द्वारा हम परमेश्वर की आराधना करते हैं। हम अपनी प्रार्थना और स्तुति में परमेश्वर के वचन सामने कबूल करते हुए, देने में और अपनी सहभागिता में परमेश्वर की आराधना करते हैं। हम केवल मनोरंजन के लिए इन बातों को नहीं करते। इन बातों को भिन्न भिन्न तरीकों से करने की स्वतंत्रता परमेश्वर हमें देता है। पौलुस इफिसुस की कलीसिया को लिखता है कि वे अपने अपने हृदय में भजन, गीत और आत्मिक गीत गाएँ। गीत भजन हो सकते हैं, हमारे अपने शब्द या दूसरों के द्वारा लिखें गए गीत हो सकते हैं। वे परमेश्वर के बड़े बड़े कामों की गवाही देने के लिए और उसका धन्यवाद करने के लिए होते हैं। वे परमेश्वर की महानता बखान करने के लिए और उसकी प्रेम के साथ आराधना करने के लिए होते हैं।

पुराने नियम में परमेश्वर के लोग त्योंहारों में विशेष तरीकों से परमेश्वर की आराधना करते थे। फसह का पर्व सात दिन तक चलता था जिसमें प्रत्येक दिन विशेष भेंट चढ़ाई जाती थी और पहले और अंतिम दिन विशेष रूप में मण्डली इकट्ठा होती थी। सुलैमान ने जब परमेश्वर का भवन बनाया तब भीड़ की भीड़ उत्सव मनाने यरूशलेम में आयी। उन्होंने एकसाथ भोजन किया और तम्बुओं में वे खड़े होकर गीतकारों को गाते हुए और नरसिंगा फूँकते हुए और अन्य वाद्य बजाते हुए सुनाते थे। राजा सुलैमान ने खड़े होकर और फिर घुटने टेककर उनके लिए प्रार्थना की। हमारी प्रार्थनाएँ परमेश्वर के सामने सुगंधदायक धूप के समान हैं।

उसकी उपस्थिति में आपकी आराधना धूप के समान और सुंदर हो इसलिए यहाँ कुछ बातें बतायी गयी हैं।

- तैयारी के रूप में प्रार्थना करें ।
- आराधना के विभिन्न भागों में आपकी सहायता करने के लिए लोगों को पहले ही बताकर रखें।
- पहले ही सावधानीपूर्वक अपने भाग को तैयार करने में हरेक की सहायता करें।

- किसी न किसी तरीके से हरेक को भाग लेने का अवसर प्रदान करें।

जैसे कि इब्रानियों के लेखक ने कहा है, परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा हमारे पुरखाओं से बातें की परंतु अब इन अंतिम दिनों में, परमेश्वर ने अपने पुत्र के द्वारा बातें की। प्रभु यीशु परमेश्वर की अपनी महिमा को प्रगट करता है, और उसका हरेक कार्य परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है। हमारे पापों से हमें शुद्ध करने के लिए क्रूस पर मृत्यु सहने के बाद वह स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने हाथ पर महिमामय स्थान में विराजमान हों गया जब हम परमेश्वर की आराधना करते हैं तब हम प्रभु यीशु के पवित्र नाम में प्रार्थना कर उसे आदर देते हैं, उसके वचन की शिक्षा देते हैं, और प्रभुभोज में हम उसकी मृत्यु की घोषणा करते हैं। देने के द्वारा और सहभागिता के द्वारा हम उसकी देह कलीसिया की जरूरतों को पूरा करते हैं।

जब तुम परमेश्वर की आराधना करने के लिए और प्रभुभोज लेने के लिए इकट्ठा होते हो, तब तुम मसीह को देह और उसके लहू में भाग लेते हो। तुम उसके मृत्यु की घोषणा करते हो। यदि तुम इस बात को नहीं समझते हो, तो तुम मसीह की देह और लहू का अनादर करते हो। पुराने नियम में यह बताया गया है कि प्रभु यीशु की मृत्यु कितनी महत्वपूर्ण है। निर्गमन 12:21–42 में फसह की कहानी पढें कि किस तरह परमेश्वर ने अपने लोग इस्राlियों को मिस्र देश की गुलामी से स्वतंत्र कियाः

- इस्राएली लोग किस कारण से अपने पहलौठे को मौत से बचा सके?
- बीच रात में किस की मृत्यु हुई?
- मिस्र के पहिलौठे की मृत्यु ने इस्राएली गुलामों को किस तरह स्वतंत्र किया?
- गुलामी से छुटकारा पाने की इसे सच्चाई को इस्राएलियों को ऐसे याद करना था?

पुराने नियम में, जो यहूदी परमेश्वर से प्रेम करते थे वे प्रति वर्ष फसह का पर्व

मनाते थे। वे याद करते थे कि किस तरह परमेश्वर ने उन्हें आज़ाद करने के लिए लोहु का और पहलौठे पुत्रों की मृत्यु का उपयोग किया। यह हमें दिखाने के लिए एक उदाहरण था कि कैसे परमेश्वर का पुत्र हमें अपने लोहू से पाप की गुलामी से छुड़ाएगा। अब इब्रानियों 9:1–26 देखें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर खोजें:

- मंदिर के पहले और दूसरे कमरे में कौनसी वस्तुएँ थी?
- अपने और लोगों के पापों को ढांपने के लिए महायाजक साल में एक बार क्या करता था?
- परमेश्वर के पुत्र ने हमारे लिए हमेशा का उद्धार पाने के लिए क्या किया?

मंदिर के पवित्र स्थान में दीवट, एक मेज, और पवित्र रोटी थी। पड़दे के पीछे महापवित्र स्थान में धूप और वाचा का सन्दूक था। महायाजक वहाँ अपने पापों को ढांपने के लिए साल में एक बार अपने लोहू को लेकर जाता था। प्रभु यीशु के मरने के बाद परदा फट कर दो भाग में बँट गया, और प्रभु यीशु ने हमारा महायाजक बनकर परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश किया। उसका लोहू हमारे पापों को उठा लेता है और हमें हमेशा के लिए बचा लेता है। अब हम स्वतंत्रता के साथ महापवित्र स्थान में परमेश्वर की उपस्थिति में स्वतंत्रतापूर्वक प्रवेश कर सकते हैं, और हम अपनी प्रार्थनाओं को उसके सामने धूप के समान उण्डेल सकते हैं। जब हम प्रभु की मेज में पवित्र रोटी तोड़ते हैं तब हम मसीह की उपस्थिति में रहते हैं। जब हम उसके लोहू में नई वाचा का प्याला पीते हैं तब प्रभु वहाँ उपस्थित रहता है। उसने प्रतिज्ञा की है कि जहाँ दो या तीन उसके नाम से इकट्ठे हो, तो वह वहाँ उपस्थित होगा।

शिक्षार्थी, इन सारी बातों को अपनी कलीसिया में उपयोग करो। जैसे कि पौलुस 1 कुरिन्थियों 11 में हमें बताता है, कुरिन्थियुस के जिन लोगों ने प्रभु भोज का उत्सव मनाते समय प्रभु की देह का अनादर किया उन्हें परमेश्वर ने सजा दी। प्रभु यीशु ने किए हुए महान बलिदान को याद रखने में वे चुक गए थे। वे इस बात को भूल गए थे कि जब हम इकट्ठा होते हैं तब हम प्रभु की देह हैं। परमेश्वर इस

भेद को बहुत गंभीर समझता है। उसी तरह आपकी कलीसिया के प्रत्येक व्यक्ति को भी समझना है। इसीलिए पौलुस चेतावनी देता है कि प्रभु भोज में भरपेट भोजन न खाएँ। क्योंकि लोग मसीह की देह और रक्त में सहभागी होने के बजाय खाने–पीने में ज्यादा दिलचस्पी लेने लगते हैं, जैसा कि 1कुरिन्थियों 10:16–17 में कहा गया है।

पौलुस 1कुरिन्थियों 12–14 अध्याय में यह स्पष्ट करता है कि एक ही अगुवे को सारी बातें नहीं करना चाहिए। प्रत्येक को, जितने चाहते हैं उन सबको आराधना में किसी न किसी तरह सक्रीय भाग लेना चाहिए। अपने नेतृत्वगुणों को दूसरों के साथ बाँटो और वे उन्नति करने लगेंगे और कलीसिया के पास ऐसे अगुवे खड़े हो जाएँगे जो नई कलीसिया को बना सकते हैं।

शिक्षार्थी इस बात को समझ लेता है कि प्रभु भोज में भाग लेते समय उसकी कलीसिया ने प्रभु की देह को आदर नहीं दिया है। वे भूल गए हैं कि जब वे एक साथ आराधना करते हैं तब वे प्रत्यक्ष परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करते हैं। वह मण्डली को नेवता देता है कि वे आराधना की सेवा से बढ़कर प्रभु यीशु को आदर दें। वह आराधना के समय में प्रत्येक को अलग अलग काम सौंपता है ताकि पूरे समय केवल उसे ही अगुवाई न करनी पड़े।

प्रात्यक्षिक कार्य

- जिनके पास संगीत का, कलीसिया में सिखाने का और आराधना में अगुवाई करने का वरदान है उन्हें आमंत्रित करें।
- नए और सृजनात्मक तरीके से अपने प्रेम को परमेश्वर पर प्रगट करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करें। उदाहरण के तौर पर जिनके पास संगीत का वरदान है उन्हें परमेश्वर की स्तुति के गीत लिखने हेतु प्रोत्साहित करें।
- बुद्धिमान के पत्रों में दी गई कहानियों का उपयोग कर लोगों को इस बात का स्मरण दिलाए कि जब कलीसिया इकट्ठा होकर आराधना करती है तब परमेश्वर की उपस्थिति वहाँ होती है।

- प्रत्येक को, बच्चों को भी किसी न किसी तरीके से आराधना में सहभागी होने की योजना बनाएँ।
- आराधना में अगुवाई करनेवाले लोगों को पहले से ही तैयारी करने में सहायता करें।